BNHN102DET

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

एन ई पी - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

बी. ए.(हिन्दी)

(प्रथम सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

ISBN : 978-81-990167-9-8

Course : Suryakant Tripathi Nirala

First Edition : September 2025

Copies : 600

Price : 150/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE, MANUU

Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU

Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE, MANUU

Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU

Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU

Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU

Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश	कुलपति	5
संदेश	निदेशक	6
भूमिका	पाठ्यक्रम–समन्वयक	7

क्र. सं.	**इकाई**	**लेखक**	**पृ. सं.**
	खंड 1 : निराला का काव्य		
1	सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	9
2	‘जुही की कली’ और ‘जागो फिर एक बार’ – व्याख्या और विवेचना	प्रो. निर्मला एस मौर्य	25
3	‘बादल राग’ और ‘वर दे वीणा वादिनि’ – व्याख्या और विवेचना	डॉ. अनीता शुक्ल	42
4	‘तोड़ती पत्थर’ और ‘स्नेह निर्झर बह गया है’ – व्याख्या और विवेचना	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	58
	खंड 2 : निराला का कथा साहित्य		
5	‘बिल्लेसुर बकरिहा’ - कथासार और वैचारिकता	डॉ. चंदन कुमारी	76
6	‘बिल्लेसुर बकरिहा’ का तात्विक विवेचना	डॉ. बी. बालाजी	90
7	‘चतुरी चमार’ - कथासार और वैचारिकता	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	118
8	‘चतुरी चमार’ का तात्विक विवेचन	श्रीमती शीला बालाजी	137
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		154

लेखक विवरण

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै	Dr. Gurramkonda Neeraja Associate Professor, PGRI, DB Hindi Prachar Sabha, Chennai
प्रो. निर्मला एस मौर्य, पूर्व कुलपति, पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ.प्र.	Prof. Nirmala S Mourya, Former Vice-Chancellor, Purvanchal University, Jounpur, U.P
डॉ. अनीता शुक्ल, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात	Dr. Anita Shukla, Associate Professor, Dept. of Hindi, Maharaj Sayajirao Vishwavidyalay, Baroda, Gujarat
डॉ. चंदन कुमारी, प्राध्यापक(हिन्दी), कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश	Dr. Chandan Kumari, Lecture (Hindi), Kasturaba Kanya Mahavidyalay, Bhopal, M.P
डॉ. बी. बालाजी, प्रबंधक (हिन्दी विभाग एवं संचार निगम), मिश्र धातु, निगम, हैदराबाद	Dr. B. Balaji, Manger (Cell Hindi and Communication Corpaorate), Mishra Dhatu Nigam, Hyderabad
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, प्राध्यापक (हिन्दी), भवन्स विवेकानंद कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद	Dr. Suparna Mukharjee, Lecturer, Bhavans Vivekananda College, Sainikpuri, Hyderabad
श्रीमती शीला बालाजी, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), लिटिल फ्लावर डिग्री कॉलेज, उप्पल, हैदराबाद	Smt. Sheela Balaji, Asst. Professor (Hindi), Little Flower Degree College, Uppal, Hyderabad

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) **:** श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

"सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला" शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित चारवर्षीय बीए के प्रथम सत्र (डीएसई) के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य में महाप्राण साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है। उन्होंने हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग को कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से नई दिशा और नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। यद्यपि उनकी प्रतिभा किसी एक वाद या आंदोलन के खाँचे में बँधने वाली नहीं है। फिर भी उनकी रचनाओं को मुख्य रूप से छायावाद और प्रगतिवाद का पथ प्रदर्शन करने वाली रचनाएँ माना जाता है। यह बात उनके काव्य और कथा साहित्य दोनों ही पर लागू होती है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के विकास को समझने तथा उसके साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय परिवेश को आत्मसात करने के लिए निराला की कृतियाँ अत्यंत उपादेय स्रोत सामग्री सिद्ध होती हैं। इसी कारण इस पाठ्यक्रम में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र परिचय देते हुए उनकी कुछ प्रसिद्ध कविताओं के साथ-साथ उनके कथा साहित्य को भी समेटा गया है। कविताओं के अंतर्गत जहाँ 'जुही की कली', 'जागो फिर एक बार', 'बादल राग', 'वर दे वीणावादिनि', 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया है' जैसी कालजयी रचनाओं को स्थान दिया गया है, वहीं कथा साहित्य में 'बिल्लेसुर बकरिहा' जैसे उपन्यास और चतुरी चमार जैसी कहानी को रखा गया है।

यह सारी सामग्री इस दृष्टि से प्रस्तुत की गई है कि छात्रों के बौद्धिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षितिज का तो विस्तार हो ही, उनकी सौंदर्य दृष्टि का भी विकास सुनिश्चित हो। इस प्रकार यह सामग्री छात्रों के भीतर भारतीय जीवन मूल्यों और मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास करने में सहायक होगी। इससे छात्रों के नैतिक और भाषिक स्तर का भी विकास हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करते समय सरलता, सहजता, बोधगम्यता, प्रामाणिकता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कार्य में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथकारों और संपादकों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

पाठ्यक्रम समन्वयक

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’

इकाई 1: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': व्यक्तित्व एवं कृतित्व

13.1. जीवन परिचय

13.2. रचना यात्रा

13.3. रचनाओं का परिचय

13.4. हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी साहित्य में 1915 के आस-पास एक नए मोड़ का आरंभ हो गया था। यह पुरानी काव्य पद्धति को छोड़कर एक नई पद्धति के निर्माण का सूचक था। "स्थूल और सरल पदावली की भी प्रतिक्रिया हुई और कविता अंतर्जगत की ओर उन्मुख होकर सूक्ष्म, वक्र तथा सांकेतिक पदावली में अवतरित होने लगी।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 517)। इसे छायावाद कहा गया। इस काव्य पद्धति में यथार्थ के चित्रण का प्रबल आग्रह दिखाई देता है। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा को छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों के रूप में जाना जाता है। आधुनिक हिंदी कविता के विकास में इस युग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। छायावाद ने हिंदी कविता को अंतर्वस्तु और शिल्प के स्तर पर उत्कर्ष प्रदान किया। छायावादी कवियों में निराला का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की वैयक्तिक, पारिवारिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- निराला के कृतित्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- निराला के युगीन परिवेश को समझ कर उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे।
- निराला की रचना प्रक्रिया और उनके काव्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में निराला के स्थान और उनके महत्व को समझ सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

छायावाद युग दो विश्वयुद्धों के बीच का काल है। 1917 में हुई रूसी क्रांति ने संसार पर गहरा असर डाला। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह गांधी युग था। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता संघर्ष को जन आंदोलन बनाया। गुलामी से मुक्ति की आकांक्षा व्यापक हुई। कीट्स, बायरन, शेली, वड्सवर्थ और कॉलरिज आदि रोमांटिक कवियों के लेखन ने भी भारतीय साहित्यकारों को प्रभावित और प्रेरित किया। निराला भी इन सबसे प्रेरित थे। निराला के काव्य में आप छायावादी कोमलता के साथ-साथ कठोरता को भी देख सकते हैं। आइए, उनके जीवन और रचना यात्रा से संबंधित पहलुओं पर दृष्टि केंद्रित करेंगे।

1.3.1 जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1896 को बंगाल की रियासत महिषादल में हुआ और मृत्यु 1961 में हुई। बसंत पंचमी के दिन उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा 1930 में प्रारंभ हुई। उनका जन्म रविवार को होने के कारण उनके पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी ने उनका नामकरण सुर्जकुमार रखा था। रामसहाय बैसवाड़ा क्षेत्र के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे।

तीन वर्ष की अवस्था में ही सुर्जकुमार को माँ का अभाव सहना पड़ा। 1919 में देश में अकाल पड़ा। उसमें उनके अनेक स्वजन - पिता, पत्नी, चाचा सभी उन्हें छोड़कर चले गए लेकिन वे इसे भी बर्दाश्त कर गए। बचपन से उनके व्यक्तित्व में मस्ती और अक्खड़ता जैसे गुण विद्यमान थे। "प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बालक पिता से पाए हुए उद्धत स्वभाव के कारण अपने जीवन के सभी काम निर्भीक भाव से करता रहा।" (रामविलास शर्मा, निराला, पृ. 2)।

निराला के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान है। 1943 में डॉ. रामविलास शर्मा के एक प्रश्न पर उन्होनें कहा कि "बैसवाड़े का वातावरण मुझे बहुत पसंद है, कविता के लिए कलकत्ते का।" निराला के स्वभाव के संबंध में महादेवी वर्मा का कहना है कि "निराला किसी से भयभीत नहीं, अतः किसी के प्रति क्रूर होना उनके लिए संभव नहीं। उनके तीखे व्यंग्य की विद्युत-रेखा के पीछे सद्भाव के जल से भरा बादल रहा है।" (पथ के साथी, पृ. 57)।

निराला की कद-काठी के संबंध में विश्वंभर मानव कहते हैं कि "निराला जी स्वस्थ और

सुंदर व्यक्ति थे। उनके ललाट, नेत्र, नासिका, अधर, केश, स्कन्ध, वक्ष, भुजाओं, जंघाओं और हाथ की उंगलियों की प्रशंसा में लेखकों ने श्रेष्ठतम विशेषणों का प्रयोग किया है। किसी ने पठान और किसी ने ग्रीक-देवता कहा है। देखने में वे प्रागैतिहासिक काल के आर्य जैसे लगते थे। 5 फुट 1 इंच लंबे आदमी ने जब महिलाओं जैसे लंबे केश रख लिए तो दृष्टि विवश होकर उस पर पड़ने लगी। उन दिनों किसी ने निराला को 'मिस फैशन' कहा, किसी ने 'मेम'।" (काव्य का देवता : निराला, पृ. 17)

निराला जी मिलनसार व्यक्ति थे। वे बड़े-छोटे का ख्याल बहुत कम करते थे। इस संबंध में रामविलस शर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है - "निराला जी के लिए यह जरूरी नहीं है कि मिलने-बोलने के लिए बड़े साहित्यकार ही हों। स्कूल, कालेज जाने वाले लड़कों से भी वह बड़े स्नेह से मिलते हैं। वास्तव में वह बड़े-छोटे का ख्याल बहुत कम करते हैं। गाँव के किसानों और चमारों से वह बड़े अपनपौ से मिलते हैं।" (निराला, पृ. 25)। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि निराला निर्भीक और उद्दंड थे। वे बनावटी शिष्टाचार को तोड़ते हुए निर्द्वंद्व भाव से बात करते थे।

1920 में सुर्जकुमार का कवि जीवन प्रारंभ हुआ तब उन्होंने अपना नाम सूर्यकांत त्रिपाठी रख लिया। उनकी पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। 1922 से 1923 के दौरान उन्होंने कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, 1923 के अगस्त से 'मतवाला' के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका 'सुधा' से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। 1942 से मृत्यु पर्यंत इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। 'निराला' उपनाम उन्हें 'मतवाला' के अनुप्रास में ही मिला। इस संबंध में स्वयं निराला का कथन देखें - "मेरा उपनाम 'निराला' 'मतवाला' के ही अनुप्रास पर आया था।" (अनामिका, प्राक्कथन)

बोध प्रश्न

- निराला का स्वभाव कैसा था?
- निराला के व्यक्तित्व निर्माण के घटकों के बारे में बताइए।
- 'निराला' उपनाम कैसे आया?

13.2. रचना यात्रा

1920 से निराला की साहित्यिक यात्रा शुरू हुई थी। उनकी पहली कविता 'जन्मभूमि' प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में प्रकाशित हुई थी। पहला कविता संग्रह 'अनामिका' 1923 में प्रकाशित हुआ था। उनका पहला निबंध 'बंग भाषा का उच्चारण' अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं

किंतु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही है। जुही की कली (1916), अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), द्वितीय अनामिका (1938) [अनामिका के दूसरे भाग में सरोज समृति और राम की शक्ति पूजा जैसे प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है], तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, सांध्य काकली, अपरा आदि उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा आदि उपन्यास हैं। लिली, 'चतुरी चमार', सुकुल की बीवी, सखी, देवी आदि कहानी संग्रह हैं तो रवींद्र कविता कानन, प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन आदि निबंध संग्रह हैं। महाभारत पुराण कथा है तो आनंद मठ, विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नंदिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुल्य, चंद्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत आदि बांग्ला से हिंदी में अनूदित रचनाएँ हैं।

निराला के संपूर्ण जीवन को दूधनाथ सिंह ने 'आत्महंता आस्था' की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि यदि निराला को समझना हो तो उनकी रचनाओं को समझना आवश्यक है। रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' की भूमिका में यह स्पष्ट किया है कि निराला की रचना यात्रा का स्रोत उनका भावबोध है। और यह भावबोध उनकी विचारधारा से संबद्ध है किंतु उसका प्रतिबिंब नहीं। रामविलास शर्मा इस बात की पुष्टि करते हैं कि "निराला अपने साहित्य में जिस कवि को प्रतिष्ठित करते हैं, वह समग्र जीवन को व्यापक दृष्टि से देखता, एक ही पक्ष लेकर नहीं चलता" (पृ. 170)। रामविलास शर्मा के अनुसार निराला सौंदर्य और उल्लास के कवि के साथ-साथ दुख और मृत्यु के कवि भी हैं। 'जन्मभूमि' निराला की पहली कविता है तथा 'पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है' उनकी अंतिम कविता है।

निराला की कविताओं को पढ़ने से ऐसा लगता है कि वे कविता के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन पर ज्यादा निर्भरत करते थे। इसलिए व्यक्तिगत जीवन उनकी कविता का स्रोत बनकर प्रवाहित होता है। आगे उनकी कुछ प्रमुख रचनाओं पर दृष्टि केंद्रित करेंगे।

बोध प्रश्न

- दूधनाथ सिंह ने निराला के जीवन के संबंध में क्या कहा ?
- निराला की कविता का स्रोत क्या है?

13.3. रचनाओं का परिचय

निराला के व्यक्तित्व से परिचित होने के बाद अब आप उनकी प्रमुख रचनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रथम अनामिका (1923) : यह उनकी रचनाओं का पहला संग्रह है। इसके प्रकाशन के संबंध में निराला का वक्तव द्रष्टव्य है - "आदरणीय मित्र स्वर्गीय श्री बाबू महादेवप्रसाद जी सेठ ने प्रकाशित की थी। वे मेरी रचनाओं के पहले प्रशंसक हैं। (अनामिका, प्राक्कथन। इस संग्रह में कुल नौ कविताएँ

संग्रहीत थीं - अध्यात्म फल, माया, जलद, अधिवास, तुम और मैं, जुही की कली, पंचवटी प्रसंग, सच्चा प्यार और लज्जित।

परिमल (1929-30) : इसमें निराला की प्राथमिक अधिकांश चुनी हुई कविताएँ हैं। तीन खंडों में विभाजित यह संग्रह निराला की नई भावभूमि का प्रतिनिधित्व करता है। इन कविताओं में ओज गुण दिखाई देता है। उदाहरण के लिए -

भीतर नग्न रूप था घोर दमन का,

बाहर अचल धैर्य था उनके उस दुखमय जीवन का;

भीतर ज्वाला धधक रही थी सिन्धु अनल की,

बाहर थीं दो बूँदें- पर थीं शांत भाव में निश्चल-

विकल जलधि के जर्जर मर्मस्थल की। (स्वप्न स्मृति)

'परिमल' की भूमिका में निराला ने लिखा है कि "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है।"

'परिमल' के प्रथम खंड में सममात्रिक तुकांत कविताएँ हैं। द्वितीय खंड की रचनाएँ स्वच्छंद छंद में रची गई हैं। इन्हें निराला मुक्त गीत कहते हैं। इन गीतों में तुक का आग्रह है पर मात्राओं का नहीं। शेफालिका, जागो फिर एक बार, महाराज जयसिंह को शिवाजी का पत्र, पंचवटी प्रसंग आदि रचनाएँ कवित्त छंद में लिखी गई हैं। ये रचनाएँ 'परिमल' के तृतीय खंड में सम्मिलित हैं। इस संग्रह की कविताओं में सड़ीगली मान्यताओं के प्रति विद्रोह तथा निम्नवर्ग के प्रति सहानुभूति दखाई देती हैं।

बोध प्रश्न

- कविता के संबंध में निराला का क्या विचार है?
- 'परिमल' में संग्रहीत कविताओं की विशेषताओं के बारे में बताइए।
- कविता की मुक्ति से निराला का क्या आशय है?

गीतिका (1936) : यह कृति मनोहरा देवी को समर्पित है। इसकी भूमिका में जयशंकर प्रसाद लिखते हैं कि "उनमें केवल पिक की पंचम पुकार ही नहीं; कनेरी की-सी एक ही मीठी तान नहीं; अपितु उनकी गीतिका में सब स्वरों का समारोह है।" (गीतिका)। इस संग्रह की मूल भावना शृंगारिकता है फिर भी बहुत से गीतों में कवि का आत्मनिवेदन देखा जा सकता है। प्रकृति वर्णन के साथ-साथ देश प्रेम का चित्रण भी है। उदाहरण के लिए-

वर दे, वीणावादिनि वर दे!

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे! (वीणावादिनि वर दे)
सखि वसन्त आया।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी-
पिक-स्वर नभ सरसाया। (वसंत आया)

बोध प्रश्न

- ‘गीतिका’ का मूल स्वर क्या है?

अणिमा : इस संग्रह के गीतों में विषाद को रेखांकित किया जा सकता है। कवि के निराश मन को चारों ओर अंधकार दिखाई देता है। इसलिए तो वे कहते हैं -

गगन है यह अन्ध कारा;
स्वार्थ के अवगुंठन से
हुआ है लुंठन हमारा
खड़ी है दीवार जड़ की घेरकर
बोलते हैं लोग ज्यों मुँह फेरकर
इस गगन में नहीं दिनकर
नहीं शशधर, नहीं तारा

कवि की वैयक्तिक निराशा वातावरण में भी दिखाई दे रहा है। इसीलिए वे कहते हैं -

स्नेह-निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी
कह रही है - अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते - पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ-
जीवन दह गया है।

कवि याचना करते हुए दिखाई देते हैं -

दलित जन पर करो करुणा
दीनता पर उतर आए
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरुणा।

बोध प्रश्न

- ‘अणिमा’ में ज्यादातर किस प्रकार के गीत अंकित हैं?

नए पत्ते : इस संग्रह की कविताओं में जीवन को यथार्थ का आकलन नए प्रतीकों और प्रतिमानों के माध्यम से हुआ है। इन कविताओं में जनवादी परिवेश को देखा जा सकता है। “नए पत्ते में निराला की चेतना सामाजिक है, बाह्योन्मुखी है और समाजशास्त्रीय है। जो कला (wit) पर आधारित होकर व्यंग्य-सृष्टि करती है वही नए पत्ते की है।” (धनंजय वर्मा, निराला काव्य और व्यक्तित्व, पृ. 181)। निम्नवर्ग के प्रति निराला की सहानुभूति को इन कविताओं में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- ‘नए पत्ते’ की कविताओं का मूल स्वर क्या है?

कुकुरमुत्ता (1942) : यह वस्तुतः एक लंबी प्रगतिवादी कविता है। इस कविता में गुलाब पूँजीवाद का प्रतीक है तो कुकुरमुत्ता सर्वहारा का। कुकुरमुत्ता गुलाब को संबोधित करते हुए कहता है -

पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता-
अब, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबु, रंग-ओ-आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट!

नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में “प्रगतिशील आदर्श इसमें यह है कि सामंतवादी प्रतीक गुलाब के उपहास के साथ कुकुरमुत्ता की प्रशंसा की गई है, इस आधार पर कुछ समीक्षक इसे प्रगतिवादी कविता मानते हैं। किंतु यह भी देखना चाहिए कि इसमें गुलाब का ही परिहास नहीं, स्वयं कुकुरमुता का भी परिहास है। वह अपने मुँह से अपनी जिन विशेषताओं का उल्लेख करता है और जिस पद्धति से स्वयं को संसार की श्रेष्ठतम वस्तुओं का जनक कहता है, वे व्यंजना के द्वारा उसे उपहास के केंद्र में उपस्थित कर देती हैं।” (कवि निराला)

बोध प्रश्न

- गुलाब और कुकुरमुत्ता किसके प्रतीक हैं?

राम की शक्ति पूजा : यह 312 पंक्तियों की लंबी कविता है। कहा जाता है कि इलाहाबाद से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर, 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। “इस कविता की सामग्री निराला ने वस्तुतः बंगला के ही एक मध्ययुगीन कवि कृतिवास की रामायण से ली है, जो कि तुलसीदास से सौ वर्ष पहल हुए थे।” (धनंजय वर्मा, निराला काव्य और व्यक्तित्व, पृ. 198)। अपनी पुस्तक ‘हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास’ में रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं कि “मौलिकता कथानक में नहीं है, उस कथानक से सिरजा क्या गया है, उसमें है। इस दृष्टि से ‘शक्ति-पूजा’ में शक्ति-संधान की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श

में है, जो जाम्बवान पराजय की मनःस्थिति में डूबे राम को देते हैं" (पृ. 123) -

शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।

छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

इससे स्पष्ट है कि शक्ति की आराधना मौलिक रूप से ही संभव है, अनुकरण से नहीं। राम शक्ति पूजा हेतु नीलकमल लाने के लिए हनुमान को भेजते हैं। पूजा करते समय उन कमलों में से एक कमल को स्वयं शक्ति गायब कर देती हैं। आराधना करते समय शक्ति के चरणों में अंतिम कमल चढ़ाने उद्यत राम को जब कमल नहीं मिलता तो असफलता उनके सामने आती है और वे सोचते हैं -

धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!

हताश स्थिति में राम को यह याद आता है कि -

'यह है उपाय कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन
कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन।'

जब राम अपनी आँख निकालकर शक्ति को अर्पित करने के लिए तैयार हो जाते हैं तो शक्ति राम का हाथ पकड़ लेती हैं और कहती हैं -

साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।

'होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन' - कहकर महाशक्ति राम के वदन में लीन हो जाती हैं।

इस कविता में राम का अंकन पूरी तरह से मानवीय धरातल पर हुआ है। इस कविता में तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- महाशक्ति राम से क्या कहती हैं?
- इस कविता में राम का अंकन किस तरह हुआ है?

सरोज स्मृति : यह आत्मकथात्मक शोक गीत है। उनकी पुत्री सरोज के बचपन, विवाह और मृत्यु की घटनाएँ इस कविता में अंकित है। यह शोक गीत है। संपूर्ण कविता स्मृति आधारित है। इस कविता की केंद्रीय पंक्तियाँ हैं -

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ, आज जो नहीं कही

इन पंक्तियों में कवि का जीवन संघर्ष व्यंजित है। निराला की आर्थिक परिस्थिति निराशाजनक थी। इसलिए वे कहते हैं -

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित में न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा सकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पाठ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर

बोध प्रश्न

- ‘सरोज स्मृति’ कैसी रचना है?
- इस कविता की केंद्रीय पंक्तियाँ क्या हैं?

तोड़ती पत्थर : इस कविता में कवि ने मजदूर स्त्री का चित्रण किया है जो गर्मी की भारी दोपहरी में सड़क के किनारे बैठकर पत्थर तोड़ रही है। इस कविता के माध्यम से उन्होंने शोषित वर्ग की विषमताओं का चित्रण किया है। इस कविता मैं कवि ने ‘मैं’ और ‘वह’ का प्रयोग किया है। कवि ने अपने लिए ‘मैं’ आर मजदूर स्त्री के लिए ‘वह’ का प्रयोग किया है। इस कविता की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।

इस कविता का रचनाकल 1937 है। उस समय देश गुलाम था और इलाहाबाद राजनैतिक चिंतन का केंद्र बना हुआ था। कवि लिखते हैं कि उसने इलाहाबाद के पथ पर एक मजदूरिन को देखा जो सड़क पर पत्थर तोड़ रही थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं थी। वह तपती दोपहरी में सड़क पर पत्थर तोड़ रही थी। यहाँ ‘वह तोड़ती पत्थर’ की आवृत्ति दो बार हुई है और तीसरी बार कुछ परिवर्तन के साथ ‘मैं तोड़ती पत्थर’ का प्रयोग अंत में हुआ है। किंतु संदर्भ अलग है -

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार -
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार

××××

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर
लीं होते कर्म में फिर ज्यों कहा -
मैं तोड़ती पत्थर

“संदर्भ के अनुसार तीनों जगह पत्थर का अर्थ क्रमशः बदलता गया है। पहले सड़क का पत्थर, फिर अट्टालिका का पत्थर और अंत में अपने हृदय का पत्थर।’ (कविता के ने प्रतिमान, नामवर सिंह,

पृ. 134)। हथौड़ा एक ही है। पहले वह सड़क पर पड़ता है, फिर अट्टालिका पर और अंत में हृदय पर। इस कविता में महनेतकश के जीवन संघर्ष को कवि ने चित्रित किया है। इस कविता के माध्यम से समाज-आर्थिक परिस्थिति को भी समझा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'तोड़ती पत्थर' कविता में किस वर्ग का चित्रण है?
- इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

1.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी साहित्य के छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक हैं। वे हिंदी साहित्य जगत में मुक्त छंद के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। (जुही की काली)। निराला का काव्य वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से अनुपम है। रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि "निराला का संपूर्ण काव्य-व्यक्तित्व 'विरुद्धों का सामंजस्य' की उस अवधारणा में से जैसे विकसित हुआ है, जिसे कवि के समकालीन और प्रसिद्ध समीक्षक रामचन्द्र शुक्ल ने आनंद की साधनावस्था की उच्चतम रचना-भूमि का कारक तत्व स्वीकार किया है।" (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 124)।

निराला अपने ओज गुण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य का सहज स्वर उदात्त है। अपने लकड़पन में निराला ने बंगभंग आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, किसान आंदोलन आदि देखा और अनेक संघर्षों का नेतृत्व भी किया। अतः इनका प्रभाव उनके व्यक्तित्व और साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। भारतीय और विश्व राजनीति से वे भलीभाँति परिचित थे। अतः उनकी रचनाओं में युगीन परिस्थितियों को देखा जा सकता है।

निराला ने अपने काव्य और कथा साहित्य में क्रांतिकारियों का चित्रण किया है। उनके क्रांतिकारियों का कार्यक्षेत्र हमेशा ही गाँव रहा क्योंकि वे यह मानते थे कि क्रांति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में है। उन्होंने अपनी कविता 'बादल राग' में किसान और विप्लवी वीर के संबंध पर इस तरह लिखा है -

> जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
> तुझे बुलाता कृषक अधीर,
> ऐ विप्लव के वीर!

निराला यह मानते हैं कि गाँवों की उन्नति में देश की उन्नति निहित है। इसीलिए वे कहते हैं कि "गाँवों में अभी तक कोई स्वराज्य का नाम भी नहीं जानता, इसका हमें व्यक्तिगत अनुभव है। ग्राम-प्रचार और ग्राम-संगठन की इसीलिए सख्त जरूरत है।" (सुधा, संपादकीय, अक्टूबर 1929)। किसानों को जागरूक करना निराला का उद्देश्य था। 'नए पत्ते' की कविताओं में गाँव का संघर्ष तेज हो जाता है -

> मन्नी कुम्हार, कुल्ली तेली, भकुआ चमार,
> लुच्छू नाई, बली कहार, कुल टूट पड़े,
> कुछ नहीं हुआ, कुछ नहीं हुआ, होने लगा। (डिप्टी साहब आए)

निराला यह कहने में नहीं हिचकते कि -

आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी, पासी, चमार, तेली,
खोलेंगे अँधेरे का ताला (बेला)

समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेदभाव सामंती व्यवस्था की देन है। निराला इस जाति-प्रथा के विनाश को अपना राजनैतिक कर्तव्य समझते थे क्योंकि वे यह मानते थे कि इस कर्तव्य को पूरा किए बिना राष्ट्रीयता का विकास असंभव था। 'महाराज जयसिंह को शिवाजी का पत्र' शीर्षक कविता में कवि कहते हैं कि-

फैले संवेदना
एक ओर हिन्दू एक ओर मुसलमान हों
व्यक्ति का खिंचाव यदि जातिगत हो जाय
देखो परिणाम फिर
स्थिर न रहेंगे पैर यौवनों के
पस्त होगा हौसला
ध्वस्त होगा साम्राज्य

सामाजिक रूढ़ियों के कारण जिस तरह शूद्र दास बने उसी तरह स्त्री पराधीनता के कारण दासी बनी। स्त्रियों के संबंध में निराला लिखते हैं कि "प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की ही तरह घेर रखा है। घर की छोटी-सी सीमा में बंधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार, अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य सब कुछ भूली हुई हैं।" (प्रबंध प्रतिमा, पृ. 77)। प्राचीन शीर्णता अर्थात प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की रूढ़ियाँ। ये रूढ़ियाँ स्त्री की पराधीनता का कारण हैं। निराला जिस तरह समाज से ऊँच-नीच और जाति-प्रथा को मिटाना अपना राजनैतिक कर्तव्य समझते थे उसी प्रकार स्त्री के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आंदोलन का अभिन्न अंग मानते थे। 'विधवा', 'दीन', 'भिक्षुक' और 'तोड़ती पत्थर' शीर्षक कवितों में स्त्री का चित्रण देखें -

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीपशिखा-सी शांत भाव में लीन
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति-रेखा-सी (विधवा)

श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन (तोड़ती पत्थर)
सह जाते हो
उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न,
हृदय तुम्हारा दुबला होता नग्न,
अन्तिम आशा के कानों में

स्पन्दित हम - सबके प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथाएँ,
क्षीण कण्ठ की करुण कथाएँ
कह जाते हो
और जगत की ओर ताककर
दुःख हृदय का क्षोभ त्यागकर,
सह जाते हो। (दीन)

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि निराला का दृष्टिकोण अलग है। परमानंद श्रीवास्तव का मानना है कि "निराला ने कविता के यथार्थ को यथातथ्यता की सीमा से बाहर व्यापक जीवनसमृद्धि के रूप में उपलब्ध किया।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 12)। निराला की काव्य संवेदना के बारे में उनकी मान्यता है कि वह अधिक विषम, तीखी और उद्वेगकारी है। "निराला पहले महत्वपूर्ण आधुनिक कवि हैं, जिन्होंने कविता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति का पर्याय माना।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 12)। उन्होंने कविता के लिए 'मैं' शैली अपनाई -

मैंने 'मैं'- शैली अपनाई
देखा दुखी एक निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में मेरे
झट उमड़ वेदना आई।

भारतीय जनता का दुख-दर्द और सामंती पूँजीवादी उत्पीड़न से वे इस कदर प्रचलित थे कि समाजवादी व्यवस्था को कायम करने का सपना देखा। इसीलिए वे मनुष्य मात्र के बंधुत्व की घोषणा करते हैं -

मानव मानव से नहीं भिन्न
निश्चय, हो श्वेत, कृष्ण अथवा
वह नहीं क्लिन्न
भेद कर पंक
निकलता कमल जो मानव का
वह निष्कलंक
हो कोई सर (सम्राट अष्टम एड्वर्ड के प्रति)

निराला भारत के स्वाधीनता संग्राम से बंधे हुए थे। अतः वे सरस्वती से प्रार्थना करते हैं -

वर दे, वीणावादिनि वरदे
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे
वीणावादिनि वर दे

निराला की काव्य के संबंध में रामविलास शर्मा का कथन है कि "निराला के काव्य की विशेषता है, विरोधी तत्वों का संतुलन, उदात्त एवं अनुदात्त का समन्वय।" (निराला, पृ. 131)।

उनकी काव्यभाषा में तत्समनिष्ठ शब्दों से लेकर बोलचाल के शब्द, अंग्रेजी और अरबी-फारसी के शब्दों को देखा जा सकता है। उनकी कविताओं में संगीतात्मकता को भी देखा जा सकता है। निराला को रामविलास शर्मा संघर्षों का कवि, क्रांतिकारी और युग-प्रवर्तक मानते हैं। 'सामाजिक यथार्थ और कविता का आत्मसंघर्ष' (पूर्वाग्रह 63-64) शीर्षक लेख में कुँवर नारायण लिखते हैं कि "निराला का निजी संसार उनकी कविता का उतना ही आवश्यक हिस्सा है जितना वह समाज जिसमें वे जी रहे हैं। खास बात है कि निराला की समझ और संवेदना का विस्तार उनकी कविताओं की रीढ़ है।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 14 से उद्धृत)

बोध प्रश्न

- निराला के काव्य का सहज स्वर क्या है?
- निराला किसानों को क्यों जागृत करना चाहते थे?
- स्त्रियों के प्रति निराला की क्या दृष्टि थी?
- जाति-प्रथा के बारे में निराला का क्या मत था?

1.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य में निराला का महत्वपूर्ण स्थान है। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के निर्माण में वस्तुतः तत्कालीन परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका है। निराला भारतीय एवं विश्व राजनीति से भलीभाँति परिचित थे। उन्हें यह पता था कि जातिगत भेदभाव को समाज से दूर किए बिना राष्ट्रीयता का विकास नहीं किया जा सकता। वे मनुष्यता के पक्षधर थे। इसीलिए वे कविता की मुक्ति और मनुष्य की मुक्ति को पर्याय मानते थे। उनकी रचना प्रक्रिया का स्रोत उनकी भावबोध है जो उनकी विचारधारा से संबद्ध है। निराला की रचनाओं का फलक विस्तृत है। उन्हें किसी कटघरे में बाँधना कठिन है।

1..5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. निराला छायावाद के एक प्रमुख स्तंभ हैं।
2. निराला ने छायावाद का अतिक्रमण करके युग के अनुरूप प्रगतिवाद के आंदोलन को पुष्ट किया।
3. निराला उल्लास और सौंदर्य के कवि के साथ-साथ दुख और मृत्यु के कवि हैं।
4. निराला की कविता का स्रोत उनका व्यक्तिगत जीवन है।
5. निराला की रचना प्रक्रिया का स्रोत उनका भावबोध है। यह भावबोध उनकी वैचारिकता से संबद्ध है।
6. निराला का स्वाधीनता प्रेम उनके साहित्य में नए-नए रूपों में व्यक्त होता है।

7. निराला अपने ओज गुण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य का सहज स्वर उदात्त है।

8. निराला ने कविता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति का पर्याय माना।

1.6 शब्द संपदा

1. अंतर्वस्तु	=	मूल विषय
2. उत्कर्ष	=	उन्नति, विकास
3. उद्धत	=	प्रचंड
4. परिवेश	=	वातावरण
5. पूँजीवाद	=	ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें निजी उद्योगों को बढ़ावा दिया जाता है
6. प्रतिकूल	=	विपरीत
7. प्रतिमान	=	आदर्श
8. प्रतीक	=	चिह्न
9. प्रागैतिहासिक	=	इतिहास में वर्णित और निश्चित काल से पहले का
10. यथार्थ	=	उचित, जैसा होना चाहिए ठीक वैसा
1. विचारधारा	=	सिद्धांत, मत
12. शिल्प	=	किसी कथाकार द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया जाने वाला भाव्यभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग
13. सर्वहारा	=	समाज का वह वर्ग जो मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. निराला की रचना यात्रा को स्पष्ट कीजिए।
3. निराला के काव्यागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. अध्ययन के आधार पर निराला के प्रमुख रचनाओं की विशेषताओं के बारे में बताइए।
5. निराला की युगीन परिवेश पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता को स्पष्ट

कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न (आ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. सामाजिक रूढ़ियों के संबंध में निराला के विचार स्पष्ट कीजिए।
2. हिंदी साहित्य में निराला का क्या स्थान है?
3. 'तोडती पत्थर' कविता का आशय समझाइए।
4. 'राम की शक्ति पूजा' कविता के माध्यम से कवि क्या समझाने का प्रयास किया है।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. वसंत पंचमी के दिन निराला का जन्मदिन मनाने की परंपरा कब से प्रारंभ हुई? ( )

   (अ) 1896 (आ) 1919 (इ) 1930 (ई) 1943

2. निराला की साहित्यिक यात्रा कब से शुरू हुई? ( )

   (अ) 1919 (आ) 1920 (इ) 1923 (ई) 1936

3. निराला की पहली कविता का नाम क्या है? ( )

   (अ) अनामिका (आ) जन्मभूमि (इ) बेला (ई) तोड़ती पत्थर

4. इनमें से एक निराला की रचना नहीं है। ( )

   (अ) बादल राग (आ) कुकुरमुत्ता (इ) कामायनी (ई) तुलसीदास

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. निराला की रचना यात्रा का स्रोत .... है।
2. निराला का उपनाम .... के ही अनुप्रास पर आया था।
3. निराला ने कविता की मुक्ति को .... का पर्याय माना।
4. पंचवटी प्रसंग .... छंद में में लिखी गई रचना है।

III. सुमेल कीजिए -

1. कुकुरमुत्ता	(अ) शोक गीत
2. निराला	(आ) मुक्त छंद
3. जुही की कली	(इ) जनवादी परिवेश

4. सरोज स्मृति (ई) युग प्रवर्तक

5. नए पत्ते (उ) सर्वहारा

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. क्रांतिकारी कवि निराला : बच्चन सिंह

2. निराला : रामविलास शर्मा

3. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल

4. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र

5. निराला - आत्महंता आस्था : दूधनाथ सिंह

6. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा

7. काव्य का देवता - निराला : विश्वंभर मानव

इकाई 2 : 'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार'- व्याख्या और विवेचना

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूल पाठ: 'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार' - व्याख्या और विवेचना

2.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय

2.3.2 जुही की कली

2.3.3 जागो फिर एक बार

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

2.4 पाठ सार

2.5 पाठ की उपलब्धियां

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 : प्रस्तावना

निराला जी की कविताओं में नई संवेदनाएं परिलक्षित हैं। कवि के विचार अपनी परंपरा से ग्रहण करते हुए आधुनिकता में प्रवेश करते हैं और कवि की कविताएं उनकी कला दृष्टि का अनुपम सौंदर्य बनकर बिखर जाती हैं। निराला जी का रचना संसार विस्तृत रहा है। छायावाद के प्रमुख स्तंभों में निराला जी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपनी लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उनकी रचनाओं में उनके जीवन संघर्ष को भली भांति अनुभूत किया जा सकता है। छायावादी कविता की विशेषता है वैयक्तिकता और यही वैयक्तिकता निराला की 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूं आज जो नहीं कही' के रूप में अभिव्यक्त होती है। 'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार' इन दोनों कविताओं का आप अध्ययन इस इकाई में करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की दो कविताएं-'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार' का अध्ययन करने के पश्चात आप --

- कविवर निराला के चिंतन और उनकी कविता लेखन प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप छायावादी कवि निराला के साहित्यिक अवदान को जान सकेंगे।
- निराला जी के काव्य की अंतर्वस्तु का उल्लेख कर सकेंगे।
- जुही की कली के भाषा- शैली सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- जागो फिर एक बार में निहित छायावादी तत्वों को जान और समझ सकेंगे।
- पठित कविताओं के आधार पर निराला जी के जीवन संघर्ष को समझ सकेंगे।

2.3: मूल पाठ : 'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार' – व्याख्या और विवेचन

2.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय:

अपनी भाषा की विविधता के कारण ही निराला की कविताओं में ताजगी और नवीनता के दर्शन होते हैं। उनकी विचार दृष्टि गहरे अर्थ की अभिव्यक्ति देती है। कवि का मानना है कि भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम ना होकर अपनी स्वतंत्र रचनात्मकता रखती है। कवि भाषाभिव्यक्ति को जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। कविवर निराला जीवनपर्यंत साहित्य साधना में लगे रहे। हिंदी क्षेत्र के नकारात्मक व्यवहार से कवि का स्वाभिमान लगातार आहत होता रहा, इसके बावजूद वह किसी के सामने झुके नहीं। उनका कहना था कि अपने स्वार्थ पूर्ति के संघर्ष में वह हमेशा हारते ही रहे। वह सृजन कार्य को पेट पालने का साधन नहीं बनना चाहते थे। अभाव से परिपूर्ण जिंदगी जीने के बावजूद कवि ने कभी हार नहीं मानी और जीवन में आगे बढ़ते रहे।

'जुही की कली'- एक प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कविता है। वास्तव में जुही की कली नायिका है और पवन नायक है। मानवीकरण की सहायता से इस कथा को कहा गया है। यह कविता विरह में पीड़ित नायिका के रूप में है। यह छंद में रची गई प्रणय कविता है और इसमें कवि यह बताते हैं कि नायिका अपने प्रेमी पवन के विरह में तड़प रही है। पवन उसे छोड़कर दूर मलयागिरि पर्वत पर चला गया है। वह उसी के स्वप्न में खोई रहती है और इस आशा में रहती

है कि वह कब आएगा और उनका मिलन होगा। यह कविता परिमल में संकलित है। यह कविता एक कालजयी रचना मानी जाती है। इस रचना की व्यापकता और प्रसिद्धि का कारण न केवल मुक्त छंद है बल्कि इसका असली कारण उत्कृष्ट कलाकृति होना है। मुक्त छंद तो इस कविता की क्रांतिकारी विशेषता है। यह रचना अपने अंतर्वस्तु और स्थापत्य दोनों ही दृष्टियों से निराला काव्य की ही नहीं संपूर्ण आधुनिक कविता में एक विशिष्ट पहचान बनाती है। इस कविता का ढांचा काथात्मक है। यह एक कहानी की तरह आगे बढ़ती है और 'सुषुप्ति से लेकर जागरण' तक की अति सुंदर यात्रा करती है। पांच बंधों में वर्णित यह कविता अपने आप में अनोखी और अनूठी है।

'जागो फिर एक बार'-यह कविता परिमल काव्य संग्रह में संकलित है। इसमें कवि ने देश प्रेम की भावना को व्यक्त करते हुए अनेक महापुरुषों के उदाहरण देकर भारतीयों को जाग जाने के लिए प्रेरित किया है। इस प्रकार यह कविता एक प्रेरक कविता बन जाती है जो देश प्रेम को भूल बैठे भारतीयों के मन में देश प्रेम का भाव जगाने के लिए रचित हुई है। इस कविता में राष्ट्रीय जागरण के स्वर दिखाई देते हैं। परतंत्रता में सुप्त, निराश, हताश भारतीय जनता को उनके गौरवमय अतीत की याद दिलाते हुए कवि ने जागरण का आह्वान किया है।

2.3.2 जुही की कली

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी — स्नेह-स्वप्न-मग्न —
अमल-कोमल-तनु तरुणी — जुही की कली,
दृग बन्द किए, शिथिल-पत्रांक में,
वासन्ती निशा थी;
विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कान्ता की कमनीय गात,
फिर क्या ? पवन
उपवन-सर-सरित गहन -गिरि-कानन

कुञ्ज-लता-पुञ्जों को पारकर
पहुँचा जहाँ उसने की केलि
कली खिली साथ।
सोती थी,
जाने कहो कैसे प्रिय-आगमन वह ?
नायक ने चूमे कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिण्डोल।
इस पर भी जागी नहीं,
चूक-क्षमा माँगी नहीं,
निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मूँदे रही —
किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये,
कौन कहे ?
निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंकों की झड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिए गोरे कपोल गोल;
चौंक पड़ी युवती —
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज-पास,
नम्र मुख हँसी-खिली,
खेल रंग, प्यारे संग।

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

कविता की व्याख्या

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियां 'जुही की कली' 'से उद्‌धृत हैं। निराला छायावादी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के प्रखर कवि होने के साथ-साथ वे क्रांतिकारी भी रहे। इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियों में परिमल, गीतिका, अनामिका,

तुलसीदास,कुकुरमुत्ता,अणिमा ,नए पत्ते,बेला,अर्चना,आराधना,गीता कुंज आदि हैं। निराला अपनी कविता में जीवन से जुड़ी वस्तुओं का समावेश करते हैं।

प्रसंग: प्रस्तुत कविता में कवि ने प्राकृतिक उपादानों को लेकर मानवीय चिंतन का रूप व्यक्त किया है। इस कविता में जुही की कली और पवन का मानवीकरण किया गया है। नायिका जुही की कली नायक पवन के वियोग में है। नायक पवन उसे छोड़कर दूर मलयगिरि पर्वत पर चला गया है और जुही की कली प्रतीक्षारत है।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि जूही की कली अपने प्रिय पवनके स्वप्न में लीन होकर सुहाग से भरी हुई लता पर सो रही है। उसके नेत्र बंद हैं। वसंत काल की रात्रि थी। उसका प्रिय पवन अपनी प्रिया का साथ छोड़कर दूर देश मलय पर्वत पर चला गया था। जूही की कली को अपने प्रिय से बिछड़ने से पहले मिलन की मधुर बातें याद आ रही थीं। उसे आधी रात की धुली हुई चांदनी औरअन्य बातें स्मरण हो रही थीं। उधर पवन को भी जूही की कली की याद आती है तो वह उपवन, नदी, नद, नाले, गहन कानन, पर्वतों, लता कुंजों को पार करते हुए जूही की कली के पास आ पहुंचता है और उसके कपोल चूम लेता है। इतने पर भी जब जूही की कली नहीं जागती है और अपने चूक की क्षमा नहीं मांगती है तथा नेत्रों को बंद किए रहती है मानो वह यौवन की मदिरा पिए हुए मतवाली हो गई हो तब पवन रूपी नायक ने निठुरता दिखाते हुए क्रोधित होकर अपने झोंकों से झाड़ियों को हिला दिया और उसकी सुकुमार देह झकझोर डाली तब चौंक कर जूही की कली जाग जाती है और चकित दृष्टि से चारों ओर देखती है तथा अपने प्रिय को अपने पास प्रकार नम्र मुख होकर प्रसन्नचित हो जाती है और वह प्रेम के रंग में डूब जाते हैं। कवि निराला कहते हैं कि जूही की कली विरह में पीड़ित नायिका का रूप है, जो अपने प्रेमी पवन के विरह में तड़प रही है। वह उसे छोड़कर दूर मलयागिरि पर्वत पर चला गया है। वह अपने प्रेमी के स्वप्न में ही खोई रहती है कि कब उसका प्रेमी आएगा और उन दोनों का मिलन होगा। दूर मलयागिरि पर्वत पर गए उसके प्रेमी पवन को भी अपनी नायिका की याद आती है तो वह अपनी प्रिया से मिलने के लिए तड़प उठता है और वह अपनी प्रेयसी जूही की कली से मिलने के लिए चल पड़ता है। जब वह अपनी प्रेयसी के पास पहुंचता है तो उसकी प्रेयसी जूही की कली उसके सपनों में खोई निश्चल आंखें मूंदे पड़ी है। उसे अपने प्रेमी के आने की कोई सुध -बुध नहीं है और वह अपने प्रेमी के स्वागत में नहीं उठती है तो उसके प्रेमी को लगता है कि जूही की कली को उसके आने का कोई हर्ष नहीं हुआ और पवन क्रोधित हो जाता है। फिर पवन क्रोधित होकर अपने झोंकों को तेज गति से चलाने लगता है, जिससे जूही की कली के कोमल तन पर आघात लगता है और

वह हड़बड़ा कर उठ जाती है। तब अपने सामने अपने प्रेमी पवन को देखकर हर्ष से उल्लासित हो उठती हैऔर फिर दोनों के गिले-शिकवे दूर हो जाते हैं। दोनों का मिलन हो जाता है। वह दोनों प्रेम के रंग में डूब जाते हैं।

विशेष :

- कोमलकांत शब्दावली प्रयोग।
- इस कविता में सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है।
- मानवीकरण अलंकार।
- नायक और नायिका के वियोग का वर्णन किया गया है।
- अनुप्रास अलंकार।
- मुहावरों का प्रयोग

बोध प्रश्न -

1. 'जूही की कली' में किसका वर्णन है?
2. 'जूही की कली' क्यों आहत है?
3. 'जूही की कली' कविता में किसका वर्णन है?
4. 'जूही की कली' शीर्षक कविता पहली बार कहां छपी थी?
5. 'जूही की कली' में कौन सा छंद है?
6. 'जूही की कली' कविता का मूल संदेश क्या है?

2.3.3 जागो फिर एक बार

जागो फिर एक बार!
प्यार जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण-पंख तरुण-किरण
खड़ी खोलती है द्वार-
जागो फिर एक बार!

आँखे अलियों-सी
किस मधु की गलियों में फँसी,
बन्द कर पाँखें
पी रही हैं मधु मौन
अथवा सोयी कमल-कोरकों में?-

बन्द हो रहा गुंजार-
जागो फिर एक बार!
अस्ताचल चले रवि,
शशि-छवि विभावरी में
चित्रित हुई है देख
यामिनीगन्धा जगी,
एकटक चकोर-कोर दर्शन-प्रिय,
आशाओं भरी मौन भाषा बहु भावमयी
घेर रहा चन्द्र को चाव से
शिशिर-भार-व्याकुल कुल
खुले फूल झूके हुए,
आया कलियों में मधुर
मद-उर-यौवन उभार-
जागो फिर एक बार!
पिउ-रव पपीहे प्रिय बोल रहे,
सेज पर विरह-विदग्धा वधू
याद कर बीती बातें, रातें मन-मिलन की
मूँद रही पलकें चारु
नयन जल ढल गये,
लघुतर कर व्यथा-भार
जागो फिर एक बार!
सहृदय समीर जैसे
पोछों प्रिय, नयन-नीर
शयन-शिथिल बाहें
भर स्वप्निल आवेश में,
आतुर उर वसन-मुक्त कर दो,
सब सुप्ति सुखोन्माद हो,
छूट-छूट अलस
फैल जाने दो पीठ पर
कल्पना से कोमन
ऋतु-कुटिल प्रसार-कामी केश-गुच्छ।

तन-मन थक जायें,
मृदु सरभि-सी समीर में
बुद्धि बुद्धि में हो लीन
मन में मन, जी जी में,
एक अनुभव बहता रहे
उभय आत्माओं मे,
कब से मैं रही पुकार
जागो फिर एक बार!

उगे अरुणाचल में रवि
आयी भारती-रति कवि-कण्ठ में,
क्षण-क्षण में परिवर्तित
होते रहे प्रृकति-पट,
गया दिन, आयी रात,
गयी रात, खुला दिन
ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास,
वर्ष कितने ही हजार-
जागो फिर एक बार!

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

कविता की व्याख्या

संदर्भ: प्रस्तुत कविता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य संग्रह परिमल से ली गई है जो 1929 में प्रकाशित हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य के क्षितिज पर दैदीप्यमान सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को हिंदी कविता में छायावाद का अग्रदूत माना जाता है। उनकी कविताओं की प्रिय विषयवस्तु छायावादी गीत रहे हैं। उनके जीवन में अभाव ही अभाव रहे पर उनकी आत्मा में वसंत की खुशबू रची-बसी रही, इसीलिए उन्हें हिंदी जगत में महाप्राण कहा जाता है। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में सरोज-स्मृति, कुकुरमुत्ता, अनामिका और उपन्यासों में बिल्लेसुर बकरिहा विशेष रूप से चर्चित हुए। अनामिका काव्य संग्रह दो बार प्रकाशित हुआ जिसमें उनकी प्रारंभिक कविताएं संकलित थीं। 'जूही की कली' निराला की पहली कविता मानी जाती है।

प्रसंग: निराला के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्याग कर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया और संघर्ष का साहस नहीं गंवाया। इस कविता में निराला ने कहीं भी अंग्रेजों की गुलामी या भारत देश का नाम नहीं लिया है किंतु देशवासियों को भारत की आजादी के लिए जगाना ही इस कविता का उद्देश्य रहा है।

व्याख्या:

जागो फिर एक बार.. .... मद-उर-यौवन-उभार।

निराला कहते हैं कि ओ प्यारे! सब तारे तुम्हें जगा-जगा कर जाग थक गए हैं, हार गए हैं। सूर्य की नवोदित किरण तुम्हारे द्वार पर खड़ी है, तुम्हारा द्वार खोल रही है। तुम जागो एक बार फिर से जाग जाओ।

जो सो रहा है उसकी आंखें भवरों की तरह हैं। आंखों के फंस जाने का मतलब उलझ जाना है। आंख का उलझ जाना दृष्टि का उलझ जाना है। कवि कहते हैं कि कि मधु की गली में क्या चल रहा है चुपचाप? आँखों के पटल बंद हैं। आँखें मधु पान कर रही हैं या कमल के फूल में सोई हैं?बाहर गुंजार बंद हो रहा है, अतः एक बार फिर से जाग जाओ।

सूर्य अस्त हो चुका है। तारों से भरी हुई चांदनी रात है। रातरानी अब गमकने लगी है। चकोर अपने प्रिय की एक झलक पाने के लिए एक टक निहार रहा है। उसका मौन बहुत से भावों से भरा हुआ है। प्रिय के दरस की आशा घेरती जा रही है। पुष्पों का कुनबा शीत के भार से व्याकुल हो रहा है। खिले हुए फूल झुके जा रहे हैं। कलियों में यौवन का मद आ गया है। ऐसे में तुम उठो, एक बार फिर से जाग जाओ।

पिउ-रव पपीहे प्रिय बोल रहे............कब से मैं रही पुकार-जागो फिर एक बार!

पपीहा पिउ पिउ बुला रहा है। सेज पर विरह में जल रही वधू प्रिय से मिलन की बातें याद करके अपनी पलकें मूँदे है। उसकी व्यथा आंसुओं में छलक पड़ी है। अतः तुम उठो! दिलदार समीर की तरह तुम वधू के आंसू पोंछ दो। सोने से शिथिल पड़ी उसकी बांह धरकर तुम उसे अपनी धड़कती गोद में भर लो। उसके हृदय की आतुरता का शमन कर दो। सुप्तावस्था को सुख के उन्माद से भर दो। कल्पना की तरह कोमल घुंघराले बालों को पीठ को इस तरह फैल जाने दो कि सारा आलस्य दूर हो जाए। तन को-मन को थका दो। सुगंधित वायु चल रही है। सूर्य की नवोदित किरण कह रही है कि मैं तुम्हें कब से पुकार रही हूं। बुद्धि को, मन को, प्राण को तृप्ति-

तोष के सूत्र में बांधने के लिए, सबको भय से मुक्त करने के लिए तुम एक बार फिर से जाग जाओ।

उगे अरुणाचल में रवि......................वर्ष कितने ही हजार-जागो फिर एक बार!

प्रातः का सूर्य उदय हो गया है, भारत की जो भारती है वह कवि के कंठ में उतर कर आ गई है। प्रकृति के पट छन-छन में परिवर्तित हो रहे हैं,लेकिन प्रिया का संसार वही एक है यानी वह नहीं बदला है जबकि उसे समय के साथ बदलना था। दिन बीत गया, रात आई, रात भी चली गई, फिर से दिन आ गया। एक ही संसार के दिन, पक्ष, महीने सब बीत गए। कितने ही हजार वर्ष बीत गए,फिर भी तुम नहीं उठे। तुम्हारे उठने के प्रतीक्षा में कितना समय बीत गया एक बार फिर से उठो।

विशेष:

- इस कविता में रस है, स्पर्श है, एक संघर्ष है।
- यह एक कालजयी रचना है।
- इसमें औपनिवेशिक गुलामी का भाव दिखाई देता है जिससे मुक्ति पाने के लिए वह आमजन को जागने का संदेश देते हैं।
- उद्बोधन शैली का प्रयोग।
- मानवीकरण अलंकार।
- तत्सम शब्दावली का बहुतायत मात्रा में प्रयोग।
- उपमा अलंकार।
- अनुप्रास अलंकार।
- रूपक अलंकार।
- श्रृंगार का वियोग पक्ष।
- आशावादी स्वर।

बोध प्रश्न -

- जागो फिर एक बार कविता में कौन सा काव्य गुण है?
- जागो फिर एक बार कविता में कवि ने महापुरुषों का उदाहरण क्यों दिया है?
- कवि इस कविता में दिलदार की उपमा किसे देते हैं?

- जागो फिर एक बार कविता का संदेश क्या है?
- इस कविता में क्रांति का प्रतीक किसे माना गया है?

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन:

कविवर निराला आक्रोश, प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। वह भावुकता से बचते हैं और बौद्धिक अनुभूति के निकट अपनी काव्य संवेदना निर्मित करते हैं। दोनों कविताओं के मूल उद्देश्य अलग-अलग हैं। 'जुही की कली' कविता में प्राकृतिक सौंदर्य को महत्व देते हुए सौंदर्य भाव जागृत करने का प्रयास है। सौंदर्य को हम अपने आसपास विद्यमान होते हुए भी अनुभव नहीं कर पाते, कवि उसे कविता के माध्यम से अनुभव कराने का प्रयास करते हैं। इस कविता में 'जूही की कली' को नायिका मानते हुए उसके प्रिय पवन को नायक माना गया है और उन दोनों के द्वारा प्रेम का संदेश देने का प्रयास किया गया है। जूही के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है हंसना। इसकी हंसी सभी को प्रेरणा देती है और यह संदेश भी देती है कि मृत्यु से कभी भयभीत नहीं होना है। मुक्त छंद में लिखी यह कविता जिजीविषा और प्रेम का संदेश देती है। प्रकृति प्रेम और साहचर्य भाव दोनों में गहरा अंतर संबंध होता है। निराला की यह कविता अपने प्रकृति प्रेम और सहचार्य भाव के कारण भारतीय साहित्य के अंतरजगत छायावाद को विश्व साहित्य की श्रेणी में खड़ा करने में पूर्णतः समर्थ है। पश्चिम के कवि जो मुख्य रूप से स्वच्छंदतावादी कहे जाते हैं जिनमें वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज आदि कवियों को भी जूही की काली अपने इस गुण के कारण प्रतिस्पर्धा देने में सक्षम है क्योंकि, यहां प्रकृति का प्रयोग संभवतः रीतिकालीन कवियों की तरह काम भावना को भड़काने हेतु नहीं बल्कि नव्य-वेदांत और शैव-द्वैतवादी प्रभाव से पूर्ण और प्रकृति को केवल मिथ्या नहीं मानते हुए परम तत्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास है। मनुष्य की तुलना में प्रकृति के क्या अधिकार हैं? इसको भी स्पष्ट किया गया है। प्रकृति इतनी खूबसूरत है कि उसको मानव के रूप में देखना संभव है। प्रकृति प्रेम और साहचर्य का भाव इतना निश्चल और वेगवान है कि राष्ट्रीय- संस्कृतिक- प्रेम के रूप में उसका विस्तार अभूतपूर्व काव्य शैली को न केवल भाव पक्ष तक ही सीमित रखता है बल्कि शिल्प के स्तर पर भी मानवीय अलंकार का रूप प्रस्तुत कर देता है। इस प्रकार अप्रस्तुत का प्रस्तुतीकरण कवि के रचना कौशल को दर्शाता है। कविता में अर्थालंकार का प्रयोग है क्योंकि कविता के भाव काफी गहरे हैं। सुप्तावस्था से जागरण या नव जागरण की यह कविता समाज की जड़ता को तोड़ती है और यह दर्शाने का प्रयास करती है कि किस प्रकार नवजागरण अपनी निहित शक्तियों के माध्यम से समाज की प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ सकता है।

'जागो फिर एक बार' कविता में सिक्ख धर्म के आप्त वाक्य और भारतीय वीरों की विशेषताओं पर प्रकाश डालना ही कवि का एकमात्र उद्देश्य है। गुरु गोविंद सिंह ने सैनिकों को सत श्री अकाल से संबोधित किया जिसे सुनकर सैनिकों का वीरता का भाव जगा और उनमें मृत्यु का भय समाप्त हो गया। यह कविता छायावादी कविता है, जिसमें भले ही राजनीतिक भाषा का प्रयोग ना हुआ हो किंतु इसकी भाव योजना के भीतर स्वतंत्रता आंदोलन की सक्रियता लगातार बनी रहती है। इस कविता में बादलों का आह्वान किया गया है। कवि ने उन्हें नव चेतना और क्रांति का प्रतीक माना है। इस कविता में कवि ने भारत के अतीत का गौरवमय चित्रण किया है और यह भी संदेश दिया है कि भारतीयों को सदैव जागते रहना है। वह देशवासियों को नए उत्साह और ओजस्विता को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वह ऐतिहासिक परिवेश की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि भारत का अतीत बहुत ही गौरवशाली था। यहां के वीर युद्ध क्षेत्र में प्राणों की बाजी लगाकर अमरत्व को प्राप्त हो जाते थे। ऐसे ही वीर योद्धाओं की गौरव गाथा का गुणगान करते हैं। आज भी गुरु गोविंद सिंह जैसे शेर हैं, किंतु आज उन शेरों के मन में सियार घुस गए हैं। वह कहते हैं - भारतीय वीरों तुम जागो और सतर्कता के साथ उनका सामना करो, उनका दमन करो।

इनकी कविताओं में कवि के अंतर्विरोध उनकी विशेषताएं बनकर उभरे हैं। मुहावरे, अलंकार, बिंब, प्रतीक, मिथक आदि के सहारे कवि अपना संदेश देते हैं और उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। भाषा और शिल्प इन कविताओं की विशेषता रही है। कवि ने सामाजिक संघर्ष को अपने साहित्य के द्वारा अभिव्यक्ति दी है। इन कविताओं में नई काव्यभाषा का प्रयोग दिखाई पड़ता है जो उनकी प्रयोगशीलता में सहायक है। कविताओं में श्रृंगार, प्रेम के साथ-साथ कवि का आशावादी स्वर झलकता है। आज मानव अनेक विषमताओं से घिरा है, उसका जीना मुश्किल हो रहा है; जीवन दूभर होता जा रहा है। जीवन की अनेक उलझनों ने उसे अत्यंत जटिल जाल में फांस लिया है। उसको अनगिनत समस्याओं ने घेरा हुआ है। मानव की व्याकुलता, उलझनों और जिजीविषा को व्यक्त करने के लिए कवि ने अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है। प्रकृति कवि के लिए सचेतन है। कवि ने प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित किया है। प्रकृति उनके लिए सदैव प्रेरणा की प्रतीक रही है। यह कविताएं आत्मान्वेषण व आत्मानुभूति की कविताएं हैं।

2.4: पाठ सार

इस पाठ में कविवर निराला की दो कविताएं 'जुही की कली' और 'जागो फिर एक बार'को लिया गया है। इस जीवन में गति है, प्रवाह है किंतु फिर भी वह अखंड है और स्थिर है। यही इस जीवन की विशेषता है। **'जुही की कली'** में आत्म प्रसार की आकांक्षा दुनिया की चार-दिवारी

को तोड़कर नए विज्ञान के संपर्क से ओतप्रोत हो जाती है। उसके सामने संसार का विराट रूप आ जाता है। इस कविता के माध्यम से निराला उन सभी युवाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनकी आंखें ज्ञान के इस आलोक से खुल गई हैं। वह पारिवारिक सीमाओं से बाहर निकल कर समाज के कर्मक्षेत्र में आ खड़े हुए हैं। अनेक युवक समुद्र पार न करने की पुराणपंथी धारणा का खंडन कर शिक्षा के लिए विदेश के लिए निकल पड़े। आत्मप्रसार की इसी आकांक्षा की टक्कर इन पुरानी रूढ़ियों से हुई है। पवन का उपवन, सरिता, गहनकानन-कुंज- लता पुंजों को पार कर अन्य स्थान पर पहुंच जाना इसी का प्रतीक है। जूही की कली लता-वृंद पर सोई है। दूसरे बंध में उसकी विरह स्थिति का संकेत दिया गया है और उसके प्रिय पवन का चित्रण है। तीसरे बंध में दूर देश में पवन को अपने प्रिय की याद आती है जिससे वह सभी बाधाओं को पार करते हुए उसके पास पहुंच जाता है। चौथे बंध में जूही की कली को जगाने का प्रयास है लेकिन जब वह नहीं जागती तो वह जोरों से उसे झकझोर देता है तब वह जाग जाती है और अपने प्रिय को सामने देखकर खिल उठती है। इस प्रकार सोने से लेकर जागने तक का यह एक छोटा सा प्रसंग है जिसे बहुत ही गहराई के साथ सौंदर्यपूर्ण ढंग से प्रतीक लेते हुए बिम्ब द्वारा चित्रित किया गया है। इसमें श्रृंगार का संयोग और वियोग दोनों पक्ष दिखाई देते हैं। अप्रस्तुत विधान का सबसे सुंदर उदाहरण यह कविता है। कली का नायिका के रूप में वर्णन वास्तविक होते हुए पूर्णतया शास्त्रीय है। इस कविता में जूही की कली प्रस्तुत है और नायिका अप्रस्तुत है। यही कारण है कि यह कविता प्रकृति कविता है। कवि जूही की कली का जिस तरुणी के रूप में वर्णन और चित्रण करते हैं, वह सुहाग भरी है, दूसरे वह कोमल ही नहीं अमल तनु वाली है। बसंती निशा से यह स्पष्ट है कि जूही बंगाल की है, वह भी वसंत में खिलने वाली है। मलयानिल कविता का संबंध बंगाल से दर्शाता है। यह दक्षिण दिशा से चलने वाली हवाएं हैं। इस कविता के सौंदर्य वर्णन में स्थिति की अनुकूलता विशेष महत्व रखती है।

'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता का भाव बड़ा ही गहरा है। पड़ी हुई पराधीन मानसिकता में गौरव इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति तथा परंपराओं के प्रति गर्व करना,यही इस कविता का संदेश है। मानवता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सद्भावना, उदारता और सहानुभूति जो मानव की विशेषता है वही इस कविता का भाव है। भारतीयों के अंदर देश प्रेम की भावना जगा कर जोश भरने का प्रयत्न और उनके कायरता की निंदा कर उनकी अंतरात्मा को जगाने का प्रयास ही इस कविता का मूल है। इस तरह इस पाठ में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की दोनों कविताओं

की प्रस्तावना और उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए इन कविताओं की विस्तृत व्याख्या संदर्भ-प्रसंग सहित प्रस्तुत की गई है। इन कविताओं का समीक्षात्मक अध्ययन और पाठ की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा हुई है। यदि शब्द संपदा ना दी जाए तो कविताओं का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता अतः इस पाठ में शब्द संपदा देते हुए हर कविता से संबंधित बोध प्रश्न और उनके उत्तर भी दिए गए हैं। परीक्षार्थ प्रश्नों में लघु प्रश्न एवं दीर्घ प्रश्न दोनों दिए गए हैं और अंत में पठनीय पुस्तकों की संदर्भ सूची दी गई है। यह पाठ अपनी सभी विशेषताओं को समेटे हुए विद्यार्थियों के लिए लाभकारी बन पड़ा है तथा परीक्षा सामग्री की दृष्टि सेअपने आप में परिपूर्ण है। बिम्ब योजना,प्रतीक, मानवीकरण,छंदों और अलंकारों का विविध प्रयोग इन कविताओं को सौंदर्यवान बनाता है। जिन उद्देश्य को लेकर ये कविताएं लिखी गईं, कवि अपने उस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल होते हैं। भाव पक्ष और कला पक्ष की दृष्टि से ये कविताएं सशक्त हैं।

2.5: पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत पाठ पढ़ने के पश्चात कविवर निराला छायावादी कवि के रूप में सामने आते हैं।

- यह पाठ कवि हृदय की संवेदना, प्रकृति प्रेम,देशप्रेम,आशावादी दृष्टि और जिजीविषा को व्यक्त करता है।
- कवि की प्रयोगशीलता इस कविता में स्पष्ट दिखाई देती है।
- छंदों का विशिष्ट प्रयोग इन कविताओं की विशेषता है।
- इस पाठ को पढ़ने के पश्चात कवि की भावगत, शिल्पगत विशेषताएं और भाषा को समझना अधिक सरल हो जाएगा।

2.6: शब्द संपदा

1. विजन वन - सूना वन, वल्लरी-लता,
2. सुहाग भरी-भाग्यशाली,
3. मगन- लीन,
4. अमल कोमल-शुद्ध सुकुमार,
5. शिथिल-थकी हुई,
6. तरुणी-युवती,
7. दृग -नेत्र,

8. वसंती निशा-वसंत काल की रात्रि,
9. विरह- विधुर-विरह में व्याकुल,
10. मलयानिल-मलाई पर्वत की ओर से आने वाली हवा,
11. मधुर बात-प्रेम भरी बातें, कांता-नारी,
12. कमनीय गात-कोमल तन,
13. सर-सरिता-नदी-नाले,
14. गहन गिरि कानन-घने वन पर्वत,
15. कुंज-लता-पुंज-उपवन और लताओं के समूह,
16. केलि -रंगरेलियाँ,
17. आगमन-आना,
18. कपोल-गाल,
19. हिंडोल-झूला,
20. निद्रालस- निद्रा के आलस्य में भरी हुई,
21. बंकिम-टेढ़ी,
22. विशालनेत्र-बड़ेआँख

2.7: परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में लिखिए।

1. निराला की साहित्यिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिए।

2. पठित कविताओं के आधार पर निराला के काव्य शिल्प की विशेषताएं लिखिए।

3. 'जागो फिर एक बार' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

4. 'जुही की कली' कविता का भाव सौंदर्य उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

5. छायावाद के परिप्रेक्ष्य में निराला की चर्चा कीजिए।

6 'जागो फिर एक बार' कविता का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

खंड (आ)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में लिखिए।

1. 'परिमल' किसकी रचना है?
2. 'जागो फिर एक बार' कविता का प्रमुख उपजीव्य क्या है?
3. जूही के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?
4. निराला जी के काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
5. 'जागो फिर एक बार' कविता में बादल किसका प्रतीक है?
6. 'जागो फिर एक बार' कविता में कौन से तीन तापों का वर्णन है?
7. 'जुही की कली' कविता का नायक पवन किन-किन बाधाओं से जूझते हुए नायिका तक पहुंचता है?

खंड (इ)

(i) सही विकल्प चुनिए -

(क) 'कुकुरमुत्ता' रचना है –

(A) जयशंकर प्रसाद (B) निराला (C) अज्ञेय

(ख) विजन वन वल्लरी पर सोती है -

(A) हवा (B) ओस की बूंद (C) जुही की कली

(ग) जागो फिर एक बार कविता संकलित है –

(A) अनामिका में (B) परिमल काव्य संग्रह में (C) अणिमा में

(घ) जुही की कली कविता पहली बार छपी थी-

(A) नई कविता के पहले अंक में (B) अपरा में (C) परिमल में

(च) छायावाद के प्रसिद्ध स्तंभ हैं-

(A) चार (B) सात (C) तीन

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति -

(क) अनामिका काव्य संग्रह् के प्रथम संपादक .... थे।

(ख) निराला ने.................पत्रिका का संपादन किया।

(ग) मतवाला पत्रिका के संपादक ....थे।

(घ) प्रेम और सौंदर्य की कविता………….है।

(च) 1918 में .... प्रारंभ हुआ।

उत्तर : (क) बाबू महादेव प्रसाद (ख) समन्वय (ग) निराला (घ) जुही की कली (च) छायावाद

(iii) सुमेल कीजिए -

1 (क) कुकुरमुत्ता	(अ) मेदिनीपुर (बंगाल)
2 (ख) नए पत्ते	(ब) सरोज
3 (ग) निराला का जन्म	(स) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
4 (घ) निराला की पुत्री थी	(द) निराला
5 (च) निराला का पूरा नाम	(य) निराला

2.8: पठनीय पुस्तकें

(1) हिंदी साहित्य का इतिहास - संपादक: डॉ. नगेन्द्र,सह संपादक : डॉ. सुरेशचंद्र गुप्त,नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, नई दिल्ली

(2) निराला की साहित्य साधना- रामविलास शर्मा

(3) हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास-संपादक: डॉ. मोहन अवस्थी-सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद

(4) निराला समग्र-सूर्यप्रसाद दीक्षित

(5) निराला कृति से साक्षात्कार-नंदकिशोर नवल

(6) निराला काव्य में प्रकृति-रेणुबाला

(7) निराला का कथा साहित्य: वस्तु और शिल्प-डॉ उषा द्विवेदी

इकाई 3 : 'बादल राग' और 'वर दे वीणावादिनि' - व्याख्या और विवेचना

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ : 'बादल राग' और 'वर दे वीणावादिनि' व्याख्या और विवेचन

3.3.1 कविता 'बादल राग'

3.3.2 बादल राग' की व्याख्या और विवेचना

3.3.3 कविता 'वर दे वीणावादिनि'

3.3.4 'वर दे वीणावादिनि' की व्याख्या और विवेचना

3.4 पाठ-सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द-संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

महाप्राण निराला छायावाद के चार-स्तंभों में से एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं। वे अनुभव और अभिव्यक्ति दोनों में 'निराला' थे। रामविलास शर्मा लिखते हैं कि हिन्दी साहित्य में निराला अपने ओजगुण के लिए प्रसिद्ध हैं। उदात्त उनके काव्य का सहज स्वर है। दार्शनिक चिंतन में, साहित्यिक वाद-विवाद में, व्यंग्य और माधुर्य में, करुणा और शोक में भी उनकी वाणी सामान्यत: ऊर्जा से प्रेरित रहती है। उनके साहित्य की यह विशेषता उनके व्यक्तित्व की देन नहीं है; उसका गहरा संबंध उनके युग से है। इस इकाई में निर्धारित कविताओं को पढ़कर समझने के लिए निराला के व्यक्तित्व को समझने के साथ-साथ हमें उनके युग को भी देखना होगा और उसी के परिप्रेक्ष्य में कविताओं का अर्थ ग्रहण करना होगा।

3.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- निराला का जीवन परिचय दे सकेंगे।
- निराला का साहित्यिक परिचय दे सकेंगे।

- निराला की दो कविताओं 'बादल राग' तथा 'वर दे वीणावादिनि' पढ़कर उसका भावार्थ बता सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : 'बादल राग' और 'वर दे वीणावादिनि' - व्याख्या और विवेचना

3.3.1 कविता 'बादल राग'

एक

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर!
राग-अमर! अंबर में भर निज रोर!
झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु, तरु-मर्मर, सागर में,
सरित—तड़ित-गति-चकित पवन में
मन में, विजय-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव-घोर-कठोर—
राग-अमर! अंबर में भर निज रोर!
अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू, बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार!
उथल-पुथल कर हृदय
मचा हलचल—
चल रे चल,—
मेरे पागल बादल!
धँसता दलदल,
हँसता है नद खल्-खल्
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।
देख-देख नाचता हृदय
बहने को महाविकल-बेकल,
इस मरोर से—इसी शोर से—
सघन घोर गुरु गहन रोर से
मुझे—गगन का दिखा सघन वह छोर!
राग-अमर! अंबर में भर निज रोर!

दो

ऐ निर्बंध!
अंध-तम-अगम-अनर्गल-बादल!
ऐ स्वच्छंद!
मंद-चंचल-समीर-रथ पर उच्छृंखल!
ऐ उद्दाम!
अपार कामनाओं के प्राण!
बाधारहित विराट!
ऐ विप्लव के प्लावन!
सावन-घोर गगन के
ऐ सम्राट!
ऐ अटूट पर छूट टूट पड़नेवाले—उन्माद!
विश्व-विभव को लूट-लूट लड़ने वाले—अपवाद!
श्री बिखेर, मुख-फेर कली के निष्ठुर पीड़न!
छिन्न-भिन्न कर पत्र-पुष्प-पादप-वन-उपवन,
वज्र-घोष से ऐ प्रचंड!
आतंक जमाने वाले!
कंपित जंगम,—नीड़-विहंगम,
ऐ न व्यथा पाने वाले!
भय के मायामय आँगन पर
गरजो विप्लव के नव जलधर!

तीन

सिंधु के अश्रु!
धरा के खिन्न दिवस के दाह!
विदाई के अनिमेष नयन!
मौन उर में चिह्नित कर चाह
छोड़ अपना परिचित संसार—
सुरभि का कारागार,
चले जाते हो सेवा-पथ पर,
तरु के सुमन!
सफल करके

मरीचिमाली का चारु चयन।
स्वर्ग के अभिलाषी हे वीर,
सव्यसाची-से तुम अध्ययन-अधीर
अपना मुक्त विहार,
छाया में दुख के अंत:पुर का उद्घाटित द्वार
छोड़ बंधुओं के उत्सुक नयनों का सच्चा प्यार,
जाते हो तुम अपने पथ पर,
स्मृति के गृह में रखकर
अपनी सुधि के सज्जित तार।
पूर्ण-मनोरथ! आए—
तुम आए;
रथ का घर्घर-नाद
तुम्हारे आने का संवाद।
ऐ त्रिलोक-जित्! इंद्र-धनुर्धर!
सुरबालाओं के सुख-स्वागत!
विजय! विश्व में नवजीवन भर,
उतरो अपने रथ से भारत!
उस अरण्य में बैठी प्रिया अधीर,
कितने पूजित दिन अब तक हैं व्यर्थ,
मौन कुटीर।
आज भेंट होगी—
हाँ, होगी निस्संदेह,
आज सदा-सुख-छाया होगा कानन-गेह
आज अनिश्चित पूरा होगा श्रमित प्रवास,
आज मिटेगी व्याकुल श्यामा के अधरों की प्यास।

चार

उमड़ सृष्टि के अंतहीन अंबर से,
घर से क्रीड़ारत बालक-से,
ऐ अनंत के चंचल शिशु सुकुमार!
स्तब्ध गगन को करते हो तुम पार।

अंधकार-घन अंधकार ही

क्रीड़ा का आगार।

चौंक चमक छिप जाती विद्युत

तडिद्दाम अभिराम,

तुम्हारे कुंजित केशों में

अधीर विक्षुब्ध ताल पर

एक इमन का-सा अति मुग्ध विराम।

वर्ण रश्मियों-से कितने ही

छा जाते हैं मुख पर—

जग के अंतस्थल से उमड़

नयन-पलकों पर छाए सुख पर;
रंग अपार
किरण-तूलिकाओं से अंकित
इंद्रधनुष के सप्तक, तार;
व्योम और जगती के राग उदार
मध्यदेश में, गुडाकेश!
गाते हो वारंवार।
मुक्त! तुम्हारे मुक्त कंठ में।
स्वरारोह, अवरोह, विघात,
मधुर मंद्र, उठ पुनः पुनः ध्वनि
छा लेती है गगन, श्याम कानन,
सुरभित उद्यान,
झर-झर-रव भूधर का मधुर प्रपात।
वधिर विश्व के कानों में
भरते हो अपना राग,
मुक्त शिशु! पुनः पुनः एक ही राग-अनुराग।

पाँच

निरंजन बने नयन-अंजन!
कभी चपल गति, अस्थिर मति,
जल-कलकल तरल प्रवाह,
वह उत्थान-पतन-हत अविरत
संसृति-गत उत्साह,
कभी दु:ख-दाह
कभी जलनिधि-जल विपुल अथाह,—
कभी क्रीड़ारत सात प्रभंजन—
बने नयन-अंजन!
कभी किरण-कर पकड़-पकड़कर
चढ़ते हो तुम मुक्त गगन पर,
झलमल ज्योति अयुत-कर-किंकर,
सीस झुकाते तुम्हें तिमिरहर—
अहे कार्य से गत कारण पर!
निराकार, हैं तीनों मिले भुवन—
बने नयन-अंजन!
आज श्याम-घन श्याम, श्याम छवि,
मुक्त-कंठ है तुम्हें देख कवि,
अहो कुसुम-कोमल कठोर-पवि!
शत-सहस्र-नक्षत्र-चंद्र रवि संस्तुत
नयन-मनोरंजन!
बने नयन-अंजन!

छह

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया—
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया—

यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक़ रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!
फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शायित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा-धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार—
शस्य अपार,
हिल-हिल,
खिल-खिल
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन,
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है

शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष, है क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक-अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

शब्दार्थ: तिरती = तैरती। समीर-सागर = वायु रूपी समुद्र। अस्थिर = क्षणिक, चंचल। दग्ध = जला हुआ। निर्दय = बेदर्द। विप्लव = विनाश। प्लावित = बाढ़ से ग्रस्त। रण-तरी = युद्ध की नौका। माया = खेल। आकांक्षा = कामना। भेरी = नगाड़ा। सजग = जागरूक। सुप्त = सोया हुआ। अंकुर = बीज से निकाला नन्हा पौधा। उर = हृदय। ताकना = अपेक्षा से एकटक देखना। वर्षण = बारिश। मूसलाधार = ज़ोरों की बारिश। हृदय थामना = भयभीत होना। घोर = भयंकर। वज्र-हुंकार = वज्रपात के समान भयंकर आवाज। अशनि-पात = बिजली गिरना। शापित = शाप से ग्रस्त। उन्नत = बड़ा। शत-शत = सैकड़ों। क्षत-विक्षत = घायल। हत = मारे हुए। अचल = पर्वत। गगन-स्पर्शी = आकाश को छूने वाला। स्पर्धा-धीर = आगे बढ़ने की होड करने हेतु बेचैनी। लघुभार = हल्के। शस्य = हरियाली। अपार = बहुत। रव = शोर। अट्टालिका = अटारी, महल। आतंक-भवन = भय का निवास। पंक = कीचड़। प्लावन = बाढ़। क्षुद्र = तुच्छ। प्रफुल्ल = खिला हुआ, प्रसन्न। जलज = कमल। नीर = पानी। शोक = दुख। शैशव = बचपन। सुकुमार = कोमल। रुद्ध = रुका हुआ। कोष = खजाना। क्षुब्ध = क्रुद्ध। तोष = शांति। अंगना = पत्नी। अंग = शरीर। अंक = गोद। वज्र-गर्जन = वज्र के समान गर्जन। त्रस्त = भयभीत। जीर्ण = पुरानी, शिथिल। बाहु = भुजा। शीर्ण = कमज़ोर। कृषक = किसान। अधीर = व्याकुल। विप्लव = विनाश। सार = प्राण। हाड़-मात्र = केवल हड्डियों का ढाँचा। पारावार = समुद्र।

3.3.2 'बादल राग' की व्याख्या और विवेचना

'बादल राग' कविता 'अनामिका' काव्य से ली गई है और यह कवि के प्रगतिवादी विचारों की अभिव्यक्ति है। निराला को वर्षा ऋतु अधिक पसंद है, क्योंकि बादल के भीतर सृजन और ध्वंस

की ताकत एक साथ समाहित होती है। बादल एक ओर जहाँ किसान के लिए प्रसन्नता और सृजन लेकर आता है वहीं मजदूर के संदर्भ में यह क्रांति और बदलाव का प्रतीक है। 'बादल राग' निराला जी की प्रसिद्ध कविता है। वे बादलों को क्रांति-दूत मानते हैं। बादल शोषित वर्ग को प्रसन्न करते हैं, तथा इन्हें देखकर पूँजीपति वर्ग भयभीत होता है। बादलों की क्रांति का लाभ दलित-पीड़ित-वंचित वर्ग को मिलता है, इसलिए किसान के खेतों में बड़े-छोटे पौधे बादलों को हाथ हिला-हिलाकर बुलाते हैं। कवि यह मानता है कि समाज में क्रांति की आवश्यकता है, ताकि आर्थिक विषमता मिटे। कवि ने बादलों को क्रांति का प्रतीक माना है।

कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवा रूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुखों पर दुख की छाया हैं जो संसार या धरती की जलती हुई छाती पर मानो छाया करके उसे शांति प्रदान करने के लिए आए हैं। बाढ़ की विनाश लीला रूपी युद्धभूमि में वे नौका के समान हैं। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हों और उनके शरीर क्षत-विक्षत हैं। कवि कहता है कि छोटे व हल्के पौधे हिल-डुलकर हाथ हिलाते हुए बादलों को बुलाते प्रतीत होते हैं। कवि बादलों को क्रांति-दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फायदा होता है। बादल कीचड़ पर कहर बरसाते हैं। बुराई रूपी कीचड़ के सफ़ाए के लिए बादल प्रलय के समान आते हैं। छोटे-से तालाब में उगने वाले कमल सदैव उसके पानी को स्वच्छ व निर्मल बनाते हैं। आम आदमी हर हाल में प्रसन्न व सुखी रहता है। धनी व्यक्ति अत्यधिक संपत्ति इकट्ठी करके भी असन्तुष्ट रहता है और क्रांति की आशंका से काँपता है। कवि कहता है कि कमजोर कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है। बादल ही क्रांति करके शोषण को समाप्त कर सकता है।

छठी कविता में कवि बादल को संबोधित करते हुए कहता है कि हे क्रांतिदूत रूपी बादल! तुम आकाश में ऐसे मंडराते रहते हो जैसे पवन रूपी सागर पर कोई नौका तैर रही हो। यह उसी प्रकार है जैसे अस्थिर सुख पर दुख की छाया मँड़राती रहती है। सुख हवा के समान चंचल है तथा अस्थायी है। बादल संसार के जले हुए हृदय पर निर्दयी प्रलयरूपी माया के रूप में हमेशा स्थित रहते हैं। बादलों की युद्ध रूपी नौका में आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई रहती हैं। कवि कहता है कि हे बादल! तेरी भारी-भरकम गर्जना से धरती के गर्भ में सोए हुए अंकुर सजग हो जाते हैं अर्थात कमजोर व निष्क्रिय व्यक्ति भी संघर्ष के लिए तैयार हो जाते हैं। हे विप्लव के बादल! ये अंकुर नए जीवन की आशा में सिर उठाकर तुम्हारी ओर देख रहे हैं अर्थात क्रांति के माध्यम से शोषितों के मन में अपने उद्धार की आशाएँ फूट पड़ती हैं।

कवि आगे कहता है कि हे क्रांतिकारी बादल! तुम बार-बार गर्जन करते हो तथा मूसलाधार बारिश करते हो। तुम्हारी वज्र के समान भयंकर आवाज को सुनकर संसार अपना हृदय थाम लेता है अर्थात भयभीत हो जाता है। बिजली गिरने से आकाश की ऊँचाइयों को छूने की इच्छा रखने वाले ऊँचे पर्वत भी उसी प्रकार घायल हो जाते हैं जैसे रणक्षेत्र में वज्र के प्रहार से बड़े-बड़े वीर

मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, बड़े लोग या पूँजीपति ही क्रांति से प्रभावित होते हैं। इसके विपरीत, छोटे पौधे हँसते हैं। वे उस विनाश से जीवन प्राप्त करते हैं। वे अपार हरियाली से प्रसन्न होकर हाथ हिलाकर तुझे बुलाते हैं। विनाश के शोर से सदा छोटे प्राणियों को ही लाभ मिलता है। दूसरे शब्दों में क्रांति से निम्न व दलित वर्ग को अपने अधिकार मिलते हैं। कवि ने बादल को क्रांति और विद्रोह का प्रतीक माना है।

कवि कहता है कि ये जो पूँजीपतियों के ऊँचे-ऊँचे भवन हैं ये वस्तुत: गरीबों को आतंकित करने वाले भवन हैं। ये गरीबों का शोषण करते हैं। वर्षा से जो बाढ़ आती है, वह सदा कीचड़ से भरी धरती को ही डुबोती है। भयंकर जलप्लावन सदैव कीचड़ पर ही होता है। यही जल जब कमल की पंखुड़ियों पर पड़ता है तो वह अधिक प्रसन्न हो उठता है। प्रलय से पूँजीपति वर्ग ही प्रभावित होता है। निम्न वर्ग के बच्चे कोमल शरीर के होते हैं तथा रोग व कष्ट की दशा में भी सदैव मुस्कराते रहते हैं। वे क्रांति होने में भी प्रसन्न रहते हैं। पूँजीपतियों ने आर्थिक साधनों पर कब्जा कर रखा है। उनकी धन इकट्ठा करने की इच्छा अभी भी नहीं खत्म हुई है। इतना धन होने पर भी उन्हें शान्ति नहीं है। वे अपनी प्रियाओं से लिपटे हुए हैं फिर भी बादलों की गर्जना सुनकर काँप रहे हैं। वे क्रांति की गर्जना सुनकर भय से अपनी आँखें बंद किए हुए हैं तथा मुँह को छिपाए हुए हैं। यहाँ कवि ने पूँजीपतियों के विलासी जीवन पर कटाक्ष किया है।

कवि बादलों को विप्लव के वीर कहकर संबोधित करता है। वह कहता है कि शोषण के कारण किसान की भुजाएँ कमज़ोर हो गई हैं। उनका शरीर क्षीण हो गया है। वह शोषण खत्म करने के लिए बादलों को बुला रहा है। शोषकों ने उसकी जीवन-शक्ति छीन ली है, उसका सार-तत्त्व चूस लिया है। अब वह हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया है। हे जीवन दाता! तुम बरसकर किसान की गरीबी दूर करो। क्रांति करके शोषण को समाप्त करो।

ससन्दर्भ व्याख्या :

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया—
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया—
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक़ रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश निराला द्वारा रचित कविता 'बादल राग' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि बादलों से नवांकुरों को नया जीवन देने की प्रार्थना करता है।
व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों में निराला बादलों को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि हे विप्लव के बादल! तुम आकाश में ऐसे तैर रहे हो जैसे वायु-रूपी समुद्र पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया तैरती है। इन पंक्तियों में कवि सुख को हवा के समान चंचल तथा अस्थिर बता रहा है। बादल संसार के जले हुए हृदय पर निर्दयी प्रलय की माया के समान सदैव छाए रहते हैं। हे बादलों! मनुष्य के लिए तुम्हारी यह युद्ध-नौका आकांक्षाओं से भरी है। बादलों की गर्जना सुनकर पृथ्वी के हृदय में सोए अंकुर नवजीवन की आशा से उसकी तरफ सिर ऊँचा किए ताक रहे हैं। यहाँ कवि ने पृथ्वी के हृदय के भीतर सोए अंकुरों को शोषित-पीड़ित जनता का प्रतीक माना है। क्रांति से शोषित जन का उद्धार होता है। ऐसा कवि का मानना है। बादल क्रांति-दूत के समान हैं।
विशेष:

I. इस कविता में प्रगतिवादी विचारधारा का प्रभाव है।
II. तत्सम शब्दावली-युक्त खड़ी बोली है।
III. कविता मुक्त छंद में रची गई है।
IV. काव्यांश में मानवीकरण अलंकार है।
V. 'समीर-सागर', 'रण-तरी' आदि में रूपक अलंकार है।

अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन,
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष, है क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक-अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश निराला द्वारा रचित कविता 'बादल राग' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कवि ने बादलों को विप्लव व क्रांति का प्रतीक मानकर उनका आह्वान किया है।

व्याख्या: कवि कहता है कि ये अट्टालिकाएँ मात्र ऊँचे-ऊँचे भवन नहीं हैं बल्कि ये आतंक-भवन हैं। ये गरीबों को आतंकित करते हैं। यहाँ गरीबों का शोषण होता है। कवि कहते हैं कि बाढ़ जब आती है तो वह कीचड़ को ही डुबाती है। यही जल जब कमल की पंखुड़ियों पर पड़ता है तो वह प्रसन्न हो उठता है। प्रलय से पूँजीपति वर्ग ही प्रभावित होता है। निम्न वर्ग के कोमल शरीर के बच्चे तो रोग-शोक की दशा में ही मुस्कराते रहते हैं। दूसरी तरफ, पूँजीवादी वर्ग, जिनका कोष भरा हुआ है किन्तु मन खाली है, असंतोष है। वे अपनी प्रियाओं से लिपटे हुए हैं, किन्तु ऐसे काँप रहे हैं मानो आतंक की गोद में हैं। बादलों की गर्जना उन्हें भयभीत करती है क्योंकि बादल क्रांति का प्रतीक हैं। क्रांति की गर्जना सुनकर वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं तथा मुख ढँक लेते हैं।

विशेष:

I. इन पंक्तियों में कवि ने पूँजीपतियों के विलासी जीवन पर कटाक्ष किया है।
II. प्रतीकात्मक भाषा है।
III. तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली है।
IV. 'पंक पर', 'अंगना-अंग', 'आतंक-अंक' में अनुप्रास अलंकार है।
V. कविता मुक्त-छंद में लिखी गयी है।

(इसी प्रकार कविता के अन्य अंशों की व्याख्या करने का अभ्यास कीजिए।)

3.3.3 कविता 'वर दे वीणावादिनि'

वर दे!
वर दे, वीणावादिनि, वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अंध उर के बंधन स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद मंद्र रव,
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

शब्दार्थ: वर = वरदान। उर = हृदय। तम = अंधकार। विहग = पक्षी। वृंद = समूह। नव = नया। पर = पंख।

3.4 'वर दे वीनावादिनि' की व्याख्या और विवेचना

भारत और भारतीयता के पोषक निराला ने इस कविता में माता सरस्वती से अज्ञान रूपी बंधन काटकर भारतीयों के हृदय में प्रकाश भरने की प्रार्थना की है। निराला माता सरस्वती के अनन्य साधक हैं। उनका जन्म भी बसंत पंचमी को हुआ था। प्रस्तुत गीत में वे देवी सरस्वती से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे माँ, भारतीयों के मन में अमृत मंत्र का संचार करके स्वतंत्रता का नया प्रवाह भर दो। हे माँ, देशवासियों की वाणी में ऐसी शक्ति दो कि उनके मन और हृदय से अज्ञानता और दासता का बंधन खुल जाए और लोगों के हृदय में ज्ञान और स्वाधीनता की ज्योति दीप्त हो उठे और उनका जीवन नवीन आभा से प्रकाशित हो उठे। लोगों के हृदय से कलुषता तथा अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाए तथा यह जग ज्ञान के प्रकाश से जगमगा उठे। हे माँ वीणावादिनि! इस जग के सभी मनुष्यों को नई गति, नई लय, नया ताल, नया छंद प्रदान करो। उनका कंठ नवीन स्वर से गुंजरित हो उठे। तुम भारतीय नवयुवकों को ऐसी गहन गंभीर वाणी प्रदान करो कि वे इस नवीन राग को नवीन आकाश में नवीन पंखों और नवीन स्वर वाले पक्षियों की तरह गा उठें। इस प्रकार कवि माता सरस्वती से अज्ञान रूपी अँधेरा दूर करने के साथ-साथ नवीन विचार प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

ससंदर्भ व्याख्या

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद मंद्र रव,
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ निराला द्वारा रचित कविता 'वर से वीणावादिनि' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि माता सरस्वती से देश के नवयुवकों तथा कवियों के हृदय से अज्ञान का अँधेरा दूर कर उन्हें नया विचार देने की प्रार्थना कर रहे हैं।

व्याख्या: कविवर निराला माँ सरस्वती को संबोधित करते हुए उनसे प्रार्थना करते हैं कि हे माँ, मेरी वाणी में वह ओज भरो कि देशवासियों के मन और हृदय से अज्ञान दूर हो और वे नई ऊर्जा, नए लय-ताल के साथ नए छंद गाएँ। कवि का तात्पर्य है कि उनका हृदय नए विचारों से भर उठे। उनका कंठ नया हो, उससे गहन-गंभीर वाणी गुंजरित हो। हे माँ, नए आकाश के इन नए पंछियों को नया पंख और नया स्वर प्रदान करो। कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना करते हैं कि उनकी वाणी से उसी प्रकार से गंभीर गर्जना हो जिस प्रकार नए बादलों की गर्जना में अनुगूँज होती है। कवि की कामना है कि वह देश के युवाओं के लिए नए प्रभाव से युक्त उत्साहवर्धक नया काव्य लिख सके ताकि वे अपनी प्रगति की नई राह चुन सकें।

विशेष:

I. कविता तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली में लिखी गई है।

II. ‘नव’ शब्द की आवृत्ति द्वारा कवि आकांक्षा की तीव्रता को व्यक्त करता है।

III. कविता मुक्त छंद में लिखी गई है किन्तु अत्यंत लयात्मक है।

(इसी प्रकार कविता के अन्य अंशों की व्याख्या करने का अभ्यास कीजिए।)

3.4 : पाठ सार

- प्रस्तुत इकाई में हिन्दी के छायावादी कवि पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की दो कविताएं समाहित की गई है- ‘बादल राग’ एवं ‘वर दे, वीणावादिनि वर दे’।
- ‘बादल राग’ कविता में निराला ने बादलों को क्रांति का प्रतीक माना है। वे मानते हैं कि समाज में क्रांति की आवश्यकता है। क्रांति से समाज के दलित-शोषित-पीड़ित जन को लाभ होता है। जिस प्रकार किसान के खेत में फसलें झूम-झूमकर बादलों को बुलाती हैं, उसी प्रकार पीड़ित जन आशा भरी निगाहों से क्रांति की राह देखते हैं।
- दूसरी कविता ‘वर दे, वीणावादिनि वर दे’ में कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना करते हुए अपनी वाणी में ओज एवं नया विचार भरने को कह रहे हैं ताकि उनकी वाणी से देश के युवाओं में नए विचारों का संचार हो।
- इस पाठ को पढ़ने से हमें यह जानकारी मिलती है कि निराला की वाणी में ओज उनके जीवन के संघर्षों की देन है। जीवन की धूप ने तपाकर उन्हें खरा सोना बना दिया था, उसी की प्रखरता उनकी कविताओं में प्रतिध्वनित होती है।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ को पढ़ने के उपरांत हमने यह जाना कि :

- ‘निराला’ आधुनिक युग के सर्वाधिक मौलिक क्षमता से सम्पन्न कवि कहे गए हैं।
- निराला के काव्य में आरंभ से ही विविधता के दर्शन होते हैं। यह विविधता भाषागत भी है और भावगत भी, विचारगत भी है शिल्पगत भी।
- निराला युगीन यथार्थ के प्रति भी अत्यंत सजग थे, जिसका प्रभावी चित्रण उनकी कविताओं में देखा जा सकता है।
- हिन्दी कविता में मुक्त छंद का प्रयोग सबसे पहले निराला ने किया।
- निराला क्रांति को समाज के लिए आवश्यक मानते थे। अपनी ‘बादल राग’ कविता में उन्होंने बादलों को क्रांति का प्रतीक बताते हुए उन्हें अपनी गर्जना से शोषित-पीड़ित जन की पीड़ा हरने वाला बताया है।
- ‘वर दे, वीणावादिनि वर दे’ कविता में वे माँ सरस्वती से अपनी वाणी में ओज भरने की प्रार्थना करते हैं, ताकि उनके नए विचारों से प्रभावित होकर नवयुवक अपने जीवन का नया मार्ग चुन सकें।

3.6 : शब्द संपदा

1. ताल्लुकदार = तालुक से कर वसूलने वाला जमींदार

2. स्वाध्याय = किसी विषय का अनुशीलन अथवा स्वयं अध्ययन
3. अभ्युदय = वृद्धि
4. मुक्त-छंद = वह काव्य शैली जिसमें कविता को किसी निश्चित छंद या तुकबंदी के
5. नियमों से बाँधा नहीं जाता।
6. ध्वंस = विनाश
7. कलुषता = मलिनता, दोष

3.7: परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए।

1. 'बादल राग' कविता का भावार्थ तथा संदेश लिखिए।
2. 'निराला के जीवन संघर्ष उनकी वाणी से कविता बनकर प्रकट हुए हैं।' पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।

खंड (ब)

लघु-उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. निराला का साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. 'वर दे, वीणावादिनि वर दे' कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए।
3. 'निराला क्रांति के समर्थक हैं।' 'बादल राग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. देश के नवयुवकों को नए विचारों की आवश्यकता है। 'वर दे, वीणावादिनि वर दे' कविता के आधार पर समझाइए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. निराला का परिवार ------------ गाँव का निवासी था। ( )

(अ) बैसवाड़ा (आ) महिषादल (इ) गढ़ाकोला (ई) उन्नाव

2. निराला ने -------------- द्वारा अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। ( )

(अ) स्कूल (आ) स्वाध्याय (इ) पिता (ई) पतुरिया

3. निराला का जन्म ------------------ में हुआ था। (   )

(1) 1889 (2)1878 (3)1879 (4) 1899

4. निराला ने बादलों को -------------- माना है। (   )

(1) कवि (2) ईश्वर (3) क्रांति-दूत (4) नवजीवन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. निराला की ________ कृति को 'राम की शक्ति पूजा' की पूरक कृति कहा जाता है।
2. 'मतवाला' के ___________ अंक में 'जुही की कली' कविता छपी।
3. निराला ने अपनी ________ रचना में 'शक्ति-संधान' की रचनात्मक व्याख्या की है।

III. सुमेल कीजिए।

1. सन् 1961 ई.	अ. दुख की छाया
2. बादल	आ. आतंक-भवन
3. शोषित जनता	इ. लोक-प्रचलित कथा को आधार बनाकर लिखा गया काव्य
4. अट्टालिकाएँ	ई. निराला का देहावसान
5. तुलसीदास	उ. पृथ्वी के हृदय के भीतर सोए अंकुर

3.8: पठनीय पुस्तकें

1. शर्मा रामविलास, निराला की साहित्य साधना (भाग 1 एवं 2), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2. पाराशर अश्विनी, निराला – एक अध्ययन, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली

3. पाण्डेय गंगा प्रसाद, महाप्राण निराला, हिन्दी साहित्य प्रेस

4. सिंह नामवर, छायावाद

इकाई 4 : 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया है' : व्याख्या और विवेचन

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूल पाठ: 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया है': व्याख्या और विवेचना

4.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय

(अ) अध्येय कविता : 'तोड़ती पत्थर'
(आ) विस्तृत व्याख्या : 'तोड़ती पत्थर'
(इ) अध्येय कविता : 'स्नेह निर्झर बह गया'
(ई) विस्तृत व्याख्या : 'स्नेह निर्झर बह गया'
(उ) समीक्षात्मक अध्ययन

4.4 पाठ सार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जानते ही हैं कि आधुनिक हिंदी साहित्य में 1915 के आस-पास एक नए मोड़ का आरंभ हो गया था। पुरानी काव्य पद्धति को छोड़कर एक नवीन पद्धति को अपनाया गया था। "स्थूल और सरल पदावली की भी प्रतिक्रिया हुई और कविता अंतर्जगत की ओर उन्मुख होकर सूक्ष्म, वक्र तथा सांकेतिक पदावली में अवतरित होने लगी।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 517)। हिंदी साहित्य के इतिहास में इस प्रवृत्ति को ही छायावाद कहा गया। इस काव्य पद्धति में यथार्थ के चित्रण पर बल दिया गया। छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों के रूप में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा सामने आए। इन साहित्यकारों ने हिंदी कविता को अंतर्वस्तु और शिल्प दोनों के स्तर पर उत्कर्ष प्रदान किया। छायावादी कवियों में निराला का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। महाप्राण निराला की कविताओं में राष्ट्रीयता का भाव प्रमुख रूप से झलकता है। साथ ही प्रेम, करुणा, पीड़ा, आक्रोश आदि भावों को देखा जा सकता है। वे आपबीती को जगबीती के रूप में परिवर्तित नहीं करते, बल्कि जगतबीती को ही आपबीती बनाकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। उनकी कविताओं का फलक बहुत ही विस्तृत है। अतः उनके किसी एक कोटी में बाँधकर विश्लेषण करना संभव नहीं है। तो

छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत हम सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की दो प्रतिनिधि कविताएँ - 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया' का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- निराला की दो कविताएँ - 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया' का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- विवेच्य कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में इन कविताओं के महत्व का उल्लेख कर सकेंगे।
- रचनाकार का युगीन परिवेश समझ कर उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता से जुड़ पाएँगे।
- इन कविताओं के भाव और शिल्प सौंदर्य का रसास्वादन कर सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया है' : व्याख्या और विवेचना

4.3.1 अध्येय कविताओं का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य के इतिहास में निराला को जागरण के कवि के रूप में जाना जाता है। उनका काव्य राष्ट्रीय जागरण को अभिव्यक्त करता है। रूढ़ियों से मुक्त होने की प्रबल आकांक्षा उनकी कविताओं का मुख्य स्वर है। कवि शोषणरहित समाज का निर्माण करने की प्रबल इच्छा रखते हैं।

'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने एक मजदूर स्त्री के माध्यम से शोषित वर्ग की विडंबनाओं का चित्रण किया है। इस कविता के माध्यम से हम संपन्न वर्ग और श्रमिक वर्ग के बीच निहित विरोधाभास को समझ सकते हैं। इस कविता में तत्कालीन समाज की स्थिति को बखूबी रेखांकित किया गया है। यह कविता लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक 'सुधा' के मई 1937 के अंक में प्रकाशित हुई थी। यह एक मजदूरनी को केंद्र में रखकर लिखी गई पहली हिंदी कविता है। दूसरी बार यह कविता 'अनामिका' में प्रकाशित हुई।

'स्नेह निर्झर बह गया' में कवि की आत्मानुभूति है। इस कविता में निराशा और असंतोष के भावों को देखा जा सकता है। पानी समाप्त हो जाने के बाद अर्थात सूख जाने के बाद नदी में केवल रेत रह जाती है, उसी प्रकार कवि का जीवन भी हो चुका है। इस कविता में कवि की टूटती हुई, बिखरती हुई मनःस्थिति अंकित है।

(अ) अध्येय कविता : 'तोड़ती पत्थर'

तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन।

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगीं छा गई
प्रायः हुई दुपहर,
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
'मैं तोड़ती पत्थर।'

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

(आ) विस्तृत व्याख्या : 'तोड़ती पत्थर'

वह तोड़ती पत्थर..........
.......नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन।

शब्दार्थ : पथ = रास्ता, तले = नीचे, श्याम तन = साँवला शरीर, नत = झुकी हुई, नयन = आँखें, कर्म = काम

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ कृत ‘तोड़ती पत्थर’ कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : ‘तोड़ती पत्थर’ कविता छायावाद और प्रगतिवाद के संधि स्थल की कविता है। कहने का आशय है कि इस कविता का सृजन छायावाद की समाप्ति और प्रगतिवाद के प्रारंभ के दौर में हुआ है। इस कविता में एक मजदूर स्त्री का वर्णन है।

व्याख्या : कवि ने इलाहाबाद के सड़क के किनारे एक मजदूरनी को देखा जो गर्मी की भरी दुपहरी में बैठकर पत्थर तोड़ रही थी। वह धूप में काम कर रही थी। गर्मी प्रचंड थी। सूर्य का ताप सहने लायक नहीं था। वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं था। खुले आसमान की चिलचिलाती धूप में वह मजदूरनी स्त्री पसीने से नहाई पत्थर तोड़ रही थी। वह युवती थी। उसका गहरे साँवले रंग का शरीर आकर्षक था। वह युवावस्था में थी। वह अपनी आँखें नीचे किए हुए अपने काम में लगी हुई थी। मानो ऐसा लग रहा था कि यह उसका अत्यंत प्रिय काम हो और वह मन लगाकर उस काम को कर रही हो।

उस मजदूरनी को देखने पर यह जरूर लगता है कि वह अपने प्रिय काम को मन लगाकर कर रही है, लेकिन यह सच्चाई नहीं थी। सच्चाई कुछ और ही है। गर्मी में काम करना उसकी मजबूरी थी, क्योंकि वह अकेली थी। उसे आश्रय देने वाला कोई नहीं था। यहाँ छायादार पेड़ एक प्रतीक है आश्रयदाता के लिए।

कवि का एक मजदूर स्त्री को पहली बार पत्थर तोड़ते हुए देखना सामान्य ढंग से देखना है। दूसरी बार देखना पूरी मानवीय संवेदना से ध्यान से देखना है। यहीं से अगले ही छंद में संवेदना के साथ देखने की अभिव्यंजना को कवि दर्शाता है। इसकी पुष्टि इस पंक्ति से होती है - 'कोई न छायादार पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार।’ ‘स्वीकार’ शब्द मजदूर स्त्री की बेबसी को और सघन बना देता है। वह स्त्री जिसके सिर पर छाया देने के लिए कोई पेड़ नहीं है अर्थात उसे आश्रय देने के लिए कोई ठोस हाथ नहीं है, मजबूर और बेबस होकर सड़क के किनारे बैठकर पत्थर तोड़ रही है। उसने अपनी स्थिति को स्वीकार कर लिया है।

लगातार धूप में कठिन परिश्रम करने के कारण उसका शरीर साँवला हो चुका है। धूप में काम करने वाले सभी श्रमिकों के शरीर का रंग साँवला पड़ जाता है। वह स्त्री युवावस्था में थी और निरंतर श्रम करने के कारण उसका शरीर सुगठित था। अर्थात देह संरचना सुडौल और सुघड़ था। उसकी झुकी हुई आँखें कवि को सुंदर लगती हैं, क्योंकि वह सिर झुकाकर तल्लीन होकर मन से काम कर रही थी।

विशेष : कवि ने इलाहाबाद के पथ पर स्त्री को सड़क के किनारे पत्थर तोड़ते हुए देखा। उस समय स्वतंत्रता संग्राम में इलाहाबाद की अग्रणी भूमिका थी। स्त्री का पत्थर तोड़ना वस्तुतः परतंत्रता पर प्रहार करना है। यहाँ पर कवि ने इलाहाबद का नाम लेकर मानो यह कहना चाह रहे हो कि यह एक सच्ची घटना है और वह इस घटना का साक्षी है।

कवि ने सर्वनाम प्रयोग किया है। कविता में दो व्यक्ति हमारे सामने हैं। दोनों को यह कविता सर्वनाम प्रयोग के माध्यम से सामने लाती है - 'वह' (मजदूरनी) और 'मैं' (कवि)।

'वह' का प्रयोग पहली ही पंक्ति में मजदूर स्त्री के लिए हुआ है। कवि ने अपने लिए 'मैंने' का प्रयोग कविता की दूसरी पंक्ति में किया है - 'वह तोड़ती पत्थर/ देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर।' यहाँ कवि का मजदूरनी को देखने की क्रिया भूतकालिक है। यह प्रयोग शिल्प की दृष्टि से विशिष्ट है। कविता की बुनावट इस पर निर्भर है। देखने की क्रिया वस्तुतः वाक्य के अंत में आता है, लेकिन यहाँ कवि ने उसे आरंभ में प्रयोग किया है। 'देखा' को पहले रखने से देखने की स्थिति पर बल दिया गया है, उसके महत्व को निरूपित करने के लिए।

इसी प्रकार 'मैंने उसे' के स्थान पर 'उसे मैंने' का प्रयोग किया गया है। मैंने के पहले 'उसे' का प्रयोग मजदूर स्त्री की ओर इशारा करता है। अतः पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री की केंद्रीयता कविता के आरंभ से ही सिद्ध हो जाती है। यह पूरी कविता इसी स्त्री की विभिन्न मुद्राओं और मनोभावों से जुड़ी हुई है।

'वह तोड़ती पत्थर' पंक्ति की पुनरावृत्ति हुई है। आवृत्ती शैलीवैज्ञानिक तकनीक है। भरी दुपहरी में अर्थात प्रचंड गर्मी में निर्जन सड़क के किनारे बैठकर एक स्त्री पत्थर तोड़ रही है। वह पत्थर ही तोड़ रही है कुछ और नहीं। यह विचलन का सुंदर उदाहरण। यहाँ पत्थर तोड़ना जड़ व्यवस्था पर प्रहार करना भी है। एक अर्थ और भी है कि वह स्त्री अपने ही पत्थर-दिल को तोड़ने की कोशिश कर रही है। पाठक इस पाठ का अर्थ अपनी ग्रहण शक्ति के अनुरूप कर सकता है।

बोध प्रश्न

- कविता में 'वह' और 'मैं' के प्रयोग के संबंध में चर्चा कीजिए।
- 'श्याम तन, भर बँधा यौवन' में किस की बात कही जा रही है?
- 'देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर' - यहाँ कवि स्थान का नाम अंकित करके क्या निरूपित करना चाहते हैं?

गुरु हथौड़ा हाथ....
......वह तोड़ती पत्थर।

शब्दार्थ : गुरु = भारी, तरु-मालिका = पेड़ों की पंक्तियाँ, अट्टालिका = ऊँचे भवन, प्राकार = घेरा, दीवा = दिन, लू = तेज गरम हवा, भू = पृथ्वी, गर्द चिनगीं = चिंगारी जैसे धूल के कण

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'तोड़ती पत्थर' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : उक्त पक्तियों में कवि ने यह संकेत किया है कि मजदूर स्त्री बार-बार पत्थर पर प्रहार कर रही है।

व्याख्या : भारी हथौड़ा हाथ में लेकर वह मजदूरनी बार-बार पत्थर पर प्रहार कर रही थी। उसके सामने पेड़ों की पंक्तियों के समान ऊँचे-ऊँचे भवन खड़े हुए थे। उसके सामने एकदम संपन्नता झलक

रही थी, पर उसके सिर पर कोई छायादार पेड़ नहीं था। गर्मियों के दिन होने के कारण तेज धूप चढ़ रही थी। क्रोध की स्थिति में जिस तरह चहरा तमतमाता है, उसी तरह धूप के कारण दिन की छवि ऐसी ही नजर आ रही थी। गरम हवा ऐसे चल रही थी कि चेहरे पर लगते ही मानो चेहरे को झुलसा रही हो। चिंगारी की तरह हवा में उड़ता धूल कण भी गरम लग रहा था। जब वह शरीर पर सट जाता है तो ऐसा लगता है कि मानो चिंगारी ही शरीर को छू रही हो। इसी तरह समय गुजरता जा रहा था, लेकिन वह स्त्री तल्लीन होकर पत्थर तोड़ रही थी।

विशेष : 'गुरु हथौड़ा हाथ,/ करती बार-बार प्रहार' - ये पंक्तियाँ दो तरह से कविता के अर्थ को विस्तार करती हैं। भारी हथौड़ा लेकर वह स्त्री बार-बार पत्थर पर प्राहर कर रही है। इस क्रिया से मानो ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्त्री अपनी नियति पर प्रहार कर रही है। यह देखकर किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का मन पसीज उठना स्वाभाविक है। एक अर्थ में यह प्रहार संवेदनशील व्यक्ति के मन पर पड़ने वाला आघात है - जो बार-बार हो रहा है। यह पंक्ति सीधे 'तरु मालिका अट्टालिका प्राकार' से जाकर जुड़ती है।

दूसरे अर्थ में हथौड़े का प्रहार सामने निहित गगनचुंबी अट्टालिकाओं में रहने वालों पर भी पड़ रहा है। साथ ही यह पंक्ति सीधे जाकर 'कोई न छायादार पेड़ वह' पंक्ति से जुड़ जाती है और सघन अर्थ व्यक्त करती है।

एक ओर भरी गर्मी में बिना छाया के वृक्ष के नीच बैठकर मजदूरनी पत्थर तोड़ रही है और दूसरी ओर उसके सामने गगनचुंबी अट्टालिकाओं का प्राकार है। यहाँ 'कोई न छायादार पेड़ वह' का एक और अर्थ भी लगाया जा सकता है कि उस स्त्री को सहारा देनेवाला व्यक्ति/ मुखिया कोई नहीं है। अतः वह तनाव की स्थिति में है। तनाव की इस स्थिति में वह स्त्री बार-बार गुरु हथौड़ा लेकर पत्थर पर प्रहार कर रही है। मानो ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ मौन मुखरित हो उठा है। वह अपनी मौन आक्रोश व्यक्त कर रही है। यह द्वंद्व की स्थिति है। इन पंक्तियों से अनेक अर्थ ध्वनित होते हैं। यह पाठक पर निर्भर करता है कि वह इस पाठ का अर्थ किस प्रकार ग्रहण करता है।

'दीवा का तमतमाता रूप' कथन से आशय है कि वह मजदूर स्त्री पत्थर-दिल समान सामाजिक व्यवस्था के प्रति क्रोध से तमतमा रही है और उस पर अपना आक्रोश दिखा रही है। 'रुई ज्यों जलती हुई भू' में उत्प्रेक्षा अलंकार के माध्यम से अतिशयोक्ति का भाव अभिव्यक्त हुआ है।

बोध प्रश्न

- 'गुरु हथौड़ा हाथ,/ करती बार-बार प्रहार' - इन पंक्तियों को पढ़ते समय आपके मानसपटल पर किस प्रकार का बिंब अंकित हो रहा है?
- 'गर्द चिनगीं' का क्या अर्थ है?

देखते देखा मुझे तो एक बार............'मैं तोड़ती पत्थर।'

शब्दार्थ : छिन्नतार = उड़ती निगाहों से, सीकर = पसीना

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'तोड़ती पत्थर' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : उक्त पक्तियों में कवि जड़ व्यवस्था को तोड़ने की बात करते हैं।

व्याख्या : भरी दुपहर में गर्मी की परवाह किए बिना ही वह स्त्री लगातार पत्थर तोड़ रही है। संवेदना के साथ निरंतर उस स्त्री को कवि देखा रहा था। अचानक कवि को यह लगा कि उस स्त्री ने यह महसूस किया कि कवि उसे देख रहा है। उस स्त्री ने उड़ती निगाहों से कवि की ओर देखा और साथ ही उसके सामने उपस्थित अट्टालिका को एक बार देखा। कवि कहता है कि उस स्त्री ने उसकी ओर इस दृष्टि से देखा जो मार खाने के बाद न रोने के लिए विवश कर दी गई हो। अट्टालिका को देखने में उसके काम में थोड़ा-सा व्यवधान जरूर आया, लेकिन उसके मन में न ही दीनता का भाव था और न ही ईर्ष्या का। उसने कवि को ऐसी दृष्टि से देखा कि मानो उसने जिंदगी में आतंक को सहा, लेकिन कभी रोकर अपनी दीनता को प्रकट नहीं किया।

कवि कहते हैं कि सितार के बजने पर भी जो झंकार नहीं सुनाई दी, वह झंकार उस मजदूर स्त्री के श्रम और स्वाभिमान भरी दृष्टि से सुनाई पड़ी। पल भर के लिए उसका हाथ रुक जाने पर सुडौल युवती काँप उठी, उसके माथे से पसीने की कुछ बूँदें जमीन पर टपक पड़ीं। फिर से वह अपने काम में लग गई। उसके फिर से अपना काम प्रारंभ करने के अंदाज से कवि को यह लगा कि मानो वह कह रही है कि मैं पत्थर तोड़ रही हूँ।

विशेष : 'देखते देखा मुझे' – इस पंक्ति में देखने की क्रिया की आवृत्ती हुई है, जो की अनेक संदर्भों से जुड़ जाती है। स्त्री ने कवि को देखा और फिर गगनचुंबी अट्टालिका को देखा। इस तरह यह पंक्ति सीधे जाकर 'सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार' से जुड़ जाती है। 'उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार' कहकर कवि ने उस स्त्री की असहाय स्थिति को उजागर किया है। यहाँ पर एक और अर्थ पाठक लगा सकता है कि अपने काम में लीन होने के कारण उस स्त्री ने पहले कवि की ओर ध्यान नहीं दिया था। कवि को देखने के बाद अट्टालिका को देखने से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसने कवि को उस अट्टालिका का ही अंग मान लिया हो।

'जो मार खा रोयी नहीं' पंक्ति को जब हम 'कोई न छायादार पेड़' और 'सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्राकार' से जोड़कर देखेंगे तो यह अर्थ व्यंजित होता है कि वह स्त्री कठिन परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेकती, बल्कि अपने आपको मजबूत कर देती है और उसकी दृष्टि इतनी तीक्ष्ण है कि जिंदगी में अनेक तपेड़े खाने के बाद भी वह अपनी विवशता अथवा दीनता को किसी के सामने व्यक्त नहीं होने देती। यहाँ उसका स्वाभिमान द्रष्टव्य है। यह पंक्ति 'चढ़ रही थी धूप .... गर्द चिनगीं छा गईं प्रायः हुई दुपहर' से भी जुड़ जाती है। कहने का आशय है कि पूरी कविता की पंक्तियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

कवि ने 'वह तोड़ती पत्थर' से कविता की शुरुआत की थी। लेकिन अंत तक आते-आते 'मैं तोड़ती पत्थर' का प्रयोग किया है। कवि को मानो ऐसा लगा कि वह स्त्री उसको संबोधित करते हुए कह रही हैं कि 'मैं तोड़ती पत्थर'। यहाँ पाठक यह अर्थ लगा सकते हैं कि पत्थर संवेदनहीन

सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है और वह अकेली स्त्री उस व्यवस्था पर बार-बार प्रहार कर रही हैं। यहाँ अपराजेय भाव व्यंजित है।

यहाँ कवि को किसी भी प्रकार के संवादों का प्रयोग नहीं किया है, फिर भी यहाँ संवादात्मकता स्वतः व्यंजित है। पहले कवि मजदूरनी को देखता है। बाद में मजदूरनी कवि को देखती है और फिर अट्टालिका को। वह कवि की ओर स्वाभिमान और अपराजेयता के भाव से देखती है। यहाँ मौन मुखरित हो उठा है।

कवि सितार की झंकार की कल्पना करते हैं जो अप्रस्तुत है। यहाँ 'छिन्नतार' मजदूरनी का टूटा हुआ हृदय है। मजदूरनी का मौन संवाद मुखरित हो उठा है और कवि को ऐसा लगा कि वह उससे संवाद करते हुए कह रही हैं कि 'मैं इस सामाजिक अव्यवस्था पर आक्रोश से प्रहार कर रही हूँ।'

कविता की शुरुआत में प्रयुक्त 'वह' सर्वनाम सामान्य मजदूर स्त्री वर्ग के लिए है और कथन कवि का है। जबकि कविता के अंत में प्रयुक्त 'मैं' सर्वनाम ऐसे विशेष मजदूर स्त्री का द्योतक है जो सामाजिक विषमताओं के बारे में जानती हैं। उसे अपने कर्तव्य और लक्ष्य का ज्ञान है। प्रत्यक्ष रूप से तो वह स्त्री सड़क के किनारे बैठकर पत्थर तोड़ रही है, लेकिन एक अर्थ में परोक्ष रूप से वह सामाजिक विसंगतियों को सह रहे पत्थर रूपी अपने मन को तोड़ रही है। दूसरे अर्थ में वह पत्थर-दिल वाली सामाजिक व्यवस्था को तोड़ रही है। 'मैं' का प्रयोग आत्मविश्वास और स्वाभिमान को दर्शाता है। कविता की अंतिम पंक्ति 'मैं तोड़ती पत्थर' सीधे जाकर 'गुरु हथौड़ा हाथ, / करती बार-बार प्रहार-' से जुड़ जाती है।

मार खाने के बाद भी वह रोयी नहीं। लेकिन ऐसी दृष्टि से देखी कि कवि को एक तरह से अनुसुनी झंकार सुनाई पड़ी। देखने और झंकार सुनाई देने की क्रियाओं के बीच एक क्षण का अंतराल है। यह अंतराल सीधे जाकर 'एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर' वाली पंक्ति से जुड़ जाता है। यहाँ पर ध्यान देने की बात है कि यह गति भाव के साथ सामंजस्य स्थापित करने के कारण काव्य में अर्थ सौंदर्य अपने चरम पर पहुँच चुका है।

बोध प्रश्न

- लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-/ 'मैं तोड़ती पत्थर।' इन पंक्तियों से आप क्या समझ रहे हैं?
- देखा मुझे उस दृष्टि से/ जो मार खा रोयी नहीं - इस कथन से मजदूरनी के स्वभाव की कौन-सी विशेषता अभिव्यक्त हो रही है?
- कवि को ऐसा क्यों लगा कि वह स्त्री उनसे बात कर रही है?

(इ) अध्येय कविता : 'स्नेह निर्झर बह गया है'

स्नेह-निर्झर बह गया है!
स्नेह-निर्झर बह गया है!
रेत ज्यों तन रह गया है।

आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है - “अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते; पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ-
जीवन दह गया है।”

“दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल,
किया है अपनी प्रतिभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल-
ठाट जीवन का वही
जो ढह गया है।”

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को निरुपमा।
बह रही है हृदय पर केवल अमा;
मैं अलक्षित हूँ; यही
कवि कह गया है।

निर्देश : इन पंक्तियों का सस्वर वाचन कीजिए।
इस गीत का मौन वाचन कीजिए।

(ई) विस्तृत व्याख्या : ‘स्नेह निर्झर बह गया है’

स्नेह-निर्झर बह गया है!....
....जीवन दह गया है।”

शब्दार्थ : निर्झर = झरना, तन = शरीर, पिक = कोयल, शिखी = मोर, दह = व्यर्थ

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ कृत ‘स्नेह निर्झर बह गया’ कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि अपनी निराशा और हताशा को अभिव्यंजित करते हैं। कवि धरे-धीरे अपने प्रिय जनों को खोता हुआ अकेला हो चुका है। साहित्यिक जगत में भी उसकी उपेक्षा होने के कारण वह निराशा से भरा हुआ है।

व्याख्या : कवि का कहना है कि उसके जीवन में बहने वाला प्रेम रूपी झरना बह गया है। बहने के कारण सब कुछ सूख गया है। झरना जब सूख जाता है, वहाँ किनारे पर सिर्फ और सिर्फ रेत ही बचता है। अपने भीतर निहित प्राण तत्व के सूख जाने पर कवि को अपना शरीर निरर्थक प्रतीत होता है। उसका शरीर उसे प्राणहीन शुष्क रेत के समान लगता है। यहाँ पर कवि अपने जीवन की तुलना उस आम की डाली से करता है जो पूरी तरह सूख चुकी है। कवि को ऐसा लगता है कि जो सूखी आम की डाली उसे दिखाई दे रही है वह उससे कह रही हो कि अब मेरे निकट कोई कोयल

या मोर नहीं आते। मैं ऐसी पंक्ति के समान हूँ जो अर्थ विहीन है अर्थात निरर्थक है। कवि को अपना जीवन व्यर्थ लग रहा है।

विशेष : झरना रूपक है। यहाँ कवि अपने जीवन को तीन प्रतीकों अथवा बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पहला बिंब है निर्झर। कवि के भीतर निहित प्राण शक्ति झरने की तरह बह चुकी है और उसका शरीर सूखे रेत के समान लग रहा है। रेत का यह बिंब क्षणिकता, निस्सारता और आकर्षणशूनता का द्योतक है।

दूसरा बिंब है आम की डाली जो पूरी तरह से सूख चुकी है। सूखी आम की डाली पर न कोयल बैठता है और न ही मोर। कहने का आशय है कि कोयल हो या मोर हरी-भरी डाली पर ही बैठने के लिए पसंद करते हैं। इसी प्रकार लोग उसी व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमना पसंद करते हैं जिनसे उनका कोई प्रयोजन हो।

तीसरा बिंब वह पंक्ति है जो निरर्थक है। जो पूरी तरह से अर्थहीन है।

इन बिंबों के माध्यम से कवि निराला ने गहन निराशा, अकेलापन और निरर्थकता के भावों को अभिव्यक्त किया है। ‘स्नेह निर्झर बह गया’ वस्तुतः टूटती हुई, बिखरती हुई मनःस्थिति का उद्घोष है।

बोध प्रश्न

- कवि ने किन-किन बिंबों के माध्यम से निराशा, अकेलापन और निरर्थकता के भावों को व्यक्त किया है?
- ‘मैं वह हूँ लिखी/ नहीं जिसका अर्थ’ - इन पंक्तियों से आप क्या समझते हैं?
- कवि का जीवन रेत सी नीरस क्यों हो गया है?

“दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल.......
......जो ढह गया है।”

शब्दार्थ : प्रतिभा = विलक्षण बौद्धिक शक्ति, अनश्वर = जो नष्ट नहीं हो सकते, ठाट = चमक-दमक, ढह = नष्ट

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ कृत ‘स्नेह निर्झर बह गया’ कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि जीवन की असफलताओं के बावजूद उनकी रचना शक्ति जीवित है।

व्याख्या : सूखी हुई आम की डाल कह रहा है कि उसने संसार को अपना सब कुछ दिया है। ऐसा करके वह गौरवान्वित महसूस करती है। वह आगे कहती है कि उसने जीवन भर अपनी समृद्धि से संसार को चकित किया है और फल-फूल देकर ललचाया है। वे पल तो अविस्मरणीय हैं। वे अनश्वर हैं, अमर हैं। ऊपरी चमक-दमक तो नष्ट हो चुका है। जीवन का ठाट ढह गया। इस बिंब के माध्यम

से कवि यह कहना चाहते हैं कि उनके जीवन का ठाट भले ही नष्ट हो चुका हो, लेकिन उनके भीतर निहित सृजनशीलता अनश्वर है। व्यक्ति के भीतर निहित रचना शक्ति कभी नष्ट हो ही नहीं सकती। वह हर समय विकट परिस्थितियों में भी आशा की चिंगारी को सुलगाए रखती है।

विशेष : 'पल्लवित पल' के बाद प्रयुक्त '-' चिह्न रुकने की ओर संकेत करता है। पल्लवित पल के बाद कवि का रुकना सार्थक है क्योंकि अगले ही क्षण वह ढहने की बात करता है, विनाश की बात करता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कवि के आत्मगौरव को देखा जा सकता है, क्योंकि उनके भीतर की रचना शक्ति हर समय जीवित रहती है। 'फूल-फल' और 'चकित चल' में अनुप्रास अलंकार है।

बोध प्रश्न

- 'दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल,/ किया है अपनी प्रतिभा से चकित-चल' - इन पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
- कवि अपने आपको गौरवान्वित क्यों महसूस करता है?

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा.......
......कवि कह गया है।

शब्दार्थ : पुलिन = तट व नदी के किनारे, तृण = घास, निरुपमा = अद्वितीय, अमा = अमावास का अंधकार, अलक्षित = उपेक्षित

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'स्नेह निर्झर बह गया' कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : उक्त पंक्तियों में कवि की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या : कवि निराशा व्यक्त करते हुए कहता है कि अब कोई प्रियतमा अथवा प्रेयसी नदी के किनारे उनकी प्रतीक्षा नहीं करती। अब कोई भी कवि के इंतेजार में नहीं बैठे रहते। कोई भी अद्वितीय सुंदरी हरी-भारी घास पर बैठकर उनकी प्रतीक्षा नहीं करती। कवि मन निराशा से भरा हुआ है अतः उसे ऐसा लगना स्वाभाविक है कि उसके हृदय पर अमावस का अंधकार छाया हुआ है। वह अपने आपको पूरी तरह से उपेक्षित पाता है, जिसके कारण वह एकदम अपने आपको अकेला महसूस करता है। इसीलिए उसका मन सघन अंधकार में डूबा हुआ है।

विशेष : 'मैं अलक्षित हूँ' - कवि के मन की निराश स्थिति को व्यंजित करता है। यह पंक्ति 'दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल' पंक्ति से सीधे जाकर जुड़ती है। जिस कवि ने संसार को सब कुछ दिया अपनी रचनात्मक कर्म से जब उसकी उपेक्षा होती है तो उसका मन अपार पीड़ा से भर उठना स्वाभाविक है। कवि ने इस संसार को अपना सब कुछ निःसंकोच दे दिया, लेकिन यह संसार बदले में कवि को उपेक्षा, निराशा और अकेलापन उपहार के रूप में दिया। संसार के द्वारा दिए गए इन उपहारों के कारण ही कवि मन निराश है। सघन पीड़ा से त्रस्त है। इसीके कारण वह सर्वाधिक आहत है।

कवि का अकेलापन उसकी व्यथा का मूल कारण है। सामान्य रूप से अंधकार का प्रयोग छाने की क्रिया के साथ किया जाता है - अंधकार छा गया, लेकिन कवि ने यहाँ 'बह रही है हृदय पर केवल अमा' का प्रयोग किया है - उनके हृदय पर अंधकार बह रहा है। इसका अर्थ यह है कि अंधकार की परतें इतनी गहरी हैं कि वे पिघल कर बह रही हैं।

कवि ने इस पूरे गीत में विषाद, संतोष, निराशा, आत्मगौरव आदि विरोधी स्वरों को एक साथ प्रयोग किया है। जहाँ एक पल में वह आशा और आंदन से भरा हुआ प्रतीत होता है, वहीं दूसरे ही पल वह निराशा और पीड़ा से भरा हुआ दिखाई देता है। लेकिन वह कहीं भी अपने आत्मगौरव को नष्ट होने नहीं देता।

बोध प्रश्न

- कवि मन सघन अंधकार में क्यों डूबा हुआ है?
- कवि क्यों कहता हैं कि 'मैं अलक्षित हूँ?'

(उ) समीक्षात्मक अध्ययन

निराला छायावादी युग के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनके जीवन की युगीन परिस्थितियों को उनके साहित्य में भलीभाँति देखा जा सकता है। निराला अपने देश के प्रति प्रतिबद्ध हैं। इसीलिए वे कहते हैं कि 'क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा।' कवि अपने तन को बलिदान करके भारत माँ को स्वतंत्र करने की भावना रखते हैं। अपने भाई-बंधुओं को जगाते हुए जोर से गुहार लगाते हैं 'जागे एक बार फिर।' उनकी इस राष्ट्रीय भावना का आधार राजनैतिक नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक है। उन्होंने अपने समाज में व्याप्त सामाजिक रूढ़ियों पर बेबाक प्रहार किया है। उनकी कविता का प्रमुख स्रोत उनका व्यक्तिगत जीवन है। निराला का व्यक्तिगत जीवन जितना विराट है, उनका काव्य-जगत भी उतना ही विराट है। कहने का आशय है कि उनकी कविता का फलक बहुत ही विस्तृत है। अतः उनकी कविताओं में अनेक तरह के भावों को देखा जा सकता है।

अध्येय कविताओं - 'तोड़ती पत्थर' और 'स्नेह निर्झर बह गया' के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोनों कविताएँ उनके दो आयामों को व्यंजित करने में सफल हैं। 'तोड़ती पत्थर' में जहाँ कवि ने एक मजदूर स्त्री के माध्यम से उस परंपरागत जड़ व्यवस्था पर प्रहार किया है, वहीं 'स्नेह निर्झर बह गया' में अपने व्यक्तिगत जीवन में उपेक्षा के कारण व्याप्त निजी पीड़ा, अकेलापन, निराशा आदि को अभिव्यक्त किया है।

निराला आपबीती को जगबीती नहीं बनाते, बल्कि जगबीती को आपबीती बना लेते हैं, क्योंकि उनका कवि-मन अत्यंत संवेदनशील है। साहित्य जगत में निराला को 'महाप्राण' कहा जाता है। उनके महाप्राण होने की प्रामाणिकता उनके व्यंग्य और आक्रोश में मुखरित है। 'तोड़ती पत्थर' कविता में उन्होंने अपने आक्रोश को मजदूर स्त्री के माध्यम से व्यक्त किया है। कविता 'वह' से शुरू होकर 'मैं' पर आकार समाप्त होती है। सभी पंक्तियाँ अपने अलग-अलग अस्तित्व रखने के बावजूद सभी एक-दूसरे से मिलकर अर्थ व्यंजित करते हैं। यह कविता वस्तुतः छायावाद और प्रगतिवाद की संधि-स्थल पर रची हुई कविता है। इसमें कवि ने एक मजदूरनी के कर्म-कौशल तथा

उसके व्यक्तित्व को प्रकट किया है। निराला ने मजदूर स्त्री के शारीरिक वर्णन करते समय औदात्य को कहीं छोड़ा नहीं है। एक मजदूर स्त्री को काव्य का विषय बनाकर उसके माध्यम से विषम सामाजिक परिस्थितियों पर गुरु हथौड़ा लेकर बार-बार प्रहार करना इस ओर इशारा करता है कि कवि प्रगतिवादी विचारों से प्रभावित हो रहे हैं। 'तोड़ती पत्थर' हिंदी की पहली महत्वपूर्ण कविता है जिसमें एक मजदूर स्त्री को काव्य-वस्तु बनाया गया है।

प्रिय छात्रो! 'तोड़ती पत्थर' के संदर्भ में एक बात जानना आवश्यक है। इसमें कवि ने 'इलाहाबद' का प्रयोग किया है। उन्होंने इलाहाबाद के पथ पर एक स्त्री को पत्थर तोड़ते हुए देखा है। किसी भी जिज्ञासु पाठक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इलाहाबाद के पथ पर ही क्यों, किसी दिल्ली, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश या दक्षिण भारत के किसी भी स्थान पर क्यों नहीं देखा! इसके पीछे की पृष्ठभूमि को समझना अनिवार्य है। इलहाबाद के सड़क के किनारे वह स्त्री जहाँ पत्थर तोड़ रही है, वहीं उसके सामने अट्टालिकाएँ हैं - स्वराज्यभवन या आनंदभवन। यदि इस प्रकार हम सोचेंगे तो इस कविता कि अंतर्वस्तु बदल जाएगी। तब यह कविता साधारण प्रगतिशील कविता न होकर "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में चलनेवाले भारतीय स्वाधीनता-आंदोलन की आलोचना बन जाती है।" (नंदकिशोर नवल, निराला : कृति से साक्षात्कार, पृ. 508)। 'तोड़ती पत्थर' कविता स्त्री सशक्तीकरण का उत्तम उदाहरण है।

'तोड़ती पत्थर' में कवि ने साँवली स्त्री को इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ते हुए देखा। यह स्त्री अनवरत श्रम का प्रतीक है। वह श्रम में ही विश्वास रखती है। वह जो कार्य कर रही है, उसे पूरा करना ही उसका मुख्य ध्येय रहा। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह अपने काम से विमुख नहीं होती। आग बरसाती दुपहरी में थकान के बावजूद वह दुगनी जोश के साथ पत्थर तोड़ना शुरू कर देती है।

'स्नेह निर्झर बह गया' में कवि अपनी आंतरिक पीड़ा को व्यक्त करते ही हैं, लेकिन कहीं भी यह नहीं कहते कि वे परिस्थितियों के दास हैं। वे अपनी रचनात्मक शक्ति के कारण निराश क्षणों में भी आत्मविश्वास से भरे दिखाई देते हैं। यह बहुत ही कम लोगों में देखा जा सकता है। इसीलिए निराला 'महाप्राण' हैं।

इन भावों के अतिरिक्त उनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना, अद्वैत, परंपरा और आधुनिकता की टकराहट, सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं। प्रयोग के स्तर पर बात करें तो निराला अपनी कविताओं में लीक से हटकर शब्दों और उन शब्दों के साथ सहप्रयोगों में नवीनता का समावेश करते हैं। उदाहरण के लिए 'स्नेह निरझा बह गया' कविता में उन्होंने अंधकार के साथ बहना क्रिया का अद्‌भुत प्रयोग किया है। काव्य-सौंदर्य इस प्रयोग में ही निहित है।

निराला का कवि-मन अपने विचारों को भावों के रूप में बदलकर व्यक्त करता है। इसलिए उनके काव्य का मुख्य गुण - चित्रण - सच्चा होता है। इसीलिए पाठक उनकी कविताओं से संबंध जोड़ लेते हैं। उनके काव्य के संबंध में रामविलास शर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है - "निराला के

काव्य की विशेषता है, विरोधी तत्वों का संतुलन, उदात्त एवं अनुदात्त का समन्वय।" (रामविलास शर्मा, निराला, पृ. 131)। उनकी कविताओं में स्वाधीनता प्रेम अनेक नए रूपों में उपलब्ध है। उनके काव्य में उदात्त भाव विद्यमान है।

बोध प्रश्न

- निराला की कविता का मुख्य गुण अर्थात चित्रण कैसा होता है?
- 'तोड़ती पत्थर' में कवि ने क्यों कहा होगा कि उन्होंने इलाहाबाद के पथ पर स्त्री को पत्थर तोड़ते हुए देखा?

4.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य में निराला का महत्वपूर्ण स्थान है। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व निर्माण में तत्कालीन परिवेश की भूमिका उल्लेखनीय है। वे मनुष्यता के पक्षधर थे। इसीलिए वे कविता की मुक्ति और मनुष्य की मुक्ति को पर्याय मानते थे। उनकी रचना प्रक्रिया का स्रोत उनकी भावबोध है जो उनकी विचारधारा से संबद्ध है। निराला की रचनाओं का फलक विस्तृत है अतः उन्हें किसी कटघरे में बाँधा ही नहीं जा सकता। उनकी कविता का मुख्य स्वर है रूढ़ियों से मुक्त होने की प्रबल आकांक्षा। जहाँ 'तोड़ती पत्थर' कविता में कवि के जड़ सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार किया, वहीं 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता में अपने अकेलापन, निराशा और अवसाद की स्थिति को उजागर किया है। लेकिन कवि-मन में रचनात्मक शक्ति जीवित है। निराशा के क्षणों में भी वे आशावादी प्रतीत होते हैं।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' स्त्री सशक्तीकरण का उत्तम उदाहरण है। इस कविता में कवि ने मजदूर स्त्री के माध्यम से सामंतवादी व्यवस्था के विरुद्ध गरीब और मजदूर वर्ग की आवाज को बुलंद किया है।
2. निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' में स्त्री गुरु हथौड़ा लेकर बार-बार सामंतवादी मूल्यों पर चोट करती है। वास्तव में यह प्रहार कवि-मन कर रहा है।
3. 'तोड़ती पत्थर' में प्रयुक्त 'इलाहाबाद' के कारण यह कविता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में चलनेवाले भारतीय स्वाधीनता-आंदोलन की आलोचना बन जाती है।
4. 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता में कवि ने व्यक्तिगत जीवन में उपेक्षा के कारण व्याप्त निजी पीड़ा, अकेलापन, निराशा आदि को अभिव्यक्त किया है।
5. 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता के माध्यम से यह व्यक्त किया गया है कि जब व्यक्ति पूरी तरह से उपेक्षित होता है, तो वह अवसाद से ग्रस्त हो जाता है। उसे अपना समस्त जीवन निरर्थक लगने लगता है।

6. 'स्नेह निर्झर बह गया' में कवि ने मनःस्थिति को उजागर करने के लिए विरोधाभासों का प्रयोग किया है। शाश्वत हरियाली से सूखेपन का विरोधाभास मुखरित है।

4.6 शब्द संपदा

1. अवसाद = विषाद
2. आक्रोश = आवेश
3. आघात = चोट, प्रहार
4. आत्मानुभूति = आत्मबोध
5. उपेक्षित = तिरस्कृत
6. तनाव = खींचे होने की अवस्था
7. बेबाक = स्पष्टभाषी
8. विरोधाभास = विरोध का आभास
9. विवश = लाचार
10. व्यवधान = रुकावट
11. संपन्नता = संपन्न होने की अवस्था
12. सामंतवादी = जमींदारी

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने 'इलाहाबाद' का ही नाम लेने के पीछे क्या आशय है? कविता के केंद्रीय स्वर पर प्रकाश डालिए।
2. 'तोड़ती पत्थर' भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व में चलनेवाले भारतीय स्वाधीनता-आंदोलन की आलोचना है। इस कथन को उदाहरण सहित निरूपित कीजिए।
3. 'स्नेह निर्झर बह गया' कविता की प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डालिए।
4. 'स्नेह निर्झर बह गया' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
5. अध्येय कविताओं के आधार पर निराला के प्रमुख रचनाओं की विशेषताओं के बारे में बताइए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'तोडती पत्थर' कविता का आशय समझाइए।
2. 'तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने मजदूर स्त्री के माध्यम से सामंतवादी व्यवस्था के विरुद्ध किस प्रकार आवाज बुलंद की?
3. कवि को अपना जीवन क्यों व्यर्थ लग रहा है? 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता के हवाले स्पष्ट कीजिए।
4. 'स्नेह निर्झर बह गया' कविता के मूल भाव पर प्रकाश डालते हुए कविता का सारांश लिखिए।
5. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   वह तोड़ती पत्थर;
   देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
   वह तोड़ती पत्थर।
   कोई न छायादार
   पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
   श्याम तन, भर बंधा यौवन,
   नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन।
6. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   गुरु हथौड़ा हाथ,
   करती बार-बार प्रहार-
   सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।
7. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   देखते देखा मुझे तो एक बार
   उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
   देखकर कोई नहीं,
   देखा मुझे उस दृष्टि से
   जो मार खा रोयी नहीं।
   सजा सहज सितार,
   सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
8. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

   एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
   ढुलक माथे से गिरे सीकर,
   लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-

'मैं तोड़ती पत्थर।'

9. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है - "अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते; पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ-
जीवन दह गया है।"

10. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

"दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल,
किया है अपनी प्रतिभा से चकित-चल;
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल-
ठाट जीवन का वही
जो ढह गया है।"

11. **निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा,
श्याम तृण पर बैठने को निरुपमा।
बह रही है हृदय पर केवल अमा;
मैं अलक्षित हूँ; यही
कवि कह गया है।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. 'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने किसके माध्यम से शोषित वर्ग की विडंबनाओं का चित्रण किया है? ( )
   (अ) स्त्री (आ) मजदूर स्त्री (इ) शोषक स्त्री (ई) आभिजात्य स्त्री

2. 'जो मार खा रोयी नहीं' - में कौन सा भाव द्रष्टव्य है? ( )
   (अ) आत्मग्लानि (आ) निराशा (इ) स्वाभिमान (ई) बेईमानी

3. 'तोड़ती पत्थर' कविता में पत्थर किसका प्रतीक है? ( )
   (अ) सामाजिक व्यवस्था (आ) कवि हृदय (इ) स्त्री मानस (ई) शासन तंत्र

4. 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता में रेत किसका द्योतक है? ( )
   (अ) निस्सारता (आ) हरियाली (इ) समृद्धि (ई) निराशा

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. एक मजदूरनी को केंद्र में रखकर लिखी गई पहली हिंदी कविता .... है।
2. ‘स्नेह निर्झर बह गया’ वस्तुतः ... मनःस्थिति का उद्घोष है।
3. कवि की आत्मानुभूति का उत्तम उदाहरण .... कविता है।
4. ‘मैं तोड़ती पत्थर’ में ‘मैं’ का प्रयोग .... और .... को दर्शाता है।

III. सुमेल कीजिए

1. गुरु हथौड़ा हाथ	(अ) जो ढह गया है
2. सजा सहज सितार	(आ) नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन
3. ठाट जीवन का वही	(इ) बार-बार प्रहार
4. श्याम तन, भर बंधा यौवन	(ई) जो मार खा रोयी नहीं
5. देखा मुझे उस दृष्टि से	(उ) सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. क्रांतिकारी कवि निराला,बच्चन सिंह
2. निराला, रामविलास शर्मा
3. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा
4. निराला : कृति से साक्षात्कार, नंदकिशोर नवल
5. काव्य का देवता : निराला, विश्वंभर मानव
6. कवि निराला, नंददुलारे वाजपेयी

इकाई 5 : 'बिल्लेसुर बकरिहा' - कथासार और वैचारिकता

इकाई की रुपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूल पाठ : 'बिल्लेसुर बकरिहा' - कथासार और वैचारिकता

5.3.1 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास का कथासार

5.3.2 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास की वैचारिकता

5.3.3 ग्रामीण लोकसंस्कृति और समाजभाषिक संदर्भ

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

यथार्थवादी उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' के रचनाकार निराला हैं| 'रामविलास शर्मा' ने अपनी पुस्तक निराला की साहित्य साधना में इस उपन्यास को राम की शक्तिपूजा के एक विकल्प के रूप में देखा है| 'यह विधा कई दृष्टियों से आलोचकों को चुनौती देती है| इसे किस साहित्यिक विधा के अंतर्गत रखा जाय- स्कैच(रेखाचित्र), दीर्घकथा, पिकारेस्क नावेल या यथार्थवादी उपन्यास| 1941ई. की लिखी गई इस रचना में आंचलिकता के तत्व भरपूर हैं पर तब आंचलिकता शब्द का प्रयोग नहीं होता था; गाँव के चित्रण में निराला की दृष्टि प्रेमचंद की दृष्टि से भिन्न है; इसमें रूढ़ि-भंजन तथा परंपरा का विद्रोह है'(डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त)| कुसुम वार्ष्णेय इसके शिल्प को रेखाचित्र के अधिक निकट मानती हैं| निर्मल जिंदल के शब्दों में यह 'उपन्यासपरक रेखाचित्र' है| डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय इसे 'दीर्घकथा' कहते हैं पर बिल्लेसुर बकरिहा केवल दीर्घकथा नहीं है| इसमें औपन्यासिक तत्व मौजूद हैं| अपने इस यथार्थवादी उपन्यास को निराला ने स्वयं 'हास्य के लिए एक स्केच' की संज्ञा दी है तथा इसे प्रगतिशील साहित्य की श्रेणी में रखा है| यह कलाकार व प्रियबंधु अमृतलालनागर को उनके द्वारा दिया गया स्नेह भेंट है|

5.2 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थियों इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

- निराला की उपन्यास दृष्टि से परिचित हो सकेंगे|
- बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास के कथासार को समझ सकेंगे|
- इस उपन्यास की वैचारिकता को विश्लेषित कर सकेंगे|
- वर्ण आधारित समाज के यथार्थ को जान सकेंगे|
- उपन्यास की भाषागत विशिष्टता से अवगत हो सकेंगे|

5.3 मूल पाठ : 'बिल्लेसुर बकरिहा' - कथासार और वैचारिकता

5.3.1 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास का कथासार

पुरवा डिविजन के मुक्ताप्रसाद के चार लड़के थे| इनका देहांत जब हुआ तब ये चारो लड़के छोटे ही थे| बच्चों के लालन-पालन का दायित्व उनकी पत्नी ने ही पूरा किया| बिल्लेसुर चार भाई थे| इन चार भाइयों की दो टोलियाँ थी| एक तरफ मन्नी और बिल्लेसुर तथा दूसरी तरफ ललई और दुलारे| माँ ने गाँव-घर का काम करके इन्हें बड़ा किया| जीविका के लिए किसानी का काम सिखाकर स्वर्ग चली गई| माँ के जाने के बाद ये दो-दो की सनातनधर्मी और आर्यसमाजी जैसी टोलियाँ बिखर गई| वैष्णव और शाक्त तथा वैदिक और वितण्डावादी, बनकर ये अलग-अलग राग अलापने लगे| यानी चारो भाई अलग-थलग हो गए| मन्नी को उनके ब्याह न होने की चिंता खाए जा रही थी| तरी के सुकुल को कोई लड़की नहीं देता था| एक विधवा की बेटी से मन्नी ने ब्याह का मन बना लिया| लड़की ने अभी माँ का दूध छोड़ा ही था और मन्नी की उम्र तीस साल थी पर बताई 18-19 जाती थी| दस वर्ष बाद ब्याह होना था| एक हफ्ते बाद मन्नी विधवा और उसकी बेटी को लेकर अपने गाँव आ गया| गाँव में जमींदार की फसल को तथा गाँव के अन्य बागानों को अपना बताकर अपने मालदार होने का अहसास अपनी सास को दिला दिया| साथ ही जमींदार की हवेली को भी अपना बता दिया लेकिन वहां ठहर नहीं सकते क्योंकि भाइयों द्वारा भावी सास का अपमान हो सकता है| एक रात मन्नी अपनी भावी पत्नी को लेकर सास को सोता छोड़कर घर से चले गए|

ललई कलकत्ता और मुंबई घूमने के बाद रतलाम में रहे| वहां एक गुजराती ब्राह्मण के परिवार से इनकी मित्रता हुई| मित्र के निधन के बाद उनके संपन्न परिवार को इन्होने अपना परिवार बना लिया| पत्नी, दो बेटे और बड़े बेटे की वधू के साथ ये गाँव आए| गांववालों ने इनका पान-पानी बंद कर दिया| पर इनके निर्विकार रवैये के आगे उन्हें झुकना पड़ा| 'ललई की लाली के आगे उनका असहयोग न टिका| ललई राजनीतिक, सुधारक और सामाजिक आदमी हैं|'

दुलारे आर्यसमाजी थे| इन्होने बस्तीदीन सुकुल की विधवा से विवाह किया| विवाह के लिए इनका तर्क था, 'पति के रहने पर भी तीन साल या तीन महीने खबर न लेने पर पत्नी को दूसरा पति चुनने का अधिकार है|' बस्तीदीन सुकुल की मृत्यु के बाद इन्हें तीसरे पति के निर्वाचन

की स्वतंत्रता है| साल भर बाद दुलारे भी नहीं रहे| इनकी सन्तान (पत्नी की देहांत के बाद) ललई के दरवाजे पर नारद की तरह बैठकर खेलता है|

'बिल्लेसुर में 'बिल' और 'ईश्वर' दोनों का भाव साथ-साथ रहा|' बंगाल का पैसा टिकता है मुंबई का नहीं, ऐसा जानकर ये पं. सत्तीदीन सुकुल के यहाँ बर्दवान पहुँचे| गरीब भाव से वहीं रहने लगे| घर का काम कर लेते और दो वक्त का भोजन मिल जाता| एक जगह उन्हें काम पर भी लगा दिया गया| 'बिल्लेसुर खुराक और चार-पाँच रुपए का महीना सोचकर अपने घनत्व को दबा रहे थे|' तहसील के जमादार के भरोसे गुमाश्तों के नाम तहसील की चिट्ठियाँ पहुँचाने का काम इन्हें मिल गया| पहले कम दूरी की चिट्ठियाँ मिलती थी बाद में आग्रह करने पर दूनी दूरी की चिट्ठियाँ मिलने लगीं| इससे महीना बढा साथ ही सत्तीदीन की स्त्री के ताने भी| इनके मन में विचार आता कि मर्द होने से औरत होना अच्छा है| 'बिल्लेसुर दूसरे का अविश्वास करते-करते एक खास शक्ल के बन गए थे| पर अपना बल न छोड़ा था|' एक दिन जमादार को खुश देखकर उसने नौकरी की बात छेड़ी| अगले दिन नापी थी| बहुत जुगाड़ के बाद भी लंबाई में डेढ़ इंच की कसर रह गई| जमादार ने दिलासा देते हुए कहा कि तुम नौकर नहीं हो सकते लेकिन कोई-न-कोई सिपाही छुट्टी पर रहता है, जगह तुम्हे मिलती रहेगी और बिना छुट्टीवालों की तनख्वाह भी|' यह भी तरक्की ही थी| इसके बाद सत्तीदीन पत्नी के आग्रह पर जगन्नाथपुरी जाने का कार्यक्रम तय करते हैं| मार्ग में उन्हें एक नौकर की आवश्यकता पड़ती सो बिल्लेसुर को भी साथ ले लेते हैं| जगन्नाथपुरी में समुद्र का किनारा भी रोमांचप्रद था| कानपुर से बर्दवान तक ऐसा नजारा कहीं देखने को नहीं मिला था| वहां बिल्लेसुर ने और भी बहुत कुछ देखा- वटकृष्ण, चंदन तालाब, मार्कंडेय, मंदिर के अहाते के छोटे-छोटे मंदिर, एकादशी का उल्टा टंगा होना, कलियुग की मूर्ति बीबी को कंधे पर बैठाए, बाप को पैदल चला रहा है| जगन्नाथ जी में जूठा खाना प्रचलित है| इस आधार पर बिल्लेसुर अपने पत्तल का जूठा भात सत्तीदीन के पत्तल में डाल देते हैं और वे बुरा नहीं मानते|

वहां सत्तीदीन से बिल्लेसुर (स्वप्न में तीन सिर वाले, आग में बैठे ईश्वर के आदेशानुसार) गुरुमंत्र लेता है| सत्तीदीन की स्त्री भी गुरुमंत्र लेना चाहती है पर पंडा उसे बताता है कि यह चौथेपन में लेना लाभप्रद है| भुवनेश्वर जाने की तैयारी हुई| वहां से बर्दवान वापस आए| न घी का दीया जलाने से सत्तीदीन की स्त्री की स्थिति सुधरी और न ही गुरुमंत्र लेने से बिल्लेसुर की| बिल्लेसुर गुरु को गायत्री मंत्र वापस देकर अपने गाँव लौट आया| गाँव में एक दिन त्रिलोचन ने पूछा 'यहीं रहना है कि लौट जाना है| यहीं रहना है तो काम क्या करोगे? काम न करने से गांववाले ही पुलिस की लिस्ट में बदमाशी में नाम दे देंगे|' बिना लोगों की परवाह किए, बकरी पालने का काम करने की सोचकर बिल्लेसुर बकरी ले आए| एक दिन 'रामदीन मिले, कहा, "ब्राह्मण होकर बकरी पालोगे? लेकिन, हैं बड़ी अच्छी बकरियाँ, खूब दूध देंगी, अब दो साल में बकरी-बकरों से घर भर जाएगा| आमदनी काफी होगी|"

गाँव आकर उसने बकरी पाली और किसानी की| बरसातवाली किसानी में मेहनत कम थी| उसने शकरकंद की खेती की| गाँव में एक घर रहने के लिए ले लिया| अब उसकी गिनती गाँव के धनी लोगों में होने लगी| एक त्रासदी उसके साथ घटी कि उसका पट्ठा दिनवा बच्चों की शैतानी का

शिकार होकर मारा गया| त्रिलोचन के मार्फत उसे विवाह का प्रस्ताव मिला| त्रिलोचन की ठगी से आस-पास के गाँव के लोग भी वाकिफ थे सो बिल्लेसुर ने उसके प्रस्ताव को मना कर दिया, यह कहकर कि कहीं और रिश्ता ठीक हो गया है| उसकी नाराजगी पर जवाब दिया, “और तुम्हारा दूध का धोया है? मन्नी की मौसिया सास की भतीजी की ससुराल की लड़की में दाग है, और तुम्हारी में, जिसके न बाप का पता, न माँ का, न संबंध का, मखमल का झब्बा लगा है?” मन्नी की सास को प्रभावित करने के लिए बिल्लेसुर अगरासन निकालना भी नहीं भूलते थे| गाँव जाकर लड़की भी देख ली| चेहरा ही नहीं देख सके| डोम, परजा, नाई, कहार, बेहना, चमार, चौकीदार सभी बिल्लेसुर के पास जाकर वैवाहिक रीति के अनुरूप उनकी आवश्यकता की पूर्ति करने लगे| गंगावासी जनेऊ दे गए| भट्ट जी सीता स्वयंवर के कवित्त सुना गए| जमींदार भी बिल्लेसुर के घर आए| इससे बिल्लेसुर की इज्जत और बढ़ गई| मन्नी का ससुराल गोवर्द्धनपुर था| वहीँ बारात ले जाकर बिल्लेसुर ने ब्याह किया| जीते-जी अपने धनी होने का राज न खुलने दिया|

बोध प्रश्न

- ‘हिंदी भाषा-साहित्य में रस का अकाल है, पर हिंदी बोलनेवालों में नहीं; उनके जीवन में रस की गंगा-जमुना बहती है; बीसवीं सदी साहित्य की धारा उनके पुराने जीवन में मिलती है|...बिल्लेसुर चार भाई आधुनिक साहित्य के चारों चरण पूरे कर देते हैं|’ उक्त पंक्ति का निहितार्थ बताइए|

5.3.2 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ उपन्यास की वैचारिकता

वर्ण आधारित रोजगार व्यवस्था का विरोध : बिल्लेसुर जाति के ब्राह्मण, ‘तरी’ के सुकुल हैं, खेमेवाले के पुत्र खैयाम की तरह किसी बकरीवाले के पुत्र बकरिहा नहीं| कान्यकुब्ज वंशावली में भरद्वाज गोत्र के वृत्तांत के अंतर्गत वर्णन है कि श्रीब्रह्मा के पुत्र अंगिरा, अंगिरा के पुत्र बृहस्पति, बृहस्पति के भरद्वाज, भरद्वाज के कुल में अश्वत्थामा हुए जो पांडे कहलाए| इनके वंश में ही सत्याधर और बामदेव परम प्रवीण हुए जो तरी के शुक्ल कहलाए| पैकू के चार पुत्र बेनीराम, लक्ष्मीराम, चतुर्भुज, बिगहपुरी पैकू के शुक्ल, विश्वनाथ निबई में बसे और पैकू के शुक्ल कहाए|’ सत्तीदीन पैकू के सुकुल थे| बर्दवान महाराज के यहाँ खजांची का काम करते थे| बिल्लेसुर रोजगार की आशा से इनकी शरण में ही गए| इनका विश्वास सत्तीदीन के प्रति उतना ही तगड़ा था जितना सत्तीदीन की स्त्री का प्रभु जगन्नाथ के प्रति| दोनों का ही भरोसा टूटता है| बिल्लेसुर को गुरु का चेला बनकर जीने से अधिक अच्छा लगा अपने देश वापस लौट आना|

बिल्लेसुर अपने गाँव आ गए| गाँववालों का मन बिल्लेसुर की अहित की भावनाओं से भरा हुआ था| उनकी तीव्र इच्छा थी कि बिल्लेसुर रुपयों से हाथ धो लें| त्रिलोचन उसके मन की टोह लेने के लिए उससे मिलता है| पहले वह कहता है किसानी कर लेगा| पटवारी से तीन बकरी खरीद लाता है| बकरी के व्यवसाय को अपनाने के पीछे उसका तर्क है कि तरी के सुकुल को संसार पार करने की तरी नहीं मिली तब बकरी पालने का कारोबार किया| इस बकरी पालने के समर्थन में

बिल्लेसुर का तर्क है,“जब जरुरत पर ब्राह्मणों को हल की मूठ पकड़नी पड़ी है, जूते की दूकान खोलनी पड़ी है, तब बकरी पालना कौन बुरा काम है|”

यह स्पष्ट है कि रोजगार जीवनयापन का साधन है अतः किसी भी जाति का व्यक्ति कोई भी रोजगार अपना सकता है| पहले यह निश्चित था कि नाई ही बाल बनाएगा या हजामत करेगा तथा वैवाहिक अवसर पर न्योता देने जाएगा| ब्राह्मण पूजा-पाठ और कर्मकांड ही करेंगे| परन्तु इस उपन्यास में आपने देखा कि ब्राह्मण बकरी पाल रहा है, खेती कर रहा है, चिट्ठियाँ पहुंचा रहा है, दूसरे के घर में टहल-चाकरी कर रहा है; अतः यह उपन्यास वर्ण आधारित रुढियों को तोड़ता है|

स्त्री और समाज : बिल्लेसुर की माँ अपने परिवार की केंद्र थी| उन्होंने अपनी संतानों को पालने के लिए कई तरह के काम किए, जैसे- पीसना, कंडे पाथना, चौका-टहल करना, ढोर छोड़कर, आम-महुआ बीनना इत्यादि| बच्चों को किसानी का काम सिखाकर स्वर्ग सिधार गई| समाज में स्त्री के कई रूप हैं| मन्नू वाजपेयी की लड़की अपने प्रेमी के कहने पर अपने पति को जहर दे देती है|

सकरात्मता और नकारात्मकता का मिलाजुला स्वरूप सत्तीदीन की स्त्री में नजर आता है| बिल्लेसुर के प्रति आरंभिक 2-3 दिन अच्छा व्यवहार करने के बाद अचानक उसके व्यवहार में परिवर्तन आता है| भले स्वर में ही वह अपने चरवाहे के प्रति बिल्लेसुर से कहती है, “हराम का पैसा खाता है| कोई काम है? घास खड़ी है, दो बोझ काट लानी है; नहीं, पैरे की बंधी मूठें हैं- यहाँ-वहां का जैसा धान का पैरा नहीं- बड़ा-बड़ा क़तर देता है और थोड़ी सी सानी कर देनी है| देश में जैसे डंडा लिए यहाँ ढोरों के पीछे नहीं पड़ा रहना पड़ता, लंबी-लंबी रस्सियाँ हैं, तीन गायें हैं, घास खड़ी है, बस ले गए और खूंटा गाड़कर बाँध दिया, गायें चरती रहीं, शाम को बाबू की तरह टहलते हुए गए और ले आए, दूध दुह लिया, रात को मच्छड़ लगते हैं गीले पैरे का धुँआ दे दिया; कहने में तो देर भी लगी|” कामों की यह लंबी लिस्ट पलक झपकते पूरी की जा सकती है| मानो आगंतुक व्यक्ति नहीं, जिन्न हो| किसी बाहरी व्यक्ति का भोजन दूसरे-तीसरे दिन ही स्त्री को अखर गया| स्त्री जिसे अन्नपूर्णा कहकर महिमामंडित किया जाता है उसके कई रूप हो सकते हैं| उसे प्रतिदान की इच्छा रखती हुई यहाँ दिखाया गया है| उसके स्वर में उलाहना है जो बिल्लेसुर के प्रति उसके भावी व्यवहार में प्रताड़ना की संलग्नता के सूचक हैं|

गरीब स्त्री से विवाह करने के लिए वर पक्ष द्वारा उसके परिवार को विवाह का खर्च देने का भी रिवाज था| इस उपन्यास के माध्यम से समाज में स्त्री अकेले और स्वतंत्र रूप से भी जीवनयापन करती दिखाई गई है|

प्रगतिशील को कौन रोक सकता है : बिल्लेसुर बोलशेविज्म विचारधारा से अनभिज्ञ थे पर जीवनधारा को सुसंचालित करने के लिए कृतसंकल्प थे| इसका पहला पायदान बर्दवान की ओर उनकी बेटिकट ट्रेन यात्रा थी| इलाहाबाद और मोगलसरय में दो बार उतारे गए पर अंततः गंतव्य पर पहुँच गए| ‘बिल्लेसुर हिंदुस्तान के कानून के अनुसार सविनय कानून भंग कर रहे थे, कुछ बोले नहीं, चुपचाप कानून भंग कर रहे थे, कुछ बोले नहीं, चुपचाप उतर आए; लेकिन सिद्धांत नहीं

छोड़ा|' बर्दवान पहुंचे रोजगार किया और जी उचट जाने पर अपने गाँव की ओर रुख किया| बकरीपालन और शकरकंद और मटर की खेती से धन भी कमाया और प्रतिष्ठा भी प्राप्त की|

ग्रामीणों का असहयोग : परिवर्तन और प्रगति का पथ आसान नहीं होता| उपन्यास में वर्णित गाँववालों की असहयोग की भावना इसका उदाहरण है| चाहे वह ललई का प्रसंग हो या बिल्लेसुर का| 'गाँववालों की दृष्टि ललई पहले ही समझ चुके थे, जानते थे जिसपर पड़ती है उसका जल्दी निस्तार नहीं होता, इसलिए निस्तार की आशा छोड़कर ही आए थे| गाँववालों ने ललई का पान-पानी बंद किया| ललई ने सोचा एक खर्च बचा|..ललई की लाली के आगे उनका असहयोग न टिका| अब मिलने की बातें कर रहे हैं|'

गाँव के लड़के भी बिल्लेसुर को परेशान करने के लिए उनकी बकरियों को भगाने का तिकड़म भिड़ाते हैं| खदेड़कर बकरियों को नाले में कर दिया जाए फिर पासी को खबर कर दी जाए ताकि कुछ मांस हमें भी मिल जाए| किसी ने कहा गाभिन है, क्या फायदा? बिल्लेसुर को बकरियाँ मिले-न-मिले, हमें क्या!

बिल्लेसुर का ध्यान भटकाने के लिए बच्चे उन्हें खेलने के लिए बुलाते हैं,

बच्चे : "काका आओ कुछ खेला जाए|"

बिल्लेसुर : "अपने बाप को बुला लाओ तुम क्या हमारे साथ खेलोगे?"

बच्चे : 'अच्छा काका न खेलो, परदेस गए थे वहां के कुछ हाल सुनाओ|"

बिल्लेसुर : "बिना अपने मरे कोई सरग नहीं देखता|"

अपना घर टूटा था और बकरियों की गंध से भाइयों को ऐतराज होता इसलिए एक घर 16 आने नजर देकर ले लिया| बढ़ते समय के साथ भाइयों को भी अपनेपन से ऐतराज होने लगता है|

विवाद काम में विघ्न पैदा करता है: आपसी विवाद से एकजुटता में कमी आती है| बिल्लेसुर चारो भाइयों में उनकी माँ की मृत्यु के बाद विवाद उत्पन्न हुआ| विचारधारा संबंधी अपने विवाद में चारो भाई एक-दूसरे से बिलकुल अलग हो गए| यह उनकी उन्नति में बाधक हुआ|

बाहरी आदमियों में रहना अच्छा नहीं: मन्नी की भावी सास का कथन है कि बाहरी आदमियों में रहना अच्छा नहीं है| अपनों के संग नमक-रोटी भी पकवान का स्वाद देती है क्योंकि वहां अपनेपन का संचार होता है| ऐसे ही बिल्लेसुर को भी बहुत दिनों बाद अपने गाँव लौटने की इच्छा हुई| उन्होंने ठाना कि 'देश चलकर रहेंगे, जमींदार की गुलामी से गुरु की गुलामी सख्त है, यहाँ से वहां की आबोहवा अच्छी, अपने आदमी बोलने-बतलाने के लिए हैं, अब यहाँ नहीं रहेंगे|' व्यक्ति अपना देश कुछ काम-धंधा करने के उद्देश्य से ही छोड़ता है| देश में ही रोजगार के साधन मिल जाएँ तो कोई बाहर क्यों जाएगा? गाँव आने के बाद बिल्लेसुर ने कुछ नजराना देकर जो घर रहने के लिए लिया, उसका मालिक अभी परदेश में था| उसका स्पष्ट विचार था कि देश की दीनता के कारण ही आदमी परदेस का रुख करता है|

बिना गृहिणी के भूत घर में डेरा डालते हैं: इस लोक के लिए भी और परलोक के लिए भी विवाह आवश्यक है| मन्नी के मामले में 'एक जगह लासा लग गया| कहना न होगा कि ऐसे विवाह में अत्युक्ति ही प्रधान होती है|' एक छोटी बच्ची जिसे दस-बारह साल पालने के बाद विवाह संभव हो सकता था, को लेकर मन्नी अपने गाँव आए| गाँव में जमींदार की हवेली, खेत-खलिहान, बाग़-बगीचे सबको अपनी भावी सास के समक्ष अपना बताता रहा| इस धनाढ्यता का रोब झाड़ने के पीछे उसकी मंशा केवल विवाह के निमित्त अपनी सास को भरोसे में लेने तक सीमित थी| भांग मिले दूध-शक्कर, पूड़ी-तरकारी सब खिलाकर आधी रात में उन्हें सोता छोड़कर अपनी भावी पत्नी के साथ सात कोस दूर किसी रिश्तेदार के यहाँ चले गए| शुभ मुहूर्त में विवाह किया| 20 वर्ष की पत्नी की गोद में एक कन्या छोड़कर स्वर्ग सिधार गए|

स्पष्ट है कि तब समाज में अनमेल विवाह, विधवा विवाह और बाल विवाह प्रचलित था| सत्तीदीन ने भी दूसरा विवाह किया था| न सिर्फ पुरुष बल्कि स्त्री भी दूसरा विवाह कर सकती थी कारण कि एकाकी जीवन गृहिणी के लिए भी असह्य था|

आस्था – ग्रामीण समाज में जीवन का मर्म है आस्था| आस्था सजीव की सजीव के प्रति भी हो सकती है और सजीव की निर्जीव के प्रति भी| बिल्लेसुर की आस्था भगवान झाड़खंडेश्वर के प्रति थी| महावीर जी के प्रति भी थी| अपनी बकरियों की भेड़ियों से रक्षा के लिए वे महावीर जी के चरण छूते थे| दिनवा की मौत के बाद उन्होंने उनकी उलटी प्रदक्षिणा करली| उन्हें खाड़ी-खोटी सुनाते हुए उनपर डंडे से वार कर दिया| आस्था टूटती हुई दिखाई दे रही है| गुरुमंत्र के प्रति उनकी आस्था का भी यही हाल हुआ| सत्तीदीन की स्त्री ने साल भर घी का दीया जलाने का संकल्प लिया| सन्तान की लालसा से जगन्नाथ भगवान का दर्शन भी उन्होंने किया| पर फल न मिलने से यहाँ भी आस्था खंडित हुई| एक तरह से इस उपन्यास के माध्यम से रूढ़-परंपराओं के अस्तित्व को खंडित करने का प्रयास दिखाई देता है| जगन्नाथपुरी में एकादशी का उल्टा टंगा होना, इस बात का संकेत है कि यहाँ कोई एकादशी नहीं कर सकता| वहां जूठा खाना भी प्रचलित है|

विपरीत परिस्थिति में मनःस्थिति का चित्रण : बकरा दिनवा के खो जाने पर उदास और हताहत बिल्लेसुर के रोते हुए मन में अनेक चिंताएं घिरी थीं| जैसे मन में घनघोर अँधेरा था वैसे ही आस-पास भी रात का अँधेरा घिर रहा था और हर घटना व स्थिति मौत के अधिक निकट जाती हुई दिखाई दे रही थी - 'आज बकरियाँ भूखी हैं| शाम हो आई है, चराने का वक्त नहीं| लग्गा नहीं, पत्तियाँ नहीं काटी; रात को भी भूखी रहेंगी| इस तरह कैसे निबाह होगा? बिना खाए सबेरे दूध न होगा| बच्चे भूखे रहेंगे| दुबले पड़ जाएँगे| बीमारी भी जकड़ सकती है| चोकर रक्खा है| लेकिन उतनी बकरियों और बच्चों को क्या होगा? रात को पेड़ छाँटना पड़ेगा|

सूरज डूब गया| बिल्लेसुर की आँखों में शाम की उदासी छा गई| दिशाएँ हवा के साथ सायं-सायं करने लगी| नाला बहा जा रहा था जैसे मौत का पैगाम हो| लोग खेत जोतकर धीरे-धीरे लौट रहे थे, जैसे घर की दाढ़ के नीचे दबकर, पिसकर मरने के लिए| चिड़ियाँ चहक रही थी, अपने-

अपने घोंसले की डाल पर बैठी हुई, रो रोकर साफ़ कह रही थी, रात को घोंसले में जंगली बिल्ले से हमें कौन बचाएगा?'

मन्नी जब अपनी सास को अकेला छोड़कर, उन्हें बिना बताए चला गया था तब उनकी आत्मा में भी इतना ही कचोट आया होगा जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप उनके मुख से मन्नी के लिए शाप निकला| हां उम्र के आखिरी चरण में बिल्लेसुर और वह माँ एक-दूसरे का सहारा बन गए| उन्हें माँ का दर्जा देते हुए बिल्लेसुर ने कहा, "तुम धर्म की माँ हो, जन्म देनेवाली माँ, पाप की माँ होती है|"

बोध प्रश्न

- ऐसी हालत में गरीब की तहजीब जैसी, दबे पाँव, पेट खलाए, रीड झुकाए, आँखें नीची किए आते-जाते रहे| उक्त पंक्ति की व्याख्या करें|

5.3.3 ग्रामीण लोकसंस्कृति और समाजभाषिक संदर्भ

हर ग्रामीण समाज में अपनी विशिष्ट लोकरीति होती है जिसे उस गाँव की संस्कृति के नाम से परिभाषित कर सकते हैं| इसका संबंध वहाँ के वासी के आचार-विचार और व्यवहार से होता है| मनुष्य के जन्म से मृत्युपर्यंत इन लोकरीतियों का निर्वाह किया जाता है| बिल्लेसुर के विवाह का वर्णन विस्तार से किया गया है| गाँव के सभी लोग इसमें उल्लसित होकर सहयोग दे रहे हैं| डोम, परजा, नाई, कहार, बेहना, चमार, चौकीदार, दर्जी, तेली, काछी, तम्बोली सभी अपने-अपने हिस्से का काम निपटा रहे हैं| ये सभी विवाह में नेग के हकदार होते हैं| चौधरी की विधवा ने अपना घर दे दिया नातेदारों के ठहरने के लिए| विवाह के गहने अपने लिए महाजन से उधार लिया और भावी पत्नी के लिए चोरों से खरीद कर, किफायत कर लिया| 'तेल के दिन डोमों के विकट वाद्य से गाँव गूंज उठा|' पड़ोस के गाँव के जमींदार ने ब्याह के लिए जाने के लिए अपना घोड़ा ले जाने को कहा तो बिल्लेसुर का जवाब था, "हम गरीब ब्राह्मण हैं, ब्राह्मण की तरह ही जाएँगे|" ठाकुर साहब यह सोचकर मुस्कुराएँ कि खुलना नहीं चाहता| मातृपूजन के दूसरे दिन बारात चली| कुआँ पूजा गया| दूध बिल्लेसुर की एक चाची ने पिलाया| पैर लटकाए देर तक कुएँ की जगत पर अड़ी बैठी रही| पूछने पर कहा, "सोने की एक ईंट लेंगे|....बिल्लेसुर ने कहा, "चाची यहाँ तो निहत्था हूँ, पैर निकालो, तुम्हें ईंट ही दूंगा| चाची खुश हो गईं और गाँववालों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी|"बारात निकली| अगवानी, द्वारचार, ब्याह, भात, छोटा-बड़ा आहार, बरतौनी, चतुर्थी कुल अनुष्ठान पूरे किए गए| मान्य कुल मिलाकर पाँच| बाकी कहार, बाजदार, भैय्याचार| चार दिन के बाद दुल्हन को लेकर घर लौटे|" विवाह की भांति ही नामकरण संस्कार भी लोकजीवन में खास महत्व रखता है| आगे समाजभाषिक संदर्भ के अंतर्गत नामकरण की चर्चा की जा रही है, देखें-

धर्म-संस्कृति आधारित नामकरण : 'विल्वेश्वर' शब्द का लोकप्रचलित स्वरूप बिल्लेसुर है|

लोकमत : पुरवा में बिल्लेसुर नाम के प्रतिष्ठित शिव हैं 'विल्वेश्वर'| इसलिए इसे निराला ने भाषातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना है| यह शब्द बोल-चाल की भाषा के करीब और संस्कृति के गौरव से परिपूर्ण है|

संबंध आधारित नामकरण : खैयाम – खेमेवाले का पुत्र, बकरिहा – बकरीवाले का पुत्र, काका- पिता का भाई, आजी- दादी|

गुण आधारित नामकरण : मन्नी - (गपुआ, गप्पू)- गर्दन उठाकर बैठा झपकता बच्चा

ललई- (भर्रा, भूरु)- कंजलोचन आँखें और गोराई का रोयों में निखर जाना

बिल्लेसुर- (बिलुआ, बिल्लू), दुलारे- (कटुआ, कट्टू)- भगवान के घर से ही खतना कराकर आए थे|

इर्ष्या आधारित नामकरण : बकरिहा (बिल्लेसुर का गाँववालों द्वारा किया गया नामकरण)| बकरीवाले के पुत्र को 'बकरिहा' कहा जाता है| इस शब्द में 'हा' का प्रयोग हनन के अर्थ में नहीं है| निराला ने उसका हिंदुस्तानी रूप निकालते हुए 'हा' शब्द का प्रयोग पालन के अर्थ में देखा है| यह जिस पूर्वी डिविजन का शब्द है, वहाँ बकरी को 'बोकरी' कहते हैं| बकरीपालन के रोजगार को अपनाने के कारण गांववालों ने इन्हें बकरिहा कहा, कुछ अपने दिल का गुबार निकालने के लिए भी|

इसके उत्तर में बिल्लेसुर ने गाँववालों के नाम पर अपनी बकरियों का नाम रखना शुरू किया- गंगा, जमुना, सरजू, पारवती, सेखाइन, गुलबिया, सितबिया, रमुआ, स्यमुआ, भगवतिया, परभुआ, टुरुई, दिनवा इत्यादि|

लोकबोली : पुरवा (पूर्वी), रब्बी, आजी, काका, धींगर (बदमाश व्यक्ति), रपोट (रिपोर्ट), अगरासन (भोजन से पूर्व एक ग्रास निकालना), ढोर (मवेशी) इत्यादि|

संयुक्त शब्द - आनंदातिरेक

मुहावरे और कहावतें- अपनी डफली अपना राग, डोरे डालना, खप जाना, दिल में बैठ जाना, पौ फटना, हृदय का रोना, इत्यादि|

मुहावरों का वाक्य में प्रयोग : बिल्लेसुर के जगे भाग से दीना की चोटी खड़ी हो गई|

बिल्लेसुर के असंभावित लाभ के बोझ से दीना की कमर टेढ़ी हो गई|

बिल्लेसुर सूखे होंठों की हार खाई हँसी हँसकर रह गए|

गांववालों के मन की मन्दाकिनी में अव्यक्त ध्वनि थी बिल्लेसुर रुपयों से हाथ धोएं|

स्त्रियाँ दिन को मक्खियाँ उड़ाती हैं, रात को सामने बैठी रहती हैं|

व्यंग्य की भाषा- कौन रोज अँगोछा बढ़ाये रहते हो|

भाइयों को राजयक्ष्मा न होने के कारण बकरियों की गंध से एतराज होता|

शाप की भाषा - तू मर जा तेरी चारपाई गंगाजी जाए

रोष की भाषा - ढोर चराने के लिए समंदर पार नहीं किया| यह काम गाँव में भी था|

आशीर्वाद की भाषा- राम करें, सुख से रहें, हमको तो धोखा दे गए बच्चे! हमारे और कौन था? जिस तरह दिन कटते हैं, हमारी आत्मा जानती है|

'बच्चा फूलो-फलो, तुम्हारा तो आसरा ही है|'

अफ़सोस की भाषा- धन है, मान है, गहने हैं, कपड़े हैं, दूध से भरी हूँ लेकिन ऊँ हूँ हूँ – फिर रोदन यानी पूत नहीं|

दुःखपूर्ण आक्रोश की भाषा: देख, मैं गरीब हूँ| तुझे सब लोग ग़रीबों का सहायक कहते हैं, मैं इसीलिए तेरे पास आता था और कहता था, मेरी बकरियों को और बच्चों को देखे रहना| क्या तूने रखवाली की, लिए थूथन सा मुँह खड़ा है?

अनुभव की अभिव्यक्ति- 'बैलों को बांधकर बैल ही बने रहना पड़ता है|'

'बिना सोते के कुआँ सूख जाता है|'

'नातेदार रिश्तेदार जिसके साथ हैं उसका पानी परमात्मा नहीं बंद कर सकते|'

'बिना अपने मरे कोई सरग नहीं देखता|'

बोध प्रश्न

- पुरवा डिविजन की लोकसंस्कृति के बारे में बताइए|
- उपन्यास के आधार पर समाजभाषिक संदर्भ पर प्रकाश डालिए|

5.4 पाठ सार

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास पुरवा डिविजन के मुक्ताप्रसाद के चार लड़कों की कहानी है| मुख्य रूप से यह उपन्यास बिल्लेसुर के जीवन पर आधारित है| इस उपन्यास का कथानक बिल्लेसुर के चरित्र में ही विस्तार पाता है और अपने चरम पर पहुँचता है| उपन्यास के अंत तक बिल्लेसुर के सोने की ईंटों का राज, राज ही बना रहता है| यह तथ्य रोचक लगता है| पिता की मृत्यु के पश्चात 'मन्नी,दुलारे, ललई और बिल्लेसुर' का पालन-पोषण इनकी माँ ने किया| माँ की मृत्यु के बाद ये बिलकुल अलग-अलग राग अलापने लगे- शाक्त, वैष्णव, आर्यसमाजी और वितण्डावादी की तरह| मन्नी ने अनमेल विवाह किया| दुलारे और ललई ने विधवा विवाह किया| मन्नी की सास की कृपा से बिल्लेसुर ने गुणवती कन्या से विवाह किया| इससे पूर्व बिल्लेसुर के जीवन में कई

परिस्थितियां उत्पन्न हुईं| वे परिस्थितियां ही उपन्यास को गतिवान रख सकी हैं| बिल्लेसुर द्वारा बेटिकट यात्रा कर कानपुर से बर्दवान पहुंचना| वहां सत्तीदीन के घर में काम करना| जमादार द्वारा मिले चिट्ठी पहुँचाने का काम करना| सत्तीदीन की स्त्री की क्रूरताओं को विहँस कर या खुनके घूंट पीकर सहते हुए; लगातार अपने पाँव ज़माने की कोशिश करते रहना| मालिक-मालकिन के साथ जगन्नाथ दर्शन का सुयोग प्राप्त होना| सत्तीदीन से गुरुमंत्र लेना| साल भर के बाद मंत्र लौटाकर अपने देश का रुख कर लेना| गाँव आकर गांववालों की मंशा को भांपना| जिस अपनेपन की खोज में घर वापस लौटे थे वह नदारद था| प्रबल असहयोग के बीच बकरीपालन का कारोबार जमाया| बांस की लग्गी में हँसिया फंसाकर पीपल, गूलड़ और पाकर की नर्म-नर्म पत्तियों को काटकर बकरियों को पालते हुए बिल्लेसुर के माध्यम से निराला ने वर्ण आधारित रुढ़िवादी विचारों का खंडन किया|

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1. इस उपन्यास में वर्ण आधारित रोजगार व्यवस्था से विरोध जताया गया है|

2. अपने बीच के किसी व्यक्ति की तरक्की देखकर गाँववालों के मन में विभिन्न विचार आते हैं| उन विचारों का जीवंत चित्रण किया गया है| गाँववालों ने एक बार जमींदार से शिकायत की कि बिल्लेसुर ने गाँव के पेड़ डूंडे कर दिए- इसलिए उनकी बकरियाँ बिकवा देनी चाहिए| उनकी मंशा पूरी नहीं हुई इसलिए बिल्लेसुर को बकरिहा कहकर वे अपना गुबार निकलने लगे| जमींदार पेड़ छंटाई की एक तय रकम बिल्लेसुर से ले रहे थे इसलिए उन्होंने कुछ नहीं किया|

3. बिल्लेसुर के चरित्र के माध्यम से यह दिखाया गया है कि प्रगतिशील व्यक्ति को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता| वह असीम धैर्य का प्रतीक भी है|

4. बीसवीं शताब्दी में स्त्री-पुरुष में से किसी एक की मृत्यु होने पर वे दूसरा विवाह करने के लिए स्वतंत्र थे|

5. धनी मालकिन अपने नौकर के प्रति क्रूर भी हो सकती है| मुश्किल वक्त में इंसान को खुद ही खुद को धीरज देना होता है और नए काम को करने के लिए ताकत पैदा करनी होती है|

6. गाँव में रहना दुश्मनों के गढ़ में रहने जैसा था| भाई भी अपने नहीं| बिल्लेसुर सोचते थे, क्यों एक-दूसरे के लिए नहीं खड़ा होता|...फिर भी जान रहते काम करना पड़ता है, दूसरे की मदद करनी पड़ती है, सहारा लेना पड़ता है, यह सच है| इधर कोई ध्यान नहीं देता, यह कमजोरी दूर नहीं हो रही है|' खून से तर झाड़ी (जहाँ न आदमी था, न बकरा) को देखकर बिल्लेसुर के मन में विचार आया कि कहीं इंसाफ नहीं सिर्फ लोग नसीहत देते हैं|

7. नाम के लिए दुनिया मरती है|

8. अपने निर्णय पर पश्चाताप करने से बेहतर है पहले ही समझकर चलना|

5.6 शब्द संपदा

1. शाक्त- शक्ति का उपासक

2. वैष्णव- विष्णु का उपासक

3. आर्यसमाजी- आर्यसमाज के सिद्धांतों को माननेवाला

4. वैदिक – वेद के अनुरूप

5. वितण्डावादी- कुतर्क करनेवाला

6. अत्युक्ति- एक पैसे की हैसियत को एक लाख के बराबर बताना

7. शिखरिदशना- सामने के दो दांत आवश्यकता से अधिक बड़े होना

8. बेहना- रुई की बत्ती देने वाला, धुनिया, जुलाहों की एक उपजाति

9. तंबोली – पान और सुपारी के उत्पादक और वितरक

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए|

1. बिल्लेसुर चारो भाई हिंदी साहित्य के चारो चरण पूरे करते हैं, बताइए कैसे?
2. मुक्ताप्रसाद ने अपने लड़कों का नामकरण कैसे किया?
3. 'मर्द से औरत होना अच्छा है'- बिल्लेसुर को ऐसा क्यों लगा?
4. गाँववालों के मन की मंदाकिनी में अव्यक्त ध्वनि क्या थी और क्यों?
5. 'बाहरी आदमियों में रहना अच्छा नहीं है' उपन्यास के आधार पर कथन को स्पष्ट करें|
6. गाँववालों के असहयोग की भावना को स्पष्ट करें?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए|

1. उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' के शीर्षक की उपयुक्तता पर प्रकाश डालें|
2. ग्रामीण लोकरीति से आप क्या समझते हैं?

3. बिल्लेसुर बकरिहा की वैचारिकता को स्पष्ट करें|

4. समाज में विवाह की आवश्यकता पर उपन्यास के आधार पर प्रकाश डालें?

5. प्रगतिशील को कौन रोक सकता है?कथन को स्पष्ट करें|

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. बिल्लेसुर बकरिहा 'हास्य के लिए एक स्केच है'| ( )

   (अ) हाँ (आ) नहीं (इ) पता नहीं (ई) केवल अ

2. 'विल्वेश्वर' बिल्लेसुर का शुद्ध रूप है| ( )

   (अ) हाँ (आ) नहीं (इ) केवल अ (ई) कोई नहीं

3. बिल्लेसुर बकरिहा के रचनाकार कौन हैं ? ( )

   (अ) निराला (आ) पन्त (इ) प्रसाद (ई) सभी

4. पैकू के सुकुल किस वर्ण के हैं? ( )

   (अ) क्षत्रिय (आ) वैश्य (इ) अ और ई (ई) ब्राह्मण

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. बिल्लेसुर के जगे भाग से .... की चोटी खड़ी हो गई|
2. ....होकर बकरी पालोगे|
3. गांववालों के मन की .... में अव्यक्त ध्वनि थी बिल्लेसुर ....से हाथ धोएं|
4. बिल्लेसुर ने .... की खेती की|
5. बरसातवाली किसानी में मिहनत ज्यादा ......पड़ती|
6. एक वक्त रोटी पकाते थे ....वक्त खाते थे|
7. भेड़िया इधर भी आता है लेकिन ....का भेस बदलकर|
8. बस्तीदीन सुकुल की विधवा से ....ने विवाह किया|
9. दुलारे ....थे|
10. ललई की ....के आगे गाँववालों का ....न टिक सका|

III. सुमेल कीजिए-

1. स्त्री	(अ) बकरिहा
2. चमरौधा	(आ) सत्यदीन
3. एकादशी	(इ) कुम्हार
4. ललई	(ई) उल्टी

5. बिल्लेसुर (उ) जूता
6. सत्तीदीन (ऊ) शिखरिदशना

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. निराला की साहित्य साधना – डॉ. रामविलास शर्मा

2. बिल्लेसुर बकरिहा समीक्षा- डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त

3. बिल्लेसुर बकरिहा – पं. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

4. निराला का कथा साहित्य- डॉ. कुसुम वार्ष्णेय

इकाई 6: ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ का तात्विक विवेचन

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ: ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ का तात्विक विवेचन

6.3.1 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ की कथावस्तु

6.3.2 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ के पात्रों का चरित्र-चित्रण

6.3.3 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ की संवाद योजन

6.3.4 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ का देशकाल व वातारण

6.3.5 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ का उद्देश्य

6.3.6 ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ की भाषा-शैली

6.4 पाठ सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो, प्रस्तुत इकाई में हम हिंदी साहित्य के छायावाद युग के मुख्य रचनाकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित उपन्यास बिल्लेसुर बकरिहा की कथा को उपन्यास के तत्वों के आधार पर समझने का प्रयास करेंगे। बिल्लेसुर बकरिहा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का एक व्यंग्य उपन्यास है। इसे हास्य से भरा हुआ रेखाचित्र भी कहा गया है। उपन्यासकार ने उपन्यास के प्रथम संस्करण में इसे हास्य लिए एक स्केच कहा है तो दूसरे संस्करण के निवेदन में इसे प्रतिशील साहित्य का नमूना कहा। बिल्लेसुर बकरिहा अपनी यथार्थवादी विषयवस्तु और प्रगतिशील जीवनदृष्टि के लिए हिंदी साहित्य जगत में बहुत ही चर्चित रहा है। बिल्लेसुर एक गरीब ब्राह्मण है, लेकिन ब्राह्मणों के रूढ़िवाद से पूरी तरह मुक्त। गरीबी के उबार के लिए वह शहर जाता है और लौटने पर बकरियाँ पाल लेता है। इसके लिए वह बिरादरी की रूष्टता और प्रायश्चित के लिए डाले जा रहे दबाव की परवाह नहीं करता। वह अपनी सूझबूझ से शादी भी कर लेता है। वह समझ जाता है कि समाज में जात-पाँत केवल एक दिखावा है। यह दिखावा आर्थिक वैषम्य के कारण है।

जैसे ही उसके पैसेवाला होने की खबर गाँव में फैल जाती है, उसका जाति-बहिष्कार भी समाप्त हो जाता है। कहा जा सकता है कि यह उपन्यास आर्थिक संबंधों में सामंती जड़वाद की धूर्तता, पराजय और बेबसी की कथा है। निराला ने इस उपन्यास में यह दिखाने का प्रयास किया है कि मनुष्य अपने कर्म से ऊँचा उठता है, समाज में प्रतिष्ठा पाता है, जात-पाँत से नहीं। समझदारी व परिश्रम के बल पर ही कोई व्यक्ति धनी या निर्धन होता है।

6.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में हम निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा और ज्ञान प्राप्त करेंगे –

- उपन्यास के तत्वों के आधार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'बिल्लेसुर बकरिहा'
- उपन्यास की कथा समझ सकेंगे।
- भारतीय समाज में व्याप्त जाति प्रथा के बंधनों से मुक्त होने के लिए परिश्रम की आवश्यकता और महत्व को दर्शाने की रचनाकार के कला कौशल को जान पाएँगे।
- समाज में उपेक्षा व ईर्ष्या का पात्र बना व्यक्ति किस तरह अपनी समझदारी व होशियारी से
- सम्मान का हकदार बनता है, जान पाएँगे।
- निराला द्वारा कथा कथन के लिए प्रयोग किए गए लोक जीवन के विभिन्न तत्वों - रहन-सहन,
- परिवेश, भाषा आदि जान सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : 'बिल्लेसुर बकरिहा' का तात्विक विवेचन

प्रिय छात्रो, आधुनिक हिंदी काव्य के छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एक प्रतिष्ठित कवि होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट गद्यकार भी हैं। वे कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और अनुवादक थे। निराला उपन्यासों के नाम हैं - अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे, चमेली और इन्दुलेखा। इस इकाई में 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास का विवेचन उपन्यास के तत्वों के आधार पर किया जा रहा है। उपन्यास के 6 तत्व होते हैं - कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, देशकाल व वातावरण, उद्देशय और भाषा शैली।

6.3.1 'बिल्लेसुर बकरिहा' की कथावस्तु

प्रिय छात्रो, बिल्लेसुर बकरिहा में तीन कथाओं को समावेश है- बिल्लेसुर की कथा, उसके भाइयों की कथा और पं. सत्तीदीन सुकुल और उसकी पत्नी की कथा। इनमें बिल्लेसुर की कथा मुख्य है। भाइयों की कथा उपन्यास की पृष्ठभूमि तैयार करती है और पं. सत्तीदीन सुकुल तथा

उसकी पत्नी कथा बिल्लेसुर के व्यक्तित्व विकास में सहयोगी कथा है। इस तरह संपूर्ण उपन्यास का केंद्र बिंदु बिल्लेसुर है। सारा घटनाक्रम उसी के चारों ओर घूमता है।

उपन्यास का आरंभ बड़े रोचक ढंग से करते हुए लेखक ने सर्वप्रथम उपन्यास के नामकरण के संबंध में बताया है। कथानायक का नाम बिल्लेसुर है। इस शब्द का शुद्ध रूप बिल्वेश्वर है जो उस भू-प्रदेश में शिव के लिए प्रयुक्त होता है और वहाँ के लोग बिल्वेश्वर की पूजा बड़ी आस्था तथा भक्तिभावना से करते हैं। 'बकरिहा' को वहाँ के लोग 'बोकरिहा' कहते हैं और बकरी को बोकरी। लेखक ने इसका हिंदुस्तानी रूप प्रयुक्त किया है और 'हा' का प्रयोग हनने के अर्थ में नहीं, पालन के अर्थ में किया है। अतः 'बिल्लेसुर बकरिहा' का अर्थ हुआ बकरी चरानेवाला, उनको पालकर, उनके द्वारा अपनी आजीविका कमानेवाला बिल्वेश्वर।

उसके पश्चात् बिल्लेसुर के परिवार का, पारिवारिक जीवन का संक्षिप्त वृत्तान्त दिया गया है-बिल्लेसुर 'तरी' के सुकुल हैं। पिता का नाम मुक्ताप्रसाद था। बिल्लेसुर की बाल्यावस्था में का निधन हो गया था। पिता की मृत्यु के बाद बिल्लेसुर की माता मेहनत-मजूरी कर, गाँववालों की चौका-टहल, कंडे पाथकर, कूट-पीसकर बिल्लेसुर तथा उसके तीन भाइयों का पालन-पोषण करती है। लेकिन वह भी उसके बचपन में स्वर्ग सिधार जाती है। मुक्ताप्रसाद के चार लड़कों के नाम थे- मन्नी, ललई, बिल्लेसुर और दुलारे। वे उन्हें लाड़-प्यार में क्रमशः गप्पू, मर्रा, बिलुआ और कटुआ पुकारते थे। होश संभालते ही चारों भाई अलग-अलग हो गये। मन्नी और बिल्लेसुर एक तरफ हुए और ललई तथा दुलारे दूसरी तरफ। फिर चारों ने अलग-अलग राह चुनी और परिवार में पूरा विघटन हो गया।

रचनाकार ने इन बिल्लेसुर के परिवार की कहानी के माध्यम से समाज, रिश्तों और मनुष्य की आत्म-खोज की यात्रा को दर्शाने का प्रयास किया है। बिल्लेसुर और उनके भाई जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से गुजरते हैं। मन्नी झूठ बोलकर एक दुधमुंही बच्ची से विवाह कर लेता है। अपनी सास को अकेला छोड़ कर, बिना किसी को बताए अपनी नवविवाहिता के साथ गाँव से चला जाता है। ललई अपने जीवन में कई संघर्षों का सामना करता है। वह बम्बई और कलकत्ता में अपनी आजीविका की तलाश करता है। रतलाम रियासत में एक गुजराती ब्राह्मण से दोस्ती करके उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को अपना लेता है और समाज-सुधार में सक्रिय हो जाता है। दुलारे भी पचास वर्ष की उम्र में एक विधवा से विवाह करता है, लेकिन साल भर बाद उसका निधन हो जाता है।

कहानी का मुख्य नायक बिल्लेसुर, अपने बड़े भाई मन्नी की तरह गाँव छोड़कर परदेस जाता है। वह कानपुर से बिना टिकट यात्रा करता है। कहीं बार गाड़ी से उतारा जाता है। लेकिन

वह गाड़ी उतरता-चढ़ता अपने गाँव से साढ़े सात सौ कोस दूर बर्दमान पहुँच जाता है। वहाँ उसकी भेंट सत्तीदीन सुकुल से होती है, जो अपनी चतुराई के कारण खजांची बने हुए हैं। सत्तीदीन की पत्नी, जो अपनी आकर्षक छवि और बिल्लेसुर से जुड़ने की योजना के साथ उसे घर में काम पर रख लेती है। बिल्लेसुर को अपने जाल में फंसाने का प्रयास कर रहती है। हालांकि, बिल्लेसुर संयम और परिश्रम से काम करता है और धीरे-धीरे सत्तीदीन की पत्नी की मंशा को पहचा जाता है।

बिल्लेसुर बर्दमान में सत्तीदीन के घर में रहते हुए कई काम करता है। ऐसे काम जो कभी अपने गाँव में रहते हुए नहीं किए थे। काम पर रखने से पहले उसे गायों के काम की बहुत सी बातें न कही गयी थीं, वे काम पर चढ़ते ही सामने आने लगती हैं। जैसे – गोबर उठाना, जगह साफ करना, गाय की मूत पर राख छोड़ना, कंडे पाथना, कभी-कभी गायों को नहलाना आदि। इन सब कामों के लिए बिल्लेसुर को कोई वेतन नहीं बल्कि केवल भोजन मिलता है। वेतन के लिए वे रियासत की चिट्ठियाँ पहुँचाने का काम करता है।

बिल्लेसुर को एक दिन सत्तीदीन और उसकी पत्नी के साथ जगन्नाथ पुरी की यात्रा पर जाने का अवसर मिलता है। वहाँ उसकी आस्था और विश्वास को एक नया मोड़ मिलता है। सत्तीदीन की पत्नी का विश्वास और उसका उत्साह उसके विपरीत दिशा में मुड़ता है, क्योंकि वह अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बिल्लेसुर को फांसाना चाहती है। इस स्थिति से बिल्लेसुर को गहरा धक्का लगता है और वह सत्तीदीन का घर को छोड़कर अपने गाँव लौटने आता है।

निराला ने बिल्लेसुर की कड़ी मेहनत, संघर्ष, और गाँव में प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने की कहानी की रचना की है। बिल्लेसुर बर्दमान से अपने गाँव लौटने के बाद बकरी पालन का व्यवसाय शुरू करता है। गाँव में नए बदलाव लाने की कोशिश करता है। शुरुआत में गाँववाले उसकी सफलता और निष्ठा का मजाक उड़ाते हैं। उससे ईर्ष्या करते हैं। लेकिन बिल्लेसुर अपने आत्मविश्वास, मेहनत, और समझदारी से सभी मुश्किलों का सामना करता है। जब वह बकरियाँ लेकर गाँव में प्रवेश करता है, तो गाँव में उसके बारे में विभिन्न अटकलें लगाईं जाती है। त्रिलोचन जैसे लोग बिल्लेसुर से उसकी योजनाओं के बारे में पूछने लगते हैं। बिल्लेसुर उन्हें कुछ नहीं बताता। लेकिन त्रिलोचन अनुमान लगाता रहता है कि उसके पास काफी धन होगा। बिल्लेसुर बकरी पालन का काम पूरी निष्ठा और लगन से शुरू करता है। गाँववाले उसका मजाक उड़ाकर उसे "बकरिहा" कहकर ताना मारने लगते हैं। बावजूद इसके, वह अपनी मेहनत और ईमानदारी से आगे बढ़ता है। वह भी गाँव वालों को चिढ़ाने के लिए अपनी बकरियों के नाम गाँव वालों के नाम पर रख देता है - गंगा, जमुना, सरजू, पारवती, सेखाइन, जमीला, गुलबिया, सितविया, रमुआ, स्यमुआ, भगवतिया, परभुआ, टुरुई और दिनवा।

बिल्लेसुर प्रतिदिन बकरियों को स्वयं चराने ले जाता है। एक दिन उसका सबसे तगड़ा बकरा गायब हो जाता है। उसकी खोज के दौरान बिल्लेसुर को पता चलता है कि कुछ नटखट

लड़कों ने उसका बकरा मार डाला है। उसके मन में गहरी पीड़ा होती है। वह रोजाना बकरियों को चराने जाते समय महावीर से रक्षा के लिए प्रार्थना करता था। जब किसी भी प्रकार से न्याय की उम्मीद खत्म हो जाती है, तब वह गुस्से में आकर महावीर जी की मूर्ति पर डंडा चला देता है। बिल्लेसुर इस घटना से हताश न होकर सतर्क हो जाता है। वह लगातार अपनी मेहनत से मुश्किलों का सामना करता रहता है। बकरियों के दूध से कमाई बढ़ाने के लिए नए तरीके खोजता है। बकरी का दूध बेचने के लिए वह कई प्रयोग करता है, जैसे दूध से खोया बनाना और फिर मक्खन-घी का बनाना। उसे इस काम में सफलता बहुत मेहनत के बाद मिलती है।

शकरकंद की खेती का विचार भी उसके दिमाग में आता है। जिस समय गाँव वाले अपने खेतों में अन्य अनाजों की खेती करते हैं, उस समय बिल्लेसुर लाभ कमाने के विचार से शकरकंद की खेती करने की योजना बनाता है। बकरियों को घर में पत्तियाँ खिलाने का इंतज़ाम करके खेत तैयार करता है। गाँववाले फिर एक बार बिल्लेसुर का मजाक उड़ाते हैं। लेकिन वह उनकी परवाह किए बिना काम जारी रखता है। शकरकंद की खेती से बिल्लेसुर अच्छा मुनाफा कमाता है। उसकी कड़ी मेहनत रंग लाती है। इस प्रक्रिया में त्रिलोचन उसके खिलाफ लगातार साजिशें रचता है। बिल्लेसुर की सफलता से ईर्ष्या करने लगता है। त्रिलोचन बिल्लेसुर को विवाह के एक प्रस्ताव में फंसाने की कोशिश करता है। लेकिन बिल्लेसुर उसकी चालकी को अपनी चतुराई से पहचान लेता है। अपनी समझदारी से सारा खेल उलट दिया।

उसने मन्नी की सास की सहायता से विवाह के संबंध में होने वाली उलझनों को भी समझदारी से सुलझा लेता है। बिल्लेसुर का व्यवहार हमेशा लोगों से ईमानदार, शालीन और चतुराई से भरा होता है। वह मन्नी की सास की मदद से विवाह की तैयारियाँ शुरूता है। इस प्रक्रिया में बहुत सावधानी और चतुराई से काम लिया।

जैसे-जैसे विवाह का समय पास आता है, बिल्लेसुर का आत्मविश्वास बढ़ता जाता है। वह अपनी कड़ी मेहनत और बचत से खेतों में मटर और चना बोने के अलावा अन्य कई योजनाओं को भी कार्यान्वित करता है। अपने विवाह की तैयारी में बिल्लेसुर न सिर्फ अपनी मेहनत से धन कमाता है, बल्कि गाँव वालों के समाने अपनी एक ऐसी छवि पेश करता है कि उससे लोग उसे एक संपन्न व्यक्ति समझने लगते हैं।

गांव वाले उसे अब धनवान समझने लगते हैं। उसकी अदृश्य संपत्ति के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगती हैं। विवाह की पूरी प्रक्रिया में बिल्लेसुर ने अपनी चालाकी से हर कदम पर दूसरों को भ्रमित करता है। अपनी असल स्थिति को छिपाए रखता है। अंततः बिल्लेसुर का विवाह हो जाता है। वह अपनी सादगी और चतुराई से यह सिद्ध कर देता है कि सफलता केवल धन से नहीं, बल्कि समझदारी, मेहनत और चतुराई से भी प्राप्त की जा सकती है।

बोध प्रश्न

- बिल्लेसुर का शुद्ध रूप क्या है?

- लेखक ने 'बकरिहा' का क्या अर्थ बताया है?
- बिल्लेसुर ने अपनी बकरियों के क्या-क्या नाम रखा था?
- बिल्लेसुर ने किसकी खेती की?

6.3.2 'बिल्लेसुर बकरिहा' के पात्रों का चरित्र-चित्रण

प्रिय छात्रो, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपने उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' में एक साधारण व्यक्ति की जीवन यात्रा का अद्वितीय चित्रण किया है। उन्होंने बिल्लेसुर के रूप में एक निर्धन ब्राह्मण युवक के चरित्र की रचना की है। वह उपन्यास का नायक है। रचनाकार ने उसकी साधारणता, संघर्षशीलता और परिश्रम की कहानी में जीवन के कठोर यथार्थ को चित्रित किया है। इस उपन्यास के माध्यम से निराला ने यह सिद्ध किया है कि किसी व्यक्ति की असली महानता उसकी मानसिकता, संघर्ष और आत्मविश्वास में होती है, न कि किसी बाहरी रूप या आदर्श गुणों में। बिल्लेसुर एक ऐसा पात्र है जिसमें न तो कोई विशेष शारीरिक आकर्षण है और न ही कोई पारंपरिक नायक जैसी वीरता या महानता। फिर भी उसका व्यक्तित्व पाठकों को आकर्षित करता है।

1. बिल्लेसुर का चरित्र:

बिल्लेसुर जाति से ब्राह्मण है, लेकिन वह निर्धन है और उसके पास कोई साधन नहीं हैं। वह पूरी तरह से संघर्षशील व्यक्ति है, जिसने जीवन को एक चुनौती और संघर्ष के रूप में स्वीकार किया है। वह हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है। उसका विश्वास है कि अगर जीवन में मेहनत और लगन से काम किया जाए तो हर समस्या का समाधान संभव है।

वह एक सरल, ईमानदार और स्वच्छ हृदय वाला व्यक्ति है, जो किसी प्रकार के छल-कपट में विश्वास नहीं करता। उसकी यही विशेषता उसे अपने गाँव के अन्य लोगों से अलग करती है। उसकी न तो कोई उच्च शिक्षा है और न ही किसी प्रकार का कोई विशेष गुण है, लेकिन फिर भी वह अपने साधारण जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

संघर्ष और परिश्रम

बिल्लेसुर का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। वह काम की तलाश में टिकट के लिए पैसे न होने पर भी गाड़ी से बार-बार उतारे जाने पर भी उतरते-चढ़ते बर्दमान पहुंचता है। वहाँ पं. सत्तीदीन सुकुल के यहाँ नौकर की तरह काम करता है। वहाँ वह पूरे दिन काम करता है, ढोरों की देखभाल करता है। पैसे कमाने के लिए चिट्ठियाँ पहुँचाने का काम करता है। यहाँ से उसकी परिश्रमशीलता का आरंभ होता है। गर्मी के दिनों में वह नंगे सिर धूप में दौड़ता है। लेकिन कभी भी अपनी मेहनत से पीछे नहीं हटता।

जब वह गाँव लौटता है तो बकरी पालन का व्यवसाय शुरू करता है, क्योंकि उसके पास खेती के लिए हल-बैल खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। हालांकि उसे अपने व्यवसाय में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जैसे बकरियों का दूध न बिकना और बाजार में प्रतिस्पर्धा, फिर भी वह हार मानने के बजाय नए तरीके से काम करता है। वह बकरी के दूध को खोया बनाने और फिर घी बनाने का काम शुरू करता है। उसकी मेहनत और स्मार्टनेस के कारण वह अपनी स्थिति को बेहतर बना लेता है।

बिल्लेसुर का सबसे बड़ा गुण उसकी मेहनत और परिश्रम है, जो उसे कठिनाईयों के बावजूद आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वह जीवन में कभी हार नहीं मानता और हर काम में खुद को पूरी तरह से झोंक देता है।

धैर्य और आत्मविश्वास

बिल्लेसुर का दूसरा सबसे बड़ा गुण उसका धैर्य है। उपन्यास में कई बार दिखाया गया है कि बिल्लेसुर संकटों का सामना धैर्यपूर्वक करता है। वह जीवन की कठिनाइयों से घबराता नहीं है। वह हर चुनौती का सामना आत्मविश्वास के साथ करता है। बकरियों का दूध जब नहीं बिकता है, तब वह घी बनाने का उपाय खोजता है। इससे पूर्व सत्तीदीन के यहाँ काम करते समय भी वहाँ की कठिन परिस्थिति और सत्तीदीन की पत्नी के तिरस्कार को भी वह धैर्य से सहन करता है।
बिल्लेसुर जीवन के बारे में एक बहुत ही स्वस्थ दृष्टिकोण रखता है। वह जीवन को एक संघर्ष मानता है और उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार की हड़बड़ी या अधीरता से बचता है। उसकी यह मानसिकता उसे हर बाधा को पार करने में सक्षम बनाती है।

चालाकी और व्यवहार कुशलता

बिल्लेसुर में एक और विशेषता है, वह है उसकी चालाकी और व्यवहार कुशलता। वह भले ही निरक्षर हो, लेकिन अपनी सूझ-बूझ से वह बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल निकाल लेता है। उसे लोगों की मानसिकता और उनके इरादों का सही आकलन करने की विशेष क्षमता है।
त्रिलोचन जब बिल्लेसुर से बैल देने और विवाह के विषय में बात करता है, तो वह तुरंत समझ जाता है कि त्रिलोचन दलाली कर रहा है। वह त्रिलोचन की चालाकी को पहचान लेता है और उसे अपनी रणनीति से मात दे देता है।

इससे बिल्लेसुर की व्यवहर कुशलता और समझदारी प्रकट होती है। अपनी स्थिति और विवेक के अनुसार वह सही निर्णय लेने में सक्षम है।

मितभषिता

बिल्लेसुर का एक और बड़ा गुण उसकी मितभाषिता है। वह बहुत कम बोलता है, लेकिन जब बोलता है, तो सच बोलता है। उसकी स्पष्टवादिता भी उसे एक अनूठा व्यक्तित्व देती है। उपन्यास में उसके और त्रिलोचन के बीच हुई बातचीत इस बात का प्रमाण है कि वह बिना किसी हड़बड़ी के, बहुत सोच-समझ कर काम करता है।

बिल्लेसुर की दुर्बलताएँ

बिल्लेसुर की कुछ दुर्बलताएँ भी हैं। वह विवाह के लिए अत्यधिक उत्सुक है, और थोड़े समय के लिए वह त्रिलोचन की बातों पर विश्वास भी करता है। वह किसी भी प्रकार से धन कमाना चाहता है। इसीलिए तो वह पं. सत्तीदीन के घर के कामों के साथ-साथ चिट्ठी पहुँचाने का काम प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे अपने स्वार्थ की वजह से गलत निर्णय भी लेने पड़ते हैं। गाँव के नटखट बच्चों द्वारा उसके बकरे को मार दिए जाने की खबर सुनकर वह तड़प कर रह जाता है। उन्हें कुछ नहीं कर पाता है। क्रोधवश महावीर की मूर्ति को आघात पहुँचाता है। लेकिन ये दुर्बलताएँ उसकी इंसानियत और स्वाभाविक कमजोरियों को दर्शाती हैं, जो कि उसके सामान्य जीवन के हिस्से हैं।

कहा जा सकता है कि सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ ने ‘बिल्लेसुर बकरिहा’ के माध्यम से एक साधारण व्यक्ति के जीवन को बड़े ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। बिल्लेसुर का जीवन संघर्ष, परिश्रम, धैर्य, आत्मविश्वास और चालाकी का मिश्रण है। लेखक ने कहीं भी बिल्लेसुर के चरित्र-चित्रण के लिए प्रत्यक्ष शैली का आश्रय नहीं लिया है। बिल्लेसुर के कार्य, आचरण और अन्य पात्रों के साथ उसकी बातचीत ही उसके आन्तरिक भावों तथा चारित्रिक गुण-दोषों को उद्घाटित करते हैं। बिल्लेसुर के स्वभाव में आकस्मिक परिवर्तन नहीं दिखाया गया है, जो भी परिवर्तन होता है जैसे धर्म भीरू से विद्रोही हो जाना, उसका कारण परिस्थितियाँ और उसके अपने जीवन के अनुभव हैं। अतः यह परिवर्तन स्वाभाविक लगता है, थोपा हुआ नहीं।

2. **पं. सत्तीदीन सुकुल:**

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का उपन्यास "बिल्लेसुर बकरिहा" न केवल बिल्लेसुर के जीवन की संघर्षपूर्ण यात्रा को प्रस्तुत करता है, बल्कि अन्य पात्रों के माध्यम से समाज की गहरी समझ भी देता है। इनमें से पं. सत्तीदीन सुकुल, जो उपन्यास के एक महत्वपूर्ण सहायक पात्र हैं, बिल्लेसुर के जीवन में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उनका चरित्र उस समय के रियासतों में कार्यरत ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और व्यवहारकुशल कारिन्दों का प्रतिनिधित्व करता है।

पं. सत्तीदीन का स्वभाव विशेष रूप से उनकी पत्नी के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और सम्मान का है। वह अपनी पत्नी के आग्रह पर बिल्लेसुर को चरवाहे के रूप में नियुक्त करते हैं और बाद में उसे गुरु-मंत्र भी प्रदान करते हैं। यह दिखाता है कि उनके जीवन में पत्नी का अत्यधिक प्रभाव था। उनके लिए पारिवारिक कर्तव्य सर्वोपरि था और वे किसी भी प्रकार से पत्नी की इच्छाओं को पूरा करने में समर्पित रहते थे।

सत्तीदीन का जीवन संतुलन बनाने की कोशिश करता है। उन्हें सन्तान की कामना और पितृऋण से मुक्ति की चाह होती है। इसीलिए पत्नी के कहने पर जगन्नाथपुरी यात्रा पर जाते हैं। यात्रा के दौरान, बिल्लेसुर द्वारा उनकी थाली में जूठा डालने पर भी वह नाराज नहीं होते, बल्कि इसे हंसी-खुशी स्वीकार कर लेते हैं। इससे उनकी धार्मिकता और सहनशीलता को प्रकट होती है।
सत्तीदीन का मुख्य गुण उनकी कर्तव्यनिष्ठा और व्यवहारकुशलता है। वह बिल्लेसुर को नौकर रखने का निर्णय अपनी पत्नी के कहने पर लेते हैं, लेकिन यह सुनिश्चित करते हैं कि बिल्लेसुर को केवल भोजन और आवास मिले, तनख्वाह नहीं। बाद में, चिट्ठियाँ बाँटने का काम देकर वह बिल्लेसुर के लिए तनख्वाह का प्रबंध करते हैं। यह उनकी चतुराई और सामाजिक विवेक को प्रकट करता है। कुल मिलाकर, पं. सत्तीदीन सुकुल का चरित्र न केवल उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं को दर्शाता है, बल्कि यह समाज के पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे को भी उजागर करता है, जिसमें ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और परिवार के प्रति समर्पण प्रमुख हैं।

3. सत्तीदीन सुकुल की पत्नी:

सत्तीदीन सुकुल की पत्नी का चरित्र उपन्यास "बिल्लेसुर बकरिहा" में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह बिल्लेसुर के जीवन को एक मोड़ देने में अहम भूमिका निभाती हैं। उनका व्यक्तित्व उन युवतियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनका विवाह प्रौढ़ उम्र के व्यक्ति से होता है और वे एक असंतुष्ट जीवन जीती हैं, लेकिन अपने पति को प्रसन्न रखने के लिए समाज में रौब दिखाती हैं। वह चतुर, बुद्धिमान और अवसरों का लाभ उठाने वाली महिला हैं।

जब बिल्लेसुर की कठिन परिस्थितियों का पता चलता है, तो वह उसे अपने यहाँ नौकरी देने का प्रस्ताव इस प्रकार रखती हैं कि बिल्लेसुर उसे अस्वीकार नहीं कर सकता। वह यह भी जानती हैं कि सत्तीदीन को कैसे प्रसन्न करके अपनी इच्छाओं को पूरा किया जा सकता है।

वह सत्तीदीन को अपनी संतान की इच्छा के बारे में बताकर फुसलाती हैं, जगन्नाथपुरी की यात्रा के लिए राजी करती है। उसका कोई बच्चा नहीं है। वे देवता से आशीर्वाद चाहती हैं। इसके बाद, वह पति की प्रशंसा करते हुए रोने लगती हैं, जिससे सत्तीदीन यात्रा पर जाने के लिए सहमत हो जाते हैं। उनकी यह धार्मिक आस्था केवल संतान की कामना से प्रेरित है। वह अपने अंदर की इच्छाओं को दबा नहीं पातीं। अपनी यौवन की अपूर्ण इच्छाएँ की पूर्ति के लिए बिल्लेसुर को आकर्षित करने की नाकाम कोशिश करती हैं। वह बिल्लेसुर के रूप में अपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए अवसर के रूप में देखती हैं। जब संतान की प्राप्ति के लिए उनकी यात्रा सफल नहीं होती, तो उनका विश्वास देवता से हटकर मनुष्य की शक्ति की ओर मुड़ जाता है। उनकी स्वार्थी प्रवृत्तियाँ और ईर्ष्या भी उनके चरित्र में स्पष्ट हैं, खासकर जब वह बिल्लेसुर के आर्थिक लाभ के कारण उसे तंग करने लगती हैं। उनके कटु शब्द और व्यवहार बिल्लेसुर के लिए असहनीय हो जाते

हैं, जिससे उसकी स्थिति और भी कठिन हो जाती है। सत्तीदीन सुकुल की पत्नी का चरित्र यथार्थ के आधार पर रचित है, जो बिल्लेसुर की धैर्य और संयम की विशेषताओं को उजागर करने में मदद करता है।

4. त्रिलोचन:

त्रिलोचन, "बिल्लेसुर बकरिहा" उपन्यास का एक नकारात्मक और चालाक पात्र है। लेखक ने इसे गाँव का काइयाँ, धूर्त और स्वार्थी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसका जीवन का मुख्य उद्देश्य पैसे कमाना है। इसके लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। वह अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित करने से भी नहीं कतराता, चाहे उसे झूठ बोलना पड़े या जाल-फरेब करना पड़े। त्रिलोचन का चरित्र स्वार्थी और छलपूर्ण है। जब उसे पता चलता है कि बिल्लेसुर परदेस से अच्छा पैसा कमाकर आया है, तो वह सबसे पहले उसकी असलियत जानने और उसे ठगने की कोशिश करता है। वह बिल्लेसुर को अपने बैल अधिक दाम में बेचने की युक्ति करता है, लेकिन जब बिल्लेसुर उसके बैल न लेकर बकरी पालन का व्यवसाय शुरू करता है तब वह तिलमिला उठता है। वह किसी भी तरह बिल्लेसुर की जमापूंजी का पता लगाकर उसे ठगना चाहता है।

बिल्लेसुर की आर्थिक स्थिति बेहतर दिखाई देने के बाद त्रिलोचन उसके पास विवाह के लिए एक लड़की का प्रस्ताव ले जाता है। पूछने पर न तो उसका नाम, उसका गाँव, उसके पिता का नाम बतलाता है। असल में वह दलाली के लिए रुपये ऐंठने की योजना बनाता है। बिल्लेसुर को फंसाने में असफल होने पर उस पर झूठे आरोप लगाने में जुट जाता है। वह बिल्लेसुर की बढ़ती सफलता से ईर्ष्या करता है और अपने स्वार्थ के लिए उसे नीचा दिखाने का प्रयास करता है।
त्रिलोचन का व्यक्तित्व अवसरवादिता और स्वार्थ से भरा हुआ है। वह कभी बिल्लेसुर की तारीफ करता है, तो कभी उसे धमकाता है। वह हर स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश करता है और खुद को सबका शुभचिंतक दिखाने का प्रयास करता रहता है।

निराला ने त्रिलोचन के माध्यम से समाज में ऐसे ठगों और चालाक लोगों का चित्रण किया है, जो स्वार्थ और छल के आधार पर अपना जीवन जीते हैं। वह यथार्थवादी पात्र है, और उसकी सृष्टि बिल्लेसुर के चरित्र के विकास में सहायक है, जिससे बिल्लेसुर की सहनशीलता और धैर्य जैसे गुण उजागर होते हैं।

5. **मन्नी की सास:**

निराला ने "बिल्लेसुर बकरिहा" में मन्नी की सास के रूप में एक सामान्य ग्रामीण स्त्री का चित्रण किया है। वह अपने सरल स्वभाव के बावजूद अत्यंत समझदार और व्यवहारकुशल है। वह विधवा है। अपने पति की मृत्यु के बाद कठिन समय में अपने बच्चों के लिए संघर्ष करती है। उसकी एक कमजोरी यह है कि वह पैसे और सम्मान की भूखी है। उसे स्वादिष्ट भोजन भी चाहिए। इस कारण वह मन्नी की चिकनी-चुपड़ी बातों में फंसकर उसके जाल में आ जाती है।

जब मन्नी उसे धोखा देकर भाग जाता है, तो वह अपनी बेटी के प्रति गहरी ममता और स्नेह का अनुभव करती है और बिल्लेसुर के प्रति आत्मीयता दिखाती है। बिल्लेसुर के यहाँ रहकर वह घरेलू कार्यों में कुशलता और परिश्रम से मदद करती है। उसका स्वभाव ममतामयी है।

मन्नी की सास का व्यवहार सूझ-बूझ और वाक्पटुता से भरा होता है। वह बिल्लेसुर की आवभगत से प्रसन्न होकर उसकी विवाह संबंधी योजनाओं में भी मदद करती है। उसकी सलाह से बिल्लेसुर कृषि कार्यों में लाभ पाता है। शकरकंद की खेती करता है। खेत में चोरी तथा जंगली जानवरों द्वारा होने वाले नुकसान से बचाने के लिए बिल्लेसुर को शकरकंद खोद लाने की सलाह देती है। इसीलिए बिल्लेसुर को शकरकंद की खेती से बहुत मुनाफा होता है।

इस तरह एक ओर वह बिल्लेसुर का विश्वास जीतती है और दूसरी ओर अपने उसके घर जमे रहने का प्रबंध भी कर लेती है। बिल्लेसुर पर अपना रौब जमाने के लिए वह अपनी कर्मठता और विवाह करवाने की कार्यकुशलता की डींग मारती है। वह बिल्लेसुर के विवाह के लिए लड़की खोजती है। पंडित के पास जाने, कुंडली विचरवाने और लड़की के गुणों की तारीफ करके वह अपनी व्यवहारकुशलता का परिचय देती है।

त्रिलोचन के साथ उसके संवाद में उसकी तीव्र बुद्धि और निर्भीकता भी प्रदर्शित होती है, जो उसकी सच्चाई और ईमानदारी को दर्शाती है। निराला ने मन्नी की सास के रूप में गाँव की एक सच्ची, ममतामयी, कर्मठ और व्यवहारकुशल नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। यह लेखक की यथार्थवादी दृष्टि और सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का परिचायक है।

6. बिल्लेसुर के भाई:

उपन्यास में बिल्लेसुर के तीन भाई - मन्नी, ललई और दुलारे का परिचय दिया गया है, जो उपन्यास के मुख्य पात्र नहीं हैं, लेकिन उनके स्वभाव और कार्यों से लेखक ने गाँव के जीवन की सच्चाई को उजागर किया है। ये पात्र बिल्लेसुर के स्वभाव से कई मायनों में मिलते जुलते हैं। ये भारतीय समाज में पितृ सत्ता के उदाहरण हैं।

मन्नी: बिल्लेसुर का सबसे बड़ा भाई, जो सनातन धर्म का अनुयायी है। विवाह के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है और एक विधवा महिला से विवाह करने के लिए उसे बहलाकर घर ले जाता है। अपनी सम्पत्ति और आर्थिक सम्पन्नता का झूठा दावा करता है, और फिर पत्नी को छोड़कर परदेस भाग जाता है।

ललई: बिल्लेसुर से आयु में बड़ा है। वह परंपरागत रूढ़ियों का उल्लंघन करके विधवा से विवाह करता है। रतलाम में एक गुजराती ब्राह्मण से मित्रता करता है। उसकी मृत्यु के उसकी विधवा से विवाह करता है। जिसके कारण वह गाँववालों से बहिष्कृत हो जाता है, लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति और दृढ़ निश्चय के बल अंततः समाज सुधारक बन जाता है।

दुलारे: बिल्लेसुर का छोटा भाई, जो आर्यसमाजी विचारों का समर्थक है और विधवा-विवाह का पक्षधर है। वह भी विवाह के लिए अवसर की तलाश में रहता है। बस्तीदीन सुकुल के निधन के बाद, वह उनकी विधवा से विवाह करता है। विधावा को एक बच्चा पैदा होता है। एक साल के अंदर उसकी मृत्यु हो जाती है।

इन तीनों भाइयों का जीवन और उनके निर्णय गाँव के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं। इनके स्वभाव और कार्यों में कई समानताएँ हैं, जो बिल्लेसुर के व्यक्तित्व को दर्शाती हैं और पैतृकी प्रभाव को साबित करती हैं।

बोध प्रश्न

- बिल्लेसुर परदेस में किसके यहाँ काम करता है?
- गाँव में बिल्लेसुर को कौन ठगने की योजना बनाता है?
- शकरकंद की खेती की सलाह बिल्लेसुर को किसने दी?

6.4.3 'बिल्लेसुर बकरिहा' की संवाद योजना

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने 'बिल्लेसुर बकरिहा' के कथोपथन अत्यंत सरल और स्वाभाविक लिखे हैं। संवाद न तो लंबे हैं और न वाद-विवाद के रूप में हैं। गंभीर समस्या पर बहस करने के लिए भी उन्हें माध्यम नहीं बनाया गया है। पात्रों की बातचीत व्यावहारिक धरातल पर है और उनमें रोज़-मर्रा की बातें उठायी गयी हैं। उपन्यास के संवाद संक्षिप्त हैं, नाटकीय हैं और उनमें बीच-बीच में हास्य का पुट है।

विदेश से अपने गाँव लौट आने पर बिल्लेसुर बकरी पालन का निर्णय लेता है। बकरियों को गाँव में लेकर आते समय रास्ते में गाँव के व्यक्ति दीनानाथ से बिल्लेसुर की बातचीत देखिए-

"कितने की खरीदी?"

"अधियाँ की मिली है।"

"तीनों ?"

"नहीं तो क्या एक?"

दीना ने अरथाकर पूछा- "यानी बकरी तुम्हारी, दूध तुम्हारा, मर जाय, उसकी; बच्चे, आधे आधे?

'हां।'

"हाँ, गुसैयाँ जिसको दे।"

इसी तरह बकरे का बच्चा खो जाने पर बिल्लेसुर और गाँव के लड़कों की बातचीत देखें-

"बच्चा, हमारा बकरा इधर रह गया है?"

"कौन बकरा?"

"पट्टा एक, हम दिनवा कहते थे।"

"दिनवा कहते थे तो दिनवा से पूछो। हम नहीं जानते, कहाँ हैं?"

यहां वाक्य छोटे-छोटे हैं, अर्थपूर्ण और सुगठित हैं। साथ ही देशज शब्दों में 'अधियाँ', 'गुसाईं' आदि से अवास्तविक तत्त्व भी आ गया है। संपूर्ण रचना में उथल-पुथल, उबकाई संवादों से बचा गया है। किसी भी प्रसंग में निरर्थक कथोपकथन नहीं है। लेखक द्वारा रचित संवाद पात्रों के चरित्र और घटना की गंभीरता तो प्रकट करते ही हैं, साथ ही हास्य भी उत्पन्न करते हैं। ऐसे कथोपकथन रचना को बेहद रोचक बना देता है।

त्रिलोचन चालबाजी करके बिल्लेसुर के रुपए ऐंठने की योजना बनाता है। बिल्लेसुर का विवाह करवाने का लालच देता है। उन दोनों के बीच के संवाद देखिए –

त्रिलोचन के ज्ञान में रहने की प्रतिक्रिया बिल्लेसुर में हुई। फिर यह सोचकर कि अपना क्या बिगड़ता है,—इसका मतलब मालूम कर लेना चाहिए। करुण स्वर से बोले, "हाँ भय्या, समझदार तुमको गाँव के सभी मानते हैं।"

खुश होकर त्रिलोचन ने कहा, "ऐसी औरत गाँव में आई नहीं— सोलह साल की, आगभभूका।"

बिल्लेसुर को देवियों की याद आ गई थी, इसलिये बिचलित होकर सँभल गये। कहा, "तुम्हारी आँख कभी धोखा खा सकती है? कहाँ की है?"

"यह तो न बतायेंगे, जब ब्याहन चलोगे, तभी मालूम करोगे।"

"पहले तो फलदान चढ़ेंगे, या इसकी भी ज़रूरत नहीं?"

"फलदान चढ़ेंगे, लेकिन कोई पूछ-ताछ न होगी, तिवारियों के यहाँ की लड़की है। सब काम हमारी मारफ़त होगा।"

"किस गाँव की है?"

"इतना बता दिया तो क्या रह जायगा? यह ब्याह से पहले मालूम हो ही जायगा। मगर एक बात है। उनके यहाँ ब्याह का खर्च नहीं। भलेमानस हैं। लड़की नहीं बेचेंगे, पर ख़र्च तुम्हे दना होगा।"

"कितना?"

इसी प्रकार त्रिलोचन और मन्नी की सास के बीच हुई बातचीत में हास्य-व्यंग्य तो है ही, एक-दूसरे को काटने वाला और मर्म बिंधने का भी प्रयास है जो गांव के चतुर-चालक लोगों में पाया

जाता है- गाँव में बिल्लेसुर के विवाह की चर्चा होने लगती है। उसे सुनकर बिल्लेसुर से चिढ़ा हुआ त्रिलोचन एक दिन मन्नी की सास को घेर लेता है और पूछाता है, 'बताओ, ब्याह कहाँ रचा रही हो?"

"अपनी नातेदारी में" मन्नी की सास ने कहा।

"वह कहाँ है?' त्रिलोचन ने पूछा।

"क्यों, क्या बिल्लेसुर तुम्ही हो?" मन्नी की सास ने आँखें नचाकर पूछा: फिर कहा, "बच्चे, मेरी निगाह साफ़ है, मुझे तींगुर नहीं लगता। अब तुम बताओ कि तुम बिल्लेसुर के कौन हो?"

बल्ली नहीं लगी। त्रिलोचन बहुत कटे। कहा, "अच्छी बात है, कौन हैं, यह होने पर बतायेंगे जब उनका पानी बंद होगा।"

"नातेदार रिश्तेदार जिसके साथ हैं, उसका पानी परमात्मा नहीं बन्द कर सकते। अच्छा, हमारे घर से बाहर निकलो और गाँव में पानी बन्द करो चलकर।" त्रिलोचन खिसियाये हुए घर से बाहर निकल गये।

उपन्यासकार ने संवादों का उपयोग पात्रों के चरित्र और स्वभाव को उजागर करने के लिए भी किया है। बिल्लेसुर और पं. सत्तीदीन और उसकी स्त्री, त्रिलोचन और मन्नी की सास के साथ बिल्लेसुर की बातचीत बिल्लेसर की स्वच्छंद प्रकृति, विद्रोही स्वभाव, स्पष्टवादिता, विनोदप्रियता आदि गुणों का उद्घाटन करती हैं। अपना मतलब गाठने के लिए आदमी किस प्रकार का चिकनी-चुपड़ी बातें करता है, वह इस वार्तालाप से प्रकट होता है- "अम्मा, बैठो।" / "और तुम खड़े रहोगे?" / "लड़कों को खड़ा ही रहना चाहिए। आपकी बेटी है तो क्या? जैसी बेटी, वैसा बेटा। मुझसे वे बड़ी हैं। आप तो धर्म की मां हैं। जन्म देने वाली मां तो पाप की मां कहलाती है। तुम बैठो, मैं अभी छन-भर में आया।"

'बिल्लेसुर बकरिहा' के संवादों की विशेषता यह है कि इसमें शहरी लोगों की बनावटी-दिखावे के औपचारिक बातचीत वाले संवाद नहीं हैं। अनावश्यक वार्तालाप नहीं है। यह अभिजात्य वर्ग की कहानी नहीं है। यह एक गरीब व गंवारू व्यक्ति की कहानी है। इसीलिए इसमें परिष्कृत व्याख्याएँ भी नहीं है। इसमें है - गँवई-गाँव की अनगढ़ता, भोलापन और स्वाभाविकताएँ। संवादों की भाषा वातावरण के अनुकूल है। संघर्ष को स्वाभाविकता और सजीव बनाने के लिए लेखक ने उनमें पात्रों के स्वभाव, शैक्षिक और सामाजिक स्तर के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाता है। सारांश यह है कि 'बिल्लेसुर बकरिहा' के संवाद दृष्टि से सफल और विषय के अनुरूप हैं। वे सरल, सजीव, संक्षिप्ट, नाटकीय, हास्य-व्यंग्य से पूर्ण और पात्रों के चरित्र को उजागर करने वाले हैं।

बोध प्रश्न

- बकरियों के साथ गाँव में प्रवेश करते ही बिल्लेसुर की भेंट किससे हुई?
- बिल्लेसुर के विवाह की चर्चा सुनकर कौन मन्नी की सास से मिलने आया?

6.3.4 'बिल्लेसुर बकरिहा' का देशकाल व वातारण

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का छायावादी युग के प्रमुख कवियों में नाम आता है। लेकिन उनकी कविता केवल उस युग तक ही सीमित नहीं है। उसमें प्रगतिवाद की प्रवृत्तियाँ भी मिलती हैं। उसी तरह उनके कथा साहित्य में स्वच्छंदतावाद की प्रवृत्तियों के साथ-साथ यथार्थवादी दृष्टि भी मिलती है। यह 'बिल्लेसुर बकरिहा' में अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करती है। निराला ने बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास की पृष्टभूमि में गांव और गांव के जीवन को रखा है। इसका रचन 1941 में और प्रकाशन 1942 में हुआ। “अर्थात, 1930-40 के दशक, जो आजादी की लड़ाई के साथ-साथ भारतीय समाज के भीतर संघर्षों के उभरकर राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर आ जाने का समय है। निराला समय और समाज के इसी आलोड़न के बीच से एक कथा चुनते हैं” (दुर्गा सिंह, निराला का कथा साहित्य, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ.29)।

निराला का बहुत-सा समय गांवों में बीता था, और उनके पास ग्रामीण जीवन का गहरा अनुभव था। इसी कारण, उन्होंने अपने उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' में गांव के वातावरण, आचार-व्यवहार, स्वभाव, वेशभूषा और जीवनशैली का अत्यंत सजीव और यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। गांव का परिवेश, वहां के लोग और उनकी भावनाओं को निराला ने अपनी पैनी दृष्टि से समझा और बड़े ही मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया।

बिल्लेसुर की कहानी एक ऐसे ग्रामीण की कहानी है जो गांव में आजीविका का प्रबंध नहीं होने पर परदेस जाता है। जिस समय की कहानी कही गयी है, उस समय गांव के लोग बंबई या कलकत्ता जाया करते थे। बिल्लेसुर ने सुन रखा था कि बंबई का पैसा टिकता नहीं, बंगाल का टिकता है अतः बिना टिकट खरीदे कलकत्ता जाने वाली रेल में बैठ जाता है और रास्ते में कई बार उतारे जाने के बाद अंत में कलकत्ता तथा फिर बर्दबान पहुंच जाता है। गांव का आदमी अपनी मातृभूमि को भूल नहीं पाता, उसकी जड़ें अपनी जमीन से जुड़ी रहती हैं। अतः शहर में कुछ समय रहने और अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के बाद वह पुनः अपने गांव में लौट आता है। वह शहर की कृत्रिम तथा तेज ज़िन्दगी से इतना तंग हो जाता है कि यदि संभव हुआ तो शहर लौटने का नाम नहीं लेता। बिल्लेसुर ऐसे ही व्यक्तिय का प्रतिनिधि है।

निराला ने ग्रामीण जीवन और वातावरण की यथार्थता बनाए रखने के लिए पात्रों के नाम भी गंवारू ही रखे हैं। मन्नी, ललई, बिल्लेसुर, दुलारे या फिर उनके प्यार के नाम गप्पू, भूरु, बिल्लू और कटुआ। बर्दवान में जाकर बसा वहां के राजा का जमादार सत्तीदीन का नाम भी ग्रामीण ढंग

का है। त्रिलोचन तथा दीनानाथ अपेक्षाकृत शुद्ध नाम हैं। गाँव में पालतु पशुओं के नाम रखे जाते हैं। बिल्लेसुर अपनी बकरियों के नाम गाँव के लोगों के नामों पर रखता है – गंगा, जमुना, सरजू, पारवती, सेखाइन, जमीला, गुलबिया, सितविया; रमुआ, स्यमुआ, भगवतिया, परभुआ, टुरुई, और दिनवा।

पात्रों की वेशभूषा विशेषतः औपचारिक अवसरों पर विशिष्ट हो जाती है। उसका संकेत लेखक ने मन्नी और बिल्लेसुर की पोशाक से दिया है। मन्नी बैंगनी साफा बांधे ससुराल से लौटता है। बिल्लेसुर के ससुराल जाने से पूर्व की तैयारी का यह दृश्य देखिए, "मोजे के नीचे तक उतारकर धोती पहनी, फिर कुर्ता पहनकर चारपाई पर बैठे, साफा बांधने लगे।" बांधकर एक दफे फिर उसी तरह दरपन देखा और तरह-तरह की मुद्राएं बनाते रहे। फिर जेब में छोटा-सा दरपन और गले में मैला अंगोछा और धुस्सा डालकर लाठी उठायी। जूते पहले के ले लवाये रक्खे थे, पहन लिये।" इसी प्रकार विशेष अवसरों पर उनके भोजन का चित्र मन्नी की सास की आवभगत के अवसर पर प्रस्तुत किया गया है- रोटी, दाल, भात, बैंगन की भाजी, आम का अचार, बकरी का गरम दूध और शक्कर परोसकर पाटा डालकर पानी रखकर सास से कहा, "अम्मा, चलो, भोजन कर लो।"
देहात में खेती और पशुपालन दो व्यवसाय प्रमुख हैं। 'बिल्लेसुर बकरिहा' में दोनों के चित्र हैं। तो संक्षिप्त, पर उनसे पाठक को इन दोनों व्यवसायों की जानकारी हो जाती है। गांव लौटने के बाद बिल्लेसुर पहले खेती करने का विचार करता है, पर उसके पास न अपना हल है न बैल। वह अपना खेत अधबटाई पर दे देता है। उसके पास गाय खरीदने के लिए भी पर्याप्त धन न था, इसलिए वह बकरी पालने का निश्चय करता है। बिल्लेसुर के बकरी पालन के कई चित्र उपन्यास में हैं। गांव का आदमी जब अपने ढोर चराने जाता है तो चारागाह में या जंगल में उन्हें स्वतंत्र छोड़ देता है और उसके पशु इतमीनान से चरते रहते हैं। लेकिन वह उनकी तरफ से असावधान नहीं रहता। पहचान के लिए वह अपने पशुओं के नाम रख लेता है और संध्या के समय वापस लौटने से पहले उन्हें गुहार लगाता है, उनकी गिनती करता है। गुहार लगाने का भी उनका अपना एक अलग ढंग होता है। बिल्लेसुर जब देखता है कि उसका एक बकरा 'दीनू' गायब है तो वह अपने लहजे में पुकारता है "उर् र् र्, उर् र् र्, दिनवा अले-अले उ र् र् र्। आव-आव दिनवा। उर् र् र्, उर् र् र् बेटा दीनानाथ, उर् र् र्।"

गांव के लोग बकरी का दूध नहीं पीते। केवल बीमार लोगों में ही वह बिकता है। बिल्लेसुर को भी यह कठिनाई होती है। जब दूध न बिका तो उसका खोया बनाकर बेचने का प्रयास किया। जब वह काम भी नहीं चला तो दूध से घी बनाना शुरू किया। बकरी के दूध से बने घी में भैंस का घी मिलाकर सस्ते दाम में घी बेचना शुरू किया। निराला ने उपन्यास में ग्रामीण व्यवसायों का चित्रण किया है। बिल्लेसुर बर्दमान में गाय की देख रेख करता है। अपने गाँव आने के बाद बकरी

पालता है। हलवाहे, मजदूर का धन्धा करता है। गडरिये के साथ-साथ वह किसानी में भी अपने हाथ आजमाता है। बिल्लेसुर की किसानी का वर्णन करते हुए लेखक ने खेती करने के मौसम और बैल न होने पर फावड़े से खेत गोड़ने का वर्णन किया है –

"पानी का गहरा दौंगरा गिर चुका था। ज़मीन गीली हो गई थी। ताल-तलैयाँ, गड़ही-गढ़े बहुत-कुछ भर चुके थे। कपास, धान, अगमन ज्वार-बाजरे, अरहर, सनई, सन, लोबिया, ककड़ी-खीरे, मक्की, उरद आदि बोने के लोभी किसान तेज़ी से हल चला रहे थे। किसानी के तन्त्र के जानकार बिल्लेसुर पहली वर्षा की मटैली सुगन्ध से मस्त होते हुए मौलिक किसानी करने की सोचते अपनी इसी धुन में बकरियों को लिये चले जा रहे थे। उन बँटाई उठाये खेतों में एक खेत ख़ूद-काश्त के लिए ले लिया था। बरसातवाली किसानी में मिहनत ज़्यादा नहीं पड़ती। एक बाह दो बाह करके बीज डाल दिया जाता है। वर्षा के पानी से खेती फूलती-फलती है। बैल नहीं है, अगमन जोतने-बोने क लिए कोई माँगे न देगा। बिल्लेसुर ने निश्चय किया कि छः सात दिन में अपने काम भर की ज़मीन वे फावड़े से गोड़ डालेंगे। गाँव के लोग और सब खेती करत है, शकरकंद नहीं लगाते। इसमें काफ़ी फ़ायदा होगा। फिर अगहन में उसी खेत में मटर बो देंगे। जब शकरकन्द बैठेगी, रात को ताकना होगा, तब किसी को कुछ देकर रात को तका लेंगे। एक अच्छी रक़म हाथ लग जायगी।" XXX "वर्षा की मटैली सुगन्ध के नथनों में प्रवेश होते ही उन्होंने शकरकंद की खेती करने का निश्चय किया, जो गांव वालों ने कभी नहीं की थी। हल-बैल न होने के कारण वह संवेरा होते ही फावड़ा लेकर खेत में जुट गये। फावडे से खेत गोड़ा, दुपहर होते-होते काफी जगह गोड ली। हिम्मत और उत्साह बढ़ा तो सात दिन की बजाय पांच दिन में खेत का वह हिस्सा गोड डाला जहां शकरकन्द उगानी थी। खेत से माटी निकाल ली और फिर एक दिन शकरकन्द की बौंडी ले आये। पानी बरसने और शकरकन्द की बौंडी के फैलने के साथ बिल्लेसर आलू की जैसी मेंड़ों पर मिट्टी चढाने लगे।" इस प्रकार 'बिल्लेसर बकरिहा' में गांव के दो मुख्य व्यवसायों-खेती तथा पशु-पालन की पर्याप्त जानकारी का परिचय दिया गया है।

गांव का वातावरण प्रस्तुत करने में भी लेखक अत्यन्त सफल रहा है। गांव के टूटे-फूटे मकान, गलियारे, मन्दिर, चबूतरा, कुंआ, खेत, बाग चरागाह, प्रातः-संख्या सभी के चित्र सजीव एवं प्रामाणिक हैं। चारागाह का यह दृश्य देखिए, "मन्नु का पक्का कुंआ आया। गलियारे में ही खड़े-खड़े लग्गा बढ़ाकर गलियारे पर आती पीपल की निचली डाल से टहनियां छांटने लगे। टहनियों के गिरते ही बकरियां पत्तियों से जुट गईं। जरूरत-भर लच्छियां छांटकर लग्गा डाल के सहारे खड़ा

कर बिल्लेसुर कुएं की जगत पर चढ़कर बैठे, बकरियों को देखते हुए। सामने पड़ती ज़मीन थी। बगल में एक बरसाती नाला निकला था। चरवाहे लड़के वहीं ढोर लिए इधर-उधर खड़े थे।"

निराला छायावादी कवि थे और उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति का मानव-सापेक्ष चिंत्रण किया है। यही प्रवृत्ति 'बिल्लेसुर बकरिहा' में भी प्रतिलक्षित होती है। बकरे के खो जाने पर बिल्लेसुर की मनोदशा के अनुरूप प्रकृति का चित्र उकेरा गया है, "सूरज डूब गया। बिल्लेसुर की आंखों में शाम की उदासी छा गई। दिशाएं हवा के साथ-साथ सांय-सांय करने लगीं। नाला बहा जा रहा था जैसे मौत का पैगाम हो। लोग खेत जोतकर धीरे-धीरे लौट रहे थे, जैसे घर की दाढ़ के नीचे दबकर, पिसकर मरने के लिए, चिड़ियां चहक रही थीं अपने-अपने घोंसलों की डाल पर बैठती हुई, रो-रोकर साफ कह रही थीं, रात को घोंसले में जंगली बिल्ले से हमें कौन बचाएगा. ?"

लेखक ने बिल्लेसुर के विवाह के अवसर पर गांव वालों के सहयोग की चर्चा कर गांव वालों के सौहार्द्र की प्रशंसा भी की है-नाई, कहार, दर्जी, बेहना, चौकीदार, चमार, गंगावासी, भट्ट जी यहां तक कि स्वयं जमीदार उनकी देहरी पर पैर रखता है, अपना घोड़ा देने का प्रस्ताव करता है, बैलगाड़ी से शहर से सामान मंगवाने की पेशकश करता है। गांव के बाजदार डोम और परजा बिल्लेसुर को आ-आकर घेरने लगते हैं। बिल्लेसुर भी इससे प्रसन्न होता है।

गांव के लोग परम्परावादी होते हैं, धर्म में उनकी अंध श्रद्धा होती है, वे धर्म--भीरू तथा रूढ़िवादी होते हैं। इन सब की झांकी भी हमें 'बिल्लेसुर बकरिहा' में मिलती है। भाग्यवादी, ईश्वर को दीनबन्धु मानने वाले देवी-देवता को प्रसन्न रखने के लिए तरह-तरह के विधि-विधान करते है-तंत्र-मंत्र, कुंडली, पूजा-पाठ, मनौती मनाने में उनकी दृढ़ आस्था है। सत्तीदीन की स्त्री संतान न होने पर जगन्नाथपुरी की यात्रा करती है, जगन्नाथजी के दर्शन कर मनौती मनाने की बात सोचती है, "बाबा के दर्शन करूँ और कहूँ, बाबा मेरी गोद भर दो तो तुम्हारे चरणों में एक सौ एक रुपये की शिरन चढ़ाऊं। मेरा जी कहता है बाबा मेरी मनोकामना पूरी करेंगे। देश-देश के लोग जाते हैं। मुंहमांगा वरदान उन्हें मिलता है।"

इस प्रकार तत्कालीन ग्रामीण जीवन में सर्वत्र फैले हुए धार्मिक अंध-विश्वान और रूढ़िवाद का सजीव चित्र प्रस्तुत कर लेखक ने ग्रामीण जीवन को साकार कर दिया है। साथ ही उन्होंने इसके विरूद्ध उगते पनपते विद्रोह के संकेत भी दिये हैं-बिल्लेसुर ब्राह्मण होते हुए भी बकरी पालन

का व्यवसाय करते हैं और उसके लिए उनके मन में जो तर्क उठते हैं वे उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण के परिचायक हैं।

बोध प्रश्न

- आजीविका के लिए लोग किन शहरों को जाना पसंद किया करते थे?
- बिल्लेसुर ने अपनी बकरियों के क्या नाम रखे थे?
- बकरी का दूध कौन पीते हैं ?
- पं. सत्तीदीन और उसकी पत्नी संतान की कामना लेकर कहाँ जाते हैं?

6.3.5 बिल्लेसुर बकरिहा का उद्देश्य

प्रिय छात्रो, निराला द्वारा रचित उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' के प्रथम और दूसरे संस्करण की भूमिकाओं से उसके लेखन का उद्देश्य के स्पष्ट होता है। उपन्यासकर ने प्रथम संस्करण की भूमिका में उसे 'हास्य लिए एक स्कैच' कहा है और दूसरे संस्करण के निवेदन में 'प्रगतिशील साहित्य का नमूना।' रचना को पढ़ते समय भी लगता है कि लेखक ने बड़े साधारण, सरल ढंग से एक व्यक्ति का, उसके परिवेश का, उसके जीवन-संघर्ष का तटस्थता के साथ यथार्थ-चित्रण किया है। फिर भी लेखक के जीवन की परिस्थितियां तथा जीवन-दर्शन कृति में दिखाई देते हैं।

'बिल्लेसुर बकरिहा' में निराला ने समाज का जो चित्र प्रस्तुत किया गया है उसमें एक ओर समाज की विसंगतियों और विरूपताओं-धार्मिक अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, गाँव वालों के चारित्रिक दोषों आदि की झांकी मिलती है और दूसरी ओर पात्रों के द्वारा विद्रोह कराकर लेखक ने पाठकों को जागरूक बनाना प्रयास किया है, उनमें प्रगतिशील चेतना फूंकको कोशिश की है। निराला ने धर्म के पाखंडों का भंडाफोड़ किया है। जगन्नाथ जी के दर्शन करके भी, मनौती मानने पर भी सत्तीदीन की पत्नी को संतान नहीं होती, प्रतिदिन महावीर जी के चरणों में साष्टांग प्रणाम कर तथा बकरियों की कल्याण-कामना करने पर भी बिल्लेसुर के बकरे की हत्या हो जाती है। बिल्लेसुर गुरुमंत्र लेकर भी, गुरु-सेवा करके भी अपनी नौकरी पक्की नहीं करा पाता। इन घटनाओं के माध्यम से उपन्यासकार ने धर्माडंबर और रूढ़िवाद पर प्रहार किया है।

उपन्यास में रचनाकार ने पात्रों के विद्रोही का चित्रण भी किया है। बिल्लेसुर ब्राह्मण होकर भी बकरी-पालन का व्यवसाय करता है, खोया और घी बनाकर बाजार में बेचने जाता है, बाद में खेती करता है। उस समय ब्राह्मण के लिए बकरी पालना एक क्रान्तिकारी कदम था। सत्तीदीन की पत्नी बेटा न होने पर देवता से रुष्ट होकर, दिव्य शक्ति की उपासना त्याग कर मनुष्य की शक्ति का सहारा लेने की सोचती है। बकरे की हत्या पर भगवान से रुष्ट होकर बिल्लेसुर देवमूर्ति के सामने

उसे बुरा-भला ही नहीं कहता, अपने डंडे के प्रहार से उसे तोड़ भी देता है, "मैं इसलिए तेरे पास आता था, और कहता था मेरी बकरियों और बच्चों को देखे रहना। क्या तूने रखवाली की, बता थूथन-सा मुँह लिए खड़ा है बिल्लेसुर ने आँखों से आँखें मिलाये हुए महावीर जी के मुँह पर वह डंडा दिया कि मिट्टी का मुँह गिल्ली की तरह टूटकर बीघे भर के फासले पर जा गिरा।"

निराला का स्वस्थ जीवन-दर्शन इसमें है। वह बिल्लेसुर द्वारा कर्मशक्ति के महत्त्व की स्थापना करते हैं। वह बताना चाहते हैं कि जीवन कुछ नहीं, एक अनवरत दीर्घ संघर्ष है और जो इस संघर्ष में निर्भय होकर, धैर्यपूर्वक बाधाओं को सहिष्णुता और साहस के साथ झेलते हुए कर्म करता है, परिश्रम तथा उद्यमशीलता का परिचय देता है, वही विजय प्राप्त करता है।

बिल्लेसुर का जीवन-संघर्ष और अंत में उसकी विजय दिखाकर लेखक यही संदेश देता प्रतीत होता है। लेखक का संदेश प्रत्यक्ष रूप से प्रकट न होकर बिल्लेसुर के व्यक्तित्व और कर्म में इतने सशक्त ढंग से अभिव्यक्त हुआ है कि उसका प्रभाव पड़ता ही है। आरंभ में साधनहीन बिल्लेसुर अंत में अपने कठोर परिश्रम, अटूट लगन, उत्साह, धैर्य, साहस, सहिष्णुता तथा व्यवहार कुशलता से सारी बाधाओं को पार कर अपनी गृहस्थी बसा लेता है। अतः लेखक अप्रत्यक्ष रूप से कहता है- यदि सफलता पानी है तो बिल्लेसुर के समान बनो, हीनता तथा पराजय-भावना छोड़ो, कठोर परिश्रम करो, आँखें खुली रखो, दुनिया के दाव-पेंचों को समझो, अपने मन की बात अपने मन में रखो, 'एक ला चलो', बल में बल अपना बल, का मंत्र जपते हुए, तथ्य पर दृष्टि गढ़ाये सतत कर्म करते रहो।

बोध प्रश्न

(1) निराला ने किसका भंडाफोड़ किया है?

(2) 'बिल्लेसुर बकरिहा' के प्रथम की भूमिकाओं से लेखक ने क्या कहा है?

6.3.6 बिल्लेसुर बकरिहा की भाषा-शैली

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास में गंवई भाषा का प्रयोग किया है। गांव का नाम, गांव का प्राकृतिक वातावरण वर्णन और पात्रों के बीच बातचीत में गाँव की रोज-मर्रा की बोलचाल की भाषा का प्रयोग मिलता है – “जल्दी-जल्दी सत्तू खाकर बिल्लेसुर उठे। पनाले के पास बैठकर हाथ धोये, कुल्ले किये, अभ्यास के अनुसार जनेऊ में बँधी ताँबे की दंतखोदनी उठाकर दाँत खरिका किये, फिर कुल्ले किये, और एक डकार छोड़कर सर झुकाये हुए कोठरी के भीतर गये। त्रिलोचन देखते रहे। बिल्लेसुर एक खटोला निकालकर बाहर ले आये।”

इसी प्रकार बिल्लेसुर का विवाह तै हो जाने पर गांव वालों का आचरण बताने के लिए निराला लिखते हैं - "गाँव के बाजदार डोम और परजा बिल्लेसुर को आ-आकर घेरने लगे। खुशामद की चार बातें सुनाते हुए कि घर की सूरत बदली, चिराग़ रौशन हुआ, साल भर में बाप-दादे का नाम भी जग जायगा, पहले सूने दरवाज़े से साँस लेकर निकल जाते थे, अब अड़े रहेंगे, कुछ लेकर टलंगे। संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और हिंदी के प्रकांड विद्वान होते हुए भी सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने इस उपन्यास में विषय के अनुकूल देशकाल व वातावरण के निर्माण में ग्रामीण शब्दावली से युक्त गंवारू भाषा का और खड़ीबोली में बैसवाड़ी बोली के शब्दों का यथावश्यक प्रयोग किया। उपन्यास में सरल और स्वाभाविक, बोलचाल की भाषा है। बीच-बीच में कुछ शब्द ऐसे हैं जो आंचल-विशेष का आदमी ही समझ सकता है। विशेषतः रीति-रिवाजों से संबंधी शब्दावली – "द्वारचार से ब्याह, भाट और बड़हार, बरतौनी तक डेढ़ सौ, दाल में नमक के बराबर भी नहीं।" वाक्य रचना भी सरल है – "बिल्लेसुर की शकरकन्द की बेलें लहलही दिख रही थीं; लोग अन्दाज़ा लड़ा रहे थे कि इतने मन शकरकन्द निकलेगी; बिल्लेसुर छप्पर के नीचे बकरी के दूध में सानकर सत्तू गुड़ खा रहे थे, त्रिलोचन आये। बकरी के बच्चों पर एक झौआ औंधाया था, उस पर चढ़कर बैठने के लिये घूमे।"

बिल्लेसुर बकरिहा की भाषा को पढ़ने पर यह एक आंचलिक उपन्यास जैसा लगता है। इसमें उपन्यासकार ने बड़ी कुशलता के साथ देशज, तद्भव, उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है।

देशज शब्द: इनमें बैसवाड़ी के शब्दों की बहुलता है-लग्गा, धुस्सा, तींगुर, बावली, लागन, डूंडे, गैतल, पाटा, बौंडी, दौंगरा, जपाटे, कठैली, अघाकर, गोड़ना, भेंड़, दंतखोदनी, बरतौनी, बिचवासी, देहरी, धींगरों, चुवाना, टुनकियां, विचारवाना, दुचिंता, ढूह, गामिन, पख, पुजापा, लप्सी आदि।

तद्भव शब्द: अगरासन, आसिरवाद, दरपन, दोख, भेस, अगहन, समंदर, धन, ब्याह आदि।

उर्दू शब्द: इज्जत, ग़र्जमंद, अबोहवा, नसीहत, अंदाज़ा, तौहीन, एतबार, मारफ़त, खुशबू, कायली, इन्साफ़, एकमुश्त, बजादार, इन्साफ, तहलका, शिरकत, शुमार, खौफ आदि।

अंग्रेजी शब्द: टिकट, फ़िलासफ़ी, चेकर, प्लेटफ़ॉर्म, मशीन आदि।

लेखक ने विशेषरूप से ध्यान रखा है कि उपन्यास में अंग्रेजी और अरबी के उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया गया है जो गांव वालों की बोलियों में रच-बस गए हैं। केवल इतना ही नहीं, उनके उच्चारण भी गांव वालों के अनुरूप है। देशज शब्दों का ही नहीं देशज क्रियापदों का प्रयोग भी भाषा को आंचलिक प्रदान करता है। यथा - कुछ रियां की लछियां छांटी, अधिया की मिली है,

पनाले फूटे हों, कंडे की आग परचाकर, दांत खरिका किए, हचकना नहीं, अघाकर सांस छोड़ी, मुस्का बांध कर, थूथन सा मुंह खड़ा कर आदि।

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ: मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अर्थ भाषा को अतिरिक्त सजीवता तथा अभिव्यक्ति को पैना तथा सशक्त बनाता है। 'बिल्लेसुर बकरिहा' हिंदी में सामान्यतः उपयुक्त होने वाले मुहावरों और लोकोक्तियों के अतिरिक्त कुछ ऐसे भी प्रयोग हैं जो केवल बैसवाड़ी क्षेत्र में बोले जाते हैं।

मुहावरे:दूर की कौड़ी लाना, डोरे डालना, नरक कटाना, बांछे खिलना, कान भरना, जली-कटी सुनाना, तींगुर लगना, नाक के बाल उगना, गर्दन नापना, घोड़े मुतवाना, जड़ काटना, पीठ बचाना, पांचों घी में, ढाई चावल का टुकड़ा, कलई खोलना, खाक छानना, सिर उठाना आदि।

लोकोक्ति: बिना गृहिणी घर में भूत डेरा डालते हैं, दूधों पूतों फलना, होम करते हाथ जलना, पहाड़ खोदने पर चुहिया निकलना।

कहा जा सकता है कि निराला ने 'बिल्लेसुर बकरिहा' में विषय के अनुरूप, ग्रामीण वातावरण का निर्माण करने में सक्षम और पात्रों के शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया है।

शैली की दृष्टि कहा जा सकता है कि लेखक ने यथार्थ के चित्रण में वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग है किंतु उपन्यास में प्रधानता चित्रात्मक एवं हास्य-व्यंग्य शैली की है। उपन्यास के आरंभ में जहां बिल्लेसुर के पिता और उसके भाइयों का इतिवृत्त प्रस्तुत किया गया है वहाँ लेखक ने वर्णनात्मक शैली अपनायी है। पं. सत्तीदीन के यहाँ पहुंचने से लेकर गांव वापसी तक की कथा के लिए लेखक ने वर्णनात्म शैली का प्रयोग किया है लेकिन यथास्थान प्रतीकात्मक शैली का भी प्रयोग मिलता है। हास्य और चित्रण वहां भी जगह-जगह पर गुदगुदाता है।

'बिल्लेसुर बकरिहा' में उपन्यासकार निराला ने पात्रों की वेशभूषा, चाल-ढाल, मुख-मुद्रा और खेत, चारागाह या मकान के बारे में बताते समय सशक्त शब्द चित्र उकेरे हैं। लेखक ने व्यक्ति या स्थान का चित्र साकार कर देता है और पाठक को लगता है कि वह चरित्र व्यक्ति के सामने खड़ा है। मकान का यह चित्र देखिए-मकान के सामने एक अंधा कुंआ और एक इमली का पेड़ है। बारिश के पानी से धुलकर दीवारें ऊबड़-खाबड़ हो गई है, जैसे दीवारों से पनाले फूटते हों। भीरत के पनाले का मुंह भर जाने से बरसात का पानी दहलीज के डेहरी के नीचे गड्ढा बनाकर बहा है। गड्ढा बढ़ता-बढ़ता ऐसा हो गया है कि बड़ा जानवर कुत्ते जैसे आसानी से उसके भीतर से निकल सकते हैं। दहलीज़ का फर्श कहीं भी बराबर नहीं; उनके ऊपर लेटने की बात क्या है, चारपाई भी उस पर नहीं डाली जा सकती। ये पंक्तियाँ पढ़ते समय पाठक सामने गाँव के घर का चित्र साकार हो उठता है।

निराला ने उपन्यास में शब्द चित्रों के माध्यम से हर एक घटना, प्रसंग सजीव कर दिया है। पढ़ते समय प्रत्यक्ष दर्शन का अनुभव होने लगता है। चाहे बकरी चराने का दृश्य हो, चाहे खेत गोड़ने का या शकरकंद बेल चढ़ाने का, चाहे यात्रा करने से पूर्व पूजा करने, पोशाक पहनने और दर्पण में छवि देखने का, चाहे विवाह की रस्मों का आदि के चित्रण में सर्वत्र लेखक ने ऐसी चित्रात्मक शैली अपनायी है, ऐसे शब्द-चित्र प्रस्तुत किये हैं कि सम्पूर्ण दृश्य, सारी घटना साकार हो उठती है।

'बिल्लेसुर बकरिहा' का मुख्य आकर्षण है उसका हास्य व्यंग्य। लेखक ने स्वयं इसे 'हास्य के लिए स्कैच' कहा है। वैसे तो संपूर्ण रचना ही हास्य शैली में प्रस्तुत की गयी है। कुछ स्थल तो हास्य के कारण बहुत ही मनोरंजक बन गए हैं। आरंभ में ही बिल्लेसुर के नामकरण जैसी सामान्य बात को असामान्य हास्यमय ढंग से प्रस्तुत किया गया है, उसकी जाति का वर्णन भी हास्यमय शैली में है, "बिल्लेसुर जाति के ब्राह्मण 'तरी के सुकुल' हैं। बकरीवाले के पुत्र बकरिहा नहीं। लेकिन तरी के सुकुल को संसार पार करने की तरी नहीं मिली।" यहां 'तरी' शब्द में यमक के द्वारा हास्य उत्पन्न किया गया है। पात्रों के वार्तालाप में भी हास्य है और उसके आचरण द्वारा भी हास्य उत्पन्न किया गया है। हास्य की सृष्टि के लिए प्रायः अतिशयोक्ति का सहारा लिया जाता है। निराला ने भी यही किया है, "सास को दिखाने के लिए बिल्लेसुर रोज़ अगरासन निकालते थे। अगरासन निकालने से पहले लोटे का पानी लेकर तीन दफे थाली के बाहर चुवाते हुए घुमाते थे। अगरासन निकाल कर टुनकियां देते हुए लोटा बजाते थे और आंखें बंद कर लेते थे।" इस रचना के हास्य की एक विशेषता यह भी है कि वह किसी व्यक्ति विशेष पर न होकर परिस्थिति तथा जीवन की विसंगतियों पर है। उनके हास्य में संयम है, वह अट्टहास नहीं बनता, केवल ओठों पर मुस्कान लाता है।

निराला के व्यंग्य के छींटे किसी को नहीं बख्शते। साहित्यकार, ढपोलसंखी नेता, धार्मिक रूढ़ियों पर उपदेश कुशल लोग सभी उनके व्यंग्य-बाणों का शिकार हुए हैं। पुस्तक के आरंभ में ही व्यंग्य है- हिंदी भाषा साहित्य में रस का अकाल है, पर हिंदी बोलनेवालों में नहीं, उनके जीवन में रस की गंगा-जमुना बहती है। बीसवीं सदी साहित्य की धारा उनके पुराने जीवन में मिलती है। उदाहरण के लिए, अकेला बिल्लेसुर का घराना काफी है। बिल्लेसुर चार भाई आधुनिक साहित्य के चारों चरण पूरे करते हैं।" इसी तरह धार्मिक अन्धविश्वास करने वालों पर यह व्यंग्य देखिए, "जब एक साल तक पुत्र-विषय में बाबा जगन्नाथजी ने कृपा न की तब सत्तीदिन की स्त्री का देवता पर कोप चढ़ा और वे दिव्य शक्ति को छोड़कर मनुष्य शक्ति की पक्षपातिनी बन गई, यथार्थवादी लेखक की तरह।" यहाँ यथार्थवादी लेखक भी व्यंग्य की चपेट में आ गए हैं।

'बिल्लेसुर बकरिहा' में बिल्लेसुर का जीवन ही समाज पर व्यंग्य है। निराला की व्यंग्योक्तियों में प्रायः इतना गूढ़ अर्थ छिपा रहता है कि लक्षणा-व्यंजना द्वारा वह पैना तथा परिष्कृत हो जाता है। लेखक ने हास्य-व्यंग्य की सृष्टि के लिए निम्नलिखित युक्तियाँ अपनायी हैं- (1) सामान्य बात को असामान्य बनाकर कहना (2) सामान्य बातों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करके (3) साधारण घटना का सामयिक प्रसंगों से सम्बन्ध स्थापित करना तथा (4) साधारण विषय के लिए असम्बद्ध विशिष्ट उपमान जुटाना। हास्य-व्यंग्य की सृष्टि करना इस रचना का साध्य नहीं, केवल साधन है। लेखक ने इस हथियार के द्वारा समाज की विसंगतियों, कुरूपता तथा विषमताओं पर प्रहार किया है।

कहा जा सकता है कि 'बिल्लेसुर बकरिहा' की शैली से पता चलता है कि निराला की अभिव्यक्ति कितनी सक्षम है तथा उसमें विषय के अनुरूप स्वयं को ढालने की कितनी शक्ति है। इसी क्रम में यह भी कहना सही होगा कि निराला ने खेती की, बकरी पालन की, दूध बेचने की, ग्रामीण जीवन की दिनचर्या की, लोक संस्कार व लोकचार की, गाँव में उपलब्द विभिन्न कार्यक्षेत्रों की शब्दावली का प्रयोग कर बिल्लेसुर बकरिहा के रूप में एक भाषिक कालकृति का सृजन किया है।

बोध प्रश्न

- निराला की व्यंग्योक्तियों में क्या छिपा रहता है और उससे क्या हो जाता है?
- 'बिल्लेसुर बकरिहा' का मुख्य आकर्षण क्या है?
- लेखक द्वारा प्रयुक्त तीन मुहावरे और तीन लोकोक्तियाँ लिखिए।

6.4 पाठ सार

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने ग्रामीण जीवन की जटिलताओं और संघर्षों को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। बिल्लेसुर, एक गरीब ब्राह्मण है, जो ब्राह्मणों के रूढ़िवाद से मुक्त है। गरीबी से उबारने के लिए वह बर्दमान शहर जाता है और लौटकर बकरियाँ पाल लेता है। वह बिरादरी के दबाव और जातिवाद की परवाह किए बिना अपना जीवन बनाता है। जब गाँव में उसकी समृद्धि की खबर फैलती है, तो उसका जाति-बहिष्कार समाप्त हो जाता है। बिल्लेसुर का विद्रोही दृष्टिकोण और कर्मठता समाज की पारंपरिक सोच के खिलाफ एक संदेश देता है कि जाति और परंपराएँ केवल एक दिखावा हैं, जो आर्थिक असमानता के कारण उत्पन्न होती हैं।

पं. सत्तीदीन सुकुल उपन्यास के महत्वपूर्ण सहायक पात्र हैं। वे बिल्लेसुर के जीवन में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं और उस समय के ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और व्यवहारकुशल कारिन्दों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी पत्नी, जो अवसरों का लाभ उठाने वाली बुद्धिमान महिला है, बिल्लेसुर के जीवन को एक मोड़ देती है। वहीं, त्रिलोचन एक स्वार्थी और चालाक पात्र है, जो पैसे के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। मन्नी की सास एक संघर्षशील विधवा है, जो अपनी परिस्थितियों के बावजूद अपने बच्चों के लिए संघर्ष करती है।

निराला ने संवादों की सरलता और स्वाभाविकता के माध्यम से ग्रामीण जीवन को यथार्थवादी रूप से प्रस्तुत किया है। इन संवादों में पात्रों की मानसिकता, सामाजिक स्थिति और स्वभाव का चित्रण किया गया है। उपन्यास में उन्होंने ग्रामीण समाज के धार्मिक अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। 'बिल्लेसुर बकरिहा' केवल ग्रामीण जीवन का चित्रण नहीं, बल्कि इसमें बदलाव और सुधार की उम्मीद भी दिखायी जाती है, जिससे यह प्रगतिशील सोच की दिशा में एक कदम है।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के कथा कथन के कौशल से परिचय प्राप्त होता है।
2. उपन्यास में भारतीय समाज की संरचना, उसकी जटिलता और जाति आधारित सामाजिकता रेखांकित हुई है।
3. समाज में शोषण से मुक्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है, वह है लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना।
4. उपन्यास की कथा से यह स्पष्ट होता है कि कोई काम बड़ा या छोटा नहीं होता है। सफलता के लिए लगन से काम करने की आवश्यकता है।
5. ग्रामीण जीवन से जुड़े विभिन्न व्यवसायों व क्रियाकलापों की शब्दावली से परिचय प्राप्त होता है।

6.6 शब्द संपदा

1) समावेश : मिलना, साहचर्य, एक साथ या एक जगह रहना
2) 'तरी' के सुकुल : निचली जमीन के मालिक या किसान
3) रूढ़िवाद : पुराने रीति रिवाज या परंपराएँ
4) यथार्थवाद : वास्तविकता, एक साहित्यिक और कलात्मक धारा है, जिसका

उद्देश्य जीवन और समाज की वास्तविकताओं को बिना किसी अतिशयोक्ति के दिखाना

5) आजीविका : वृत्ति, रोजी, रोजगार, जीवन का सहारा

6) वृत्तान्त : किसी बीती हुई बात या घटी हुई घटना का विवरण, समाचार

7) शकरकंद : एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद, यह साधारणतः सूखी जमीन में बोया जाता

8) मितभषिता : संयमित होकर बोलना। समझ बूझ के साथ थोड़ा बोलने की क्रिया

9) कारिन्दा : दूसरे की और से काम करने वाला, कर्मचारी, गुमाश्ता

10) कथोपकथन : बातचीत, गुफ्तगू, वाद- विवाद, संवाद

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

(1) निराला द्वारा रचित उपन्यास बिल्लेसुर बकरिहा का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(2) बिल्लेसुर बकरिहा के पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(3) बिल्लेसुर बकरिहा में प्रयुक्त भाषा-शैली पर विचार व्यक्त कीजिए।

(4) संवाद योजन के आधार पर बिल्लेसुर बकरिहा की विशेषताएँ बाताइए।

(5) बिल्लेसुर बकरिहा में चत्रित देशकाल व वातावरण का वर्णन कीजिए।

खंड (ब)

(ब) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

(1) बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास का उद्देशय क्या है?

(2) बिल्लेसुर बकरिहा प्रयुक्त शब्दावली पर टिप्पणी लिखिए।

(3) निराला ने हास्य व्यंग्य की सृष्टि करने के लिए किन युक्तियों का प्रयोग किया है, उदाहरण के साथ लिखिए।

(4) बिल्लेसुर बकरिहा के मुख्य पात्र बिल्लेसुर की विशेष गुणों की चर्चा कीजिए?

(5) बिल्लेसुर के भाइयों के बारे में टिप्पणी लिखिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. बिल्लेसुर के पिता का नाम क्या है -

(अ) मुक्ता प्रसाद (आ) प्रसाद (इ) दुर्गा प्रसाद (ई) त्रिलोचन

2. बिल्लेसुर का जो बकरा खो जाता है, उसका नाम है -

(अ) भगवतिया (आ) परभुआ (इ) टुरुई (ई) दिनवा

3. बिल्लेसुर काम की तलाश में किस शहर जाता है?

(अ) बंबई (आ) कलकत्ता (इ) बर्दमान (ई) जगनाथपुरी

4. पं. सत्तीदीन और उसकी पत्नी किस कामना से जगननाथपुरी जाते हैं?

(अ) घर (आ) संतान (इ) नौकरी (ई) पदोन्नति

5. बिल्लेसुर ने अपना खेत किससे जोता -

(अ) बैलों से (आ) गाय से (इ) फावड़े से (ई) भैंस से

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. बिल्लेसुर एक..................... ब्राह्मण है।

2. बिल्लेसुर के पिता का निधन उसकी ....अवस्था में हो गया था।

3. शुरुआत में गाँववाले उसकी .... और ....का मजाक उड़ाते हैं।

4. बिल्लेसुर का एक और बड़ा गुण उसकी .... है।

5. मन्नी की सास का व्यवहार .... और .... से भरा होता है।

III. सुमेल कीजिए –

1. पं.सत्तीदीन	(अ) बिलुआ
2. मन्नी	(आ) मर्रा
3. ललई	(इ) कटुआ
4. बिल्लेसुर	(ई) खजांची
5. दुलारे	(ऊ) गप्पू

6.7 पठनीय पुस्तकें

1) दुर्गा सिंह, निराला का कथा साहित्य
2) डॉ. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना-1,2,3
3) डॉ. ऋषभदेव शर्मा, कथाकारों की दुनिया
4) https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2010116.pdf
5) https://www.erpublications.com/uploaded_files/download/_ZngBp.pdf
6) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, Wikipedia
7) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, बिल्लेसुर बकरिहा, उपन्यास
8) https://sameergoswami.com
9) https://www.youtube.com/@KahaniSuno

इकाई 7 : “चतुरी चमार” - कथासार और वैचारिकता

इकाई की रूपरेखा

7.1. प्रस्तावना

7.2. उद्देश्य

7.3. मूल पाठ: “चतुरी चमार” - कथासार और वैचारिकता

7.3.1 “चतुरी चमार” का कथासार

7.3.1.1 आरंभ

7.3.1.2 विस्तार: विविध घटनाएँ

7.3.1.2.1 लेखक के घर में होनेवाली बैठकें

7.3.1.2.2 अर्जुन का लेखक के सान्निध्य को प्राप्त करना

7.3.1.2.3 चिरंजीवी का आगमन और बदलता परिवेश

7.3.1.2.4 लेखक का शहर प्रवास, देश में आंदोलन और चतुरी की मुक्ति

7.3.1.3 समापन

7.3.2 “चतुरी चमार” में व्यक्त वैचारिकता

7.3.2.1 निम्न जाति के शोषण का विरोध

7.3.2.2 राष्ट्रीय वैचारिकता

7.3.2.3 सामाजिक सौहार्द की भावना

7.3.2.4 भाषायी विचारधारा

7.3.2.5 शैक्षणिक विचारधारा

7.3.2.6 यथार्थवादी दृष्टिकोण

7.3.3 कहानी के शीर्षक का औचित्य

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! सन् 1896 में जन्में सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ एक ऐसे साहित्यकार और व्यक्ति रहें जिन्होंने उनके संपर्क में आनेवाले प्रति एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित किया। वे एक ही साथ सहृदय और विद्रोही दोनों स्वभाववाले थे। ये दोनों ही भावनाएं

उनके साहित्य में दिखाई पड़ती है। निराला जैसा परदुखकातर साहित्यकार हिंदी साहित्य में दूसरा शायद ही कोई हुआ होगा साथ ही साथ उन्होंने कहीं भी परंपरागत रूढ़ियों के बंधन को स्वीकार नहीं किया। स्वयं ब्राह्मण होने के बाद भी उन्होंने जिस प्रकार से समाज के उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, दलित वर्ग को अपने साहित्य का विषय बनाया उससे यही शिक्षा मिली कि साहित्य और साहित्यकार दोनों का प्रधान कर्तव्य है निरपेक्ष रहकर समाज में आदर्श और यथार्थ के बीच में सेतु के रूप में काम करना। "चतुरी चमार" एक ऐसी ही रचना है। 'सखी' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों का पुनर्प्रकाशन "चतुरी चमार" कहानी संकलन के नाम से किया गया। "चतुरी चमार" कहानी का प्रकाशन वर्ष सन् 1945 है। "चतुरी चमार" कहानी के द्वारा निराला ने ऊंच-नीच की कुप्रथा से सतायी गई निम्न जाति को आत्मसम्मान के साथ जीवित रहने की प्रेरणा प्रदान की है। उनकी दलित चेतना भी उनकी इसी विश्वबन्धुता की भावना का ही एक अंश है।

7.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- जाति-भेद और ऊंच-नीच की विडंबनाओं को समझ सकेंगे।
- निम्न जाति में चेतना लाने का एक रास्ता शिक्षा भी है यह स्पष्ट हो जाएगा।
- निराला की लेखन शैली कैसे समाज की विडंबनाओं और इंसानियत के महत्व को एक साथ सामने रखती है यह जन सकेंगे।
- "चतुरी चमार" के जीवन के संघर्ष, साहस से परिचित हो सकेंगे।

7.3. मूल पाठ : "चतुरी चमार" - कथासार और वैचारिकता

7.3.1 "चतुरी चमार" का कथासार-

"चतुरी चमार" 'निराला' के द्वारा रचित प्रसिद्ध रचना है। प्रस्तुत कहानी को लेखक ने निराला ने आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। कहानी जहाँ से प्रारम्भ हुई है वहाँ लेखक ने "चतुरी चमार" का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा है 'चतुरी चमार' से लेखक का परिचय नवीन नहीं है बल्कि पुश्तैनी है। गाँव के रिश्ते में "चतुरी चमार" उनका भतीजा लगता है। वैसे तो चतुरी जूते बनाता है लेकिन उसकी मजबूत कारीगरी के समान ही उसका साहित्यिक ज्ञान भी सशक्त है। चतुरी को संत साहित्य का बहुत अच्छा ज्ञान था। वह ढोल-मंजीरे के साथ कबीर, सूर, तुलसी के साथ ही साथ ज्ञात-अज्ञात संतों के भजन को गाने में पारंगत है। इन सबके बाद भी वह शोषण का शिकार है। जूते बनाकर वह अपना जीवन किसी प्रकार से चलाता है उसे इस बात का दुख हमेशा रहता है कि जिस जमींदार के कारण से उसे जीवन में अनेक दुख झेलना पड़ा है उसी जमींदार के

सिपाहियों को उसे हर साल एक जोड़ी जूता देना ही पड़ता है। उसे इस बात का भी दुख है कि उसके पास साहित्यिक ज्ञान की कोई कमी नहीं है लेकिन उसने स्कूल, कॉलेज जाकर शिक्षा अर्जित नहीं की है जिस कारण से उसे लिखना-पढ़ना नहीं आता है और मौखिक ज्ञान रखनेवाले को कोई शिक्षित व्यक्ति अपने आप उठने-बैठने योग्य नहीं समझता है। उसे अपनी इस अवस्था का बहुत दुख है इस कारण से वह लेखक को विनती करता है कि लेखक उसके बेटे अर्जुन को पढ़ा दें ताकि वह समाज में उठने-बैठने लायक बन जाए। लेखक चतुरी की बात मान लेते हैं गुरुदक्षिणा के रूप में बाजार से गोश्त लाने और महीने दो महीने में दो दिन चक्की से आटा पिसवा लाने को कह देते हैं चतुरी भी उनकी बात मान लेता है। इस प्रकार से लेखक, अर्जुन को पढ़ाना शुरू कर देते हैं। समय के साथ- साथ अर्जुन की पढ़ाई भी आगे बढ़ती रही। उसने दूसरी पुस्तक को पढ़ना भी प्रारम्भ कर चुका था। घर-परिवार, समाज, गाँव में उसकी एक अलग पहचान पहचान बनने लगी। अब वह मोटा कम नहीं करता था, नाजुक मिज़ाज भी बन चुका था। लेखक इन सब परिवर्तनों से परिचित थे लेकिन स्नेहवश चुप ही रहते थे। इसी समय लेखक ने अपने पुत्र चिरंजीवी को ससुराल से बुला लिया। वैसे तो अर्जुन चिरंजीवी से आयु में कुछ बड़ा ही था लेकिन पद और पढ़ाई दोनों में चिरंजीवी अर्जुन से आगे ही था इस बात का उसे गर्व भी था। लेखक तो अर्जुन को प्रेमवश पढ़ाते थे जिस कारण से उच्चारण की गलतियों को बालसुलभ, वातावरण प्रभावित समझकर भविष्य में सुधर जाएगा इसी आशा के साथ उन्होंने अर्जुन को टोकना उचित नहीं समझा लेकिन चिरंजीवी ने उन्हीं गलतियों को मज़ाक का विषय बना लिया। समस्या उस दिन गंभीर हो गई जिस दिन लेखक ने चिरंजीवी को उसके इस व्यवहार के कारण से उसे डांट दिया। चिरंजीवी ने उसी समय उसे मामा के घर वापस भेज देने को कहा। किसी प्रकार से चतुरी और अर्जुन को समझा-बूझाकर लेखक ने उनके दुख को कम किया।

इसके कुछ समय के बाद लेखक कलकत्ता, बनारस, प्रयाग आदि शहरों की यात्रा करने के बाद लखनऊ के एक होटल में आकार रहने लगे। इसी समय देश में क्रांतिकारी आंदोलन ज़ोर-शोर से आगे बढ्ने लगा। किसानों ने इस आंदोलन में भाग लिया तो जमींदार उन्हें दबाने लगे। लेखक के गाँव तक भी यह आग फैल चुकी थी। चतुरी इस आंदोलन में फँस गया था। उसे कौन बचाता? उसने लेखक से ही सहायता माँगी। लेखक ने बहुत प्रयास किया और कई दिनों के मुक़द्दमे और पेशी के बाद अंतत: चतुरी छूट गया। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

यहीं पर आकर कहानी समाप्त हो जाती है।

बोध प्रश्न

- ''चतुरी चमार'' कहानी को किस शैली में लिखा गया है?
- जूते बनाने के साथ-साथ चतुरी को और किस विषय का ज्ञान था?
- लेखक ने चतुरी से गुरुदक्षिणा के रूप में क्या माँगा?

- लेखक के पुत्र का नाम क्या था?

7.3.1.1 आरंभ- छात्रो! जैसा कि कहानी के कथासार को पढ़ने से आपको ज्ञात हो गया है कि यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो पुश्त दर पुश्त गरीब, लाचार और शोषित है। लेखक ने "चतुरी चमार" की जीवनशैली को वर्णित करते हुए लिखा है, "चतुरी चमार' डाकखाना चमियानी, मौजा गढ़काला, जिला उन्नाव का एक क़दीमी बाशिंदा है। मेरे, नहीं, मेरे पिताजी के बल्कि उनके भी पूर्वजों के मकान के पिछवाड़े, कुछ फ़ासले पर, जहाँ से होकर कई और मकानों के नीचे और ऊपरवाले पनालों का, बरसात और दिन-रात का, शुद्धाशुद्ध जल बहता है, ढाल से कुछ ऊँचे एक बगल 'चतुरी चमार' का पुश्तैनी मकान है'।

इस विश्लेषण से यह पता चलता है कि यह एक साधारण कहानी है लेकिन यह इतनी भी साधारण नहीं है। कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है 'चतुरी चमार' के जीवन के उतार-चढ़ाव को देखकर समझ आता है कि लेखक निराला को उनके समसामयिक परिस्थियों का सर्वांग ज्ञान था। आगे कहानी को विस्तार प्रदान करनेवाली महत्वपूर्ण घटनाओं का विश्लेषण किया जाएगा।

बोध प्रश्न

- चतुरी किस जिले का निवासी था?
- चतुरी किस मकान में रहता था?
- "चतुरी चमार" में किस व्यक्ति के जीवन को दर्शाया गया है?

7.3.1.2 विस्तार: विविध घटनाएँ

7.3.1.2.1 लेखक के घर में होनेवाली बैठक- जैसा कि आपलोगों को समझ में आ गया है कि चतुरी और लेखक का गाँव एक है साथ ही गाँव के रिश्ते से चतुरी लेखक का भतीजा लगता है। इस कारण से लेखक को काफ़ी सारी बातें पता है। लेकिन, जब दो मनुष्य एक साथ कुछ समय, समय बिताते हैं तब दूसरी कई सारी बातों पर अनायास, अकारण ही चर्चाएँ होती हैं। इन चर्चाओं के द्वारा आपसी संबंध और गंभीर बनते हैं। ऐसी ही एक घटना लेखक और चतुरी के बीच का वार्तालाप है। एक शाम लेखक के घर में उन्होंने भजन के कार्यक्रम को रखा। चतुरी ने कबीर पदावली को सुनाना प्रारंभ किया। बीच-बीच में ओजस्विता लाने के लिए चरस की पुट भी चलती रही। आधी रात तक यह कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद चतुरी और लेखक के बीच वार्तालाप होती रही इस वार्तालाप के कारण से चतुरी और लेखक दोनों को एक-दूसरे को और निकट से जानने का अवसर मिला। लेखक ने चतुरी के सामने अपने अकेलेपन की व्यथा सुनाई तो चतुरी ने भी अनपढ़ होने के कारण से कैसे उसे पल-पल शोषण का सामना करना पड़ता है इस व्यथा को लेखक के सामने रख दिया। लेखक और चतुरी के वार्तालाप भले ही उनके व्यक्तिगत

वार्तालाप थे लेकिन उस कथोपकथन के द्वारा तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक गतिविधियों को समझने का अवसर मिलता है। उन दोनों के वार्तालाप के द्वारा कहानी की विकास यात्रा को गति मिलती है। इस वार्तालाप के कारण से ही अर्जुन को लेखक के पास पढ़ने के लिए भेजने का विचार चतुरी के मन में आया और लेखक को भी दूसरों के लिए काम करने का अवसर मिला। इस वार्तालाप के मूल तत्व के रूप में फिर से यह रेखांकित हो गया कि 'शिक्षा का महत्व' कालजयी है।

बोध प्रश्न

- गाँव के रिश्ते से चतुरी लेखक का क्या लगता था?
- अनपढ़ होने के कारण से चतुरी को क्या-क्या सहना पड़ता था?
- किसका महत्व कालजयी है?
- चरस का प्रयोग क्यों किया जा रहा था?

7.3.1.2.2 अर्जुन का लेखक के सान्निध्य को प्राप्त करना- चतुरी के बेटा अर्जुन अब लेखक का विद्यार्थी बन चुका था। लेखक को बाहर का कोई भारी काम करने जाना नहीं होता था जिस कारण से बतौर लेखक, लेखक का घर ही 'House Of Commons' बन चुका था। अर्थात, सारे लोग एक साथ एक ही जगह पर भोजन पकाते और खाते थे। यह सबके लिए आनंददायक क्षण था। अर्जुन एक समझदार विद्यार्थी था बहुत जल्दी वह दादा, मामा, काका, दीदी आदि लिखना सीख चुका था। इससे उसका परिवार भी बहुत खुश था क्योंकि घर में ज्ञान का प्रकाश जल चुका था। सब लोग बहुत उत्साह के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि दो महीने और बीते और अर्जुन 'भैया' भी लिखना सीख जाए।

बोध प्रश्न

- चतुरी के बेटे का क्या नाम था?
- अर्जुन कैसा विद्यार्थी था?
- लेखक का घर क्या बन चुका था?
- सब लोग उत्साह से किस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे?

7.3.1.2.3 चिरंजीवी का आगमन और बदलता परिवेश- चतुरी का बेटा अब लेखक का होनहार विद्यार्थी बन चुका था। आम लगने के मौसम तक उसने दूसरी किताब को पढ़ना भी प्रारंभ कर दिया था। जिस कारण से अब वह नाज़ुक मिज़ाज भी बन चुका था। लेखक के पुत्र चिरंजीवी मामा के घर में रहते थे। इस बार लेखक ने अपने पुत्र चिरंजीवी को भी आम खिलाने की इच्छा से अपने पास बुला लिया। चिरंजीवी 9-10 साल का बालक था। वैसे तो अर्जुन आयु में चिरंजीवी से बड़ा था लेकिन पद और पढ़ाई दोनों में चिरंजीवी आगे था जिस कारण से दोनों में मित्रता का संबंध

बनने के बाद भी मानसिकता का मेल और प्रगाढ़ भावनात्मक संबंध बन पाना संभव नहीं था और ऐसा हुआ भी नहीं। लेखक ने इसे परिलक्षित भी किया था कि, 'मनहुमत्त गजगन निरखि सिंह, किसोरहिं चोप'। लेखक अर्जुन को स्नेह के साथ पढ़ाते थे, अपना समझकर पुत्रवत स्नेह देकर उसकी गलतियों को कभी प्रेम से सुधार देते थे तो कभी इस आशा के साथ नज़रअंदाज़ भी कर देते थे कि भविष्य में सुधार जाएगी। चिरंजीवी के लिए वही गलतियाँ प्रमाद की वस्तु बन गई। इसका असर अर्जुन के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा तो चिरंजीवी का भी चारित्रिक और मानसिक स्खलन होता दिखाई पड़ने लगा। एक दिन बाज़ार से आकर लेखक ने पाया कि चिरंजीवी अर्जुन की गलतियों को लेकर अट्टहास कर रहा है तो अर्जुन अपमान के घूँट पीकर रोने को मजबूर है। अब तो, लेखक को हस्तक्षेप करना ही पड़ा। लेखक ने चिरंजीवी को अर्जुन से क्षमा माँगने को कहा तो चिरंजीवी ने भी उसे मामा के घर भेज देने की बात कह दी। फलस्वरूप चिरंजीवी को मामा के घर भेज देने का प्रबंध कर दिया गया और बहुत परिश्रम के साथ लेखक ने चतुरी और अर्जुन के खोये आत्मविश्वास को वापस लाया।

यह केवल एक घटना नहीं है बल्कि यह घटना बाल मनोविज्ञान को दर्शाने के साथ ही साथ यह भी दर्शाता है कि बच्चों का जीवन बहुत जल्दी सामाजिक कुविचारों और सुविचारों से प्रभावित होता है। लेखक का हस्तक्षेप कहानी के विकास को रोचक और उत्कृष्ट बनाती है।

बोध प्रश्न

- लेखक ने अपने पुत्र को क्यों बुलाया था?
- चिरंजीवी कहाँ रहते थे?
- चिरंजीवी की आयु क्या थी?
- चिरंजीवी के लिए अर्जुन की गलतियाँ क्या बन गई थी?

7.3.1.2.4 लेखक का शहर प्रवास, देश में आंदोलन और चतुरी की मुक्ति- लेखक काफी समय से गाँव में थे लेकिन अब उनको शहर भी जाना था क्योंकि कुछ पुस्तकों का प्रकाशन करवाना था और लेखन के कार्य को को भी आगे बढ़ाना था। बनारस, कलकत्ता, प्रयाग आदि स्थानों में घूमते हुए लखनऊ के होटल में आकर उन्होंने डेरा डाल दिया। यह वह समय था जब देश में स्वाधीनता आंदोलन का दौर तेजी से चल रहा था। किसानों ने झंडागीत के द्वारा स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेना शुरू किया। वैसे तो लेखक के गाँव में से कोई भी किसी उग्र आंदोलन का हिस्सा नहीं था लेकिन फिर भी पुलीस को कौन समझाए कि कौन दोषी और कौन निर्दोष? जिस कारण से गाँव के नेताओं ने गाँव और गाँववासियों के हित के लिए लेखक को गाँव में जाकर रहने का आग्रह करने लगे थे। पहले तो लेखक ने मना कर दिया लेकिन बार-बार गाँव के नेताओं के अनुनय करने पर वे गाँव में जाकर ही रहने लगे और इसका लाभ अवश्य ही गाँव के निवासियों को मिला। थानेदार साहब के प्रश्नों का उत्तर लेखक ने ऐसे दिया कि थानेदार कोई कानूनी गैर-कानूनी आदेश देने से

पहले सोचने को मजबूर होते रहे। लेखक के पास धन-संपत्ति की कमी थी लेकिन सरस्वती की कृपा उन पर बहुत थी। कुछ मामले तो सरस्वती की कृपा के कारण से सुलझ गए लेकिन लगातार चलनेवाली मुकद्दमों में तो गाँववालों का सारा पैसा खर्च हो गया। चतुरी के मुक़द्दमे का समय आया तो वह डर से ही सिकुड़ गया क्योंकि उसे पता था कि गाँव के लोग गवाही नहीं देंगे। लेखक ने चतुरी का साथ नहीं छोड़ा और लेखक के प्रयास से चतुरी ने मुक़द्दमा जीत ही लिया।

यह केवल एक घटना नहीं है इस घटना के द्वारा लेखक और चतुरी का संबंध तो सामने आता ही है साथ ही तत्कालीन देशकाल की जानकारी भी मिलती है।

बोध प्रश्न

- लेखक काफ़ी समय से कहाँ रह रहे थे?
- लेखक को शहर क्यों जाना पड़ा?
- किसानों ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए किस गीत को आधार बनाया?
- गाँव के नेताओं ने लेखक से किस बात की विनती की थी?

7.3.1.3 समापन- "चतुरी चमार" कहानी का समापन सुखांतकी ही है लेकिन इसमें व्यंग्य की पुट भी साफ दिखाई पड़ती है। कहानी के कथोपकथन को देखने से कहानी की व्यंग्यात्मक शैली के द्वारा कैसे लेखक ने पाठकों को तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों के साथ जोड़ दिया है यह स्वत: समझ आ जाती है। जैसे लेखक के द्वारा राजभाषा और राष्ट्रभाषा शब्द के स्थान पर प्रयोग किया गया शब्द विश्वभाषा व्यंग्यात्मक उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हुआ है। 'अब्दुल फज़ल' शब्द का प्रयोग "चतुरी चमार" कहानी में दो बार किया गया है। कहानी के मध्य भाग में एक बार और कहानी के अंत में 'अब्दुल फज़ल' शब्द के प्रयोग को देखा जा सकता है। यह केवल एक शब्द नहीं है बल्कि एक सांकेतिक संदेश देनेवाला शब्द है जिसका अर्थ होता है 'याचिका' या 'petition'.

बोध प्रश्न

- 'चतुरी समापन' का अंत कैसा है?
- कहानी के कथोपकथन में किस शैली को देखा जा सकता है?
- लेखक ने राजभाषा और राष्ट्र भाषा के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग किया है?
- 'अब्दुल फज़ल' शब्द का प्रयोग "चतुरी चमार" कहानी में कितनी बार किया गया है?

7.3.2 "चतुरी चमार" में व्यक्त वैचारिकता- 'निराला' हिंदी साहित्य के छायावादी काव्याधरा के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उन्होंने काव्य रचना के साथ ही साथ अनेक कहानियों,

उपन्यासों, निबंधों की भी रचना की। 'निराला' को केवल साहित्यकार कह देना काफ़ी नहीं है। साहित्यकार तो बहुत हुए हैं लेकिन जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी सकारात्मक रचना करते रहनेवाले साहित्यकार बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। 'निराला' ऐसे ही विरले साहित्यकार हैं। 'निराला' की रचनाओं में उनके व्यक्तित्त्व को देखा जा सकता है। इसी कारण से उनकी रचनाओं में विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं को देखा जा सकता है-

7.3.2.1 निम्न जाति के शोषण का विरोध- ''चतुरी चमार'' कहानी में लेखक ने प्रारंभ से लेकर अंत तक निम्न जाति के शोषण का तीक्ष्ण विरोध किया है। चतुरी के जीवन में कोई भी बात असाधारण नहीं है। उसके जैसे न जाने कितने निम्न वर्ग के लोग हैं जिनके पास योग्यता की कोई कमी नहीं है। लेकिन चतुरी फिर भी असाधारण है क्योंकि उसके पास चेतना है। इसी कारण से चतुरी और उसके काम की प्रशंसा करते हुए लेखक ने लिखा है, 'मेरी इच्छा होती है, चतुरी के लिए 'गौरवे बहुवचनम्' लिखूँ, क्योंकि साधारण लोगों के जीवन-चरित या ऐसे ही कुछ लिखने के लिए सुप्रसिद्ध संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा दिया हुआ आचार्य द्विवेदी जी का प्रोत्साहन पढ़कर मेरी श्रद्धा बहुत बढ़ गई है; पर एक अड़चन है, गाँव के रिश्ते में चतुरी मेरा भतीजा लगता है। दूसरों के लिए वह श्रद्धेय अवश्य है; क्योंकि वह अपने उपानह-साहित्य में आजकल के अधिकांश साहित्यिकों की तरह अपरिवर्तनवादी है। वैसे ही देहात में दूर-दूर तक उसके मज़बूत जूतों की तारीफ़ है'।

इस विश्लेषण के द्वारा लेखक ने निम्न जाति के शोषण का विरोध करने के साथ ही साथ यह भी स्पष्ट कर दिया है कि योग्यता का संबंध जाति, कुल, वंश, धनी, निर्धन आदि किसी के साथ भी नहीं है। किसी भी व्यक्ति को अपने आत्मसम्मान को बचाने का प्रयास अपने आप ही करनी पड़ती है। 'निराला' ने अपने जीवन में तिरस्कार, अपमान आदि को बहुत समीप से देखा था। जिस कारण से उन्हें पता था कि शोषित वर्ग का कष्ट कैसा होता है? ''चतुरी चमार'' कहानी में उनके हृदय की सहानुभूति और करुणा का प्रवाह बह निकला है।

बोध प्रश्न

- ''चतुरी चमार'' कहानी में किसके शोषण का विरोध किया गया है?
- चतुरी को असाधारण उसके किस स्वभाव ने बनाया?
- 'निराला' को अपनी बाल्यावस्था में क्या सहना पड़ा था?
- व्यक्ति को किसे बचाने का प्रयास स्वयं ही करना पड़ता है?

7.3.2.2 राष्ट्रीय वैचारिकता- 'निराला' उस समय के साहित्यकार हैं जब भारत स्वाधीन नहीं हुआ था। परतंत्रता के कष्ट को 'निराला' ने देखा और भोगा था। इसी कारण से उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना की भावना मुखरित होकर सामने आती है। ''चतुरी चमार'' कहानी भी इससे भिन्न नहीं है। लेखक ने अंग्रेजी शासन की हठकारीता का विरोध प्रस्तुत संस्मरण में भी किया है। देश में स्वाधीनता आंदोलन ज़ोरों पर था। उस आंदोलन में सबने भाग लेना शुरू किया तो स्वदेशी जमींदार ही अंग्रेजों के साथ मिलकर अपने ही देश के किसानों का शोषण करने लगे। लेखक ने इस शोषण का विश्लेषण देखिए कैसे किया है-

'कच्चे रंगों से रंगा तिरंगा झंडा महावीर स्वामी के सामने एक बड़े बाँस में गड़ा, बारिश से धुलकर धवल हो रहा था। इन दिनों मुकदमेबाजी और तहक़ीक़ात ज़ोरों से चल रही थी। कुछ किसानों पर, एक साल के हरी-भूसे को तीन साल की बाकी बनाकर, जमींदार साहब ने दावे दायर किए थे, जो अपनी क्षुद्रता के कारण जमींदार आनरेरी मजिस्ट्रेट के पास आकर किसानों की दृष्टि और भयानक हो रहे थे। एक दिन, दरख्वास्तों के फलस्वरूप शायद, दारोगाजी तहक़ीक़ात करने आए। मैं मगरायर डाक देखने जा रहा था। बाहर निकला, तो लोगों ने कहा- "दारोगाजी आए हैं, अभी रहो"। आगे दारोगाजी भी मिल गए। जमींदार साहब ने मेरी तरफ दिखाकर अंग्रेजी में धीरे से कुछ कहा। तब मैं कुछ दूर था, सुना नहीं। गाँववाले समझे नहीं, दारोगाजी झंडे की तरफ जा रहे थे। जमींदार शायद उखड़वा देने के इरादे से जा रहे थे। महावीर जी के अहाते में झंडा देखकर दारोगाजी कुछ सोचने लगे, बोले- "यह तो मंदिर का झंडा है"।

उक्त विश्लेषण, केवल विश्लेषण मात्र नहीं है। एक तरफ तो लेखक ने शोषण के चित्र को प्रस्तुत किया है तो दूसरी तरफ अंग्रेजों ने कैसे धर्म को मुद्दा बनाकर अपने विभाजन की रणनीति को पुष्पित और पल्लवित किया इसका भी नग्न चित्र प्रस्तुत किया है। उस समय भारत की समस्या यह भी थी कि भ्रष्टाचार और निजी स्वार्थ की भावना देशभक्ति की भावना को दबा रहे थे। इस कारण से भी अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ने में समय लगा।

बोध प्रश्न

- लेखक ने ''चतुरी चमार'' कहानी में किसकी हठकारीता का विरोध किया है?
- स्वदेशी जमींदार किसका विरोध कर रहे थे?
- स्वदेशी जमींदार किनके साथ मिलकर किसानों का विरोध कर रहे थे?
- 'निराला' के समय में भारत किन समस्याओं का सामना कर रहा था?

7.3.2.3 सामाजिक सोहार्द की भावना- 'निराला' व्यक्तिगत रूप में ब्राह्मण थे। 'निराला' की विशेषता यह भी रही कि उनमें अपने ब्राह्मन्तव को लेकर कोई कठोरता नहीं थी। 'निराला' ने व्यक्ति, समाज, साहित्य, कला, धर्म, राजनीति सभी क्षेत्रों की कुप्रथाओं को लेकर व्यंग्य किया है। वे धार्मिक दिखावे की भावना को घृणा की दृष्टि से देखते थे। वे मानवता को ही सच्चा धर्म मानते थे। उन्होंने अपने गाँव के 'चतुरी चमार' को लेकर रेखाचित्र को लिखा और उक्त रेखाचित्र का निम्न वक्तव्य-

'उन दिनों बाहर मुझे कोई काम न था, देहात में रहना पड़ा। गोश्त आने लगा। समय-समय पर लोध, पासी, धोबी और चमारों का ब्रम्ह्भोज भी चलता रहा। घृत-पक्व मसालेदार मांस की खुशबू से जिसकी भी लार टपकी, आप निमंत्रित होने को पूछा। इस तरह मेरा मकान साधारण जनों का अड्डा, बल्कि House of Commons हो गया'। और इस वर्णित विश्लेषण का शब्द House of Commons लेखक की सामाजिक वैचारिकता को दर्शाने में सक्षम है। 'निराला' ने केवल दार्शनिकता को दर्शाने के लिए कुछ भी नहीं लिखा। उन्होंने जो भी लिखा अपने मन के पूर्ण विश्वास के साथ लिखा था। भारत में उस समय सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता थी इस बात से वे परिचित थे। ''चतुरी चमार'' रेखाचित्र में 'निराला' ने आवश्यकतानुसार ऐसी मान्यताओं जिनके कारण से सामाजिक सौहार्द्र की भावना नष्ट होती है उनका विरोध व्यक्तिगत स्तर पर किया है-

'बकर कसाई के सलाम का उत्तर देकर बादाम और ठंडाई लेने के के लिए बनियों की तरफ गया। बाज़ार में मुझे पहचाननेवाले न पहचाननेवालों को मेरी विशेषता से परिचित करा रहे थे- चारों ओर से आँखें उठी हुई थीं-ताज्जुब यह था कि अगर ऐसा आदमी है, तो मांस खाना-जैसा घृणित पाप क्यों करता है। मुझे क्षण-मात्र में यह सब समझ लेने का काफ़ी अभ्यास हो गया था। गुरुमुख ब्राह्मण आदि मेरे घड़े का पानी छोड़ चुके थे। गाँव तथा पड़ोस के लड़के अपने-अपने भक्तिमान पिता-पितामहों को समझा चुके थे कि बाबा (मैं) कहते हैं, मैं पानी-पांडे थोड़े ही हूँ, जो ऐसे-गैरे नत्थू-खैरे सबको पानी पिलाता फिरूँ। इससे लोग और नाराज हो गये थे। साहित्य की तरह समाज में भी दूर-दूर तक मेरी तारीफ फ़ैल चुकी थी-विशेष रूप से जब एक दिन विलायत की रोटी-पार्टी की तारीफ करनेवाले एक देहाती स्वामीजी को मैंने कबाब खाकर काबुल में प्रचार करनेवाले, रामचन्द्रजी के वक्त के, एक ऋषि की कथा सुनाई, और मुझसे सुनकर वहीं गाँव के ब्राह्मणों के सामने बीड़ी पीने के लिए प्रचार करके भी वह मुझे नीचा नहीं दिखा सके-उन दिनों भाग्यवश मिले हुए अपने आवारागर्द नौकर से बीड़ी लेकर, सबके सामने दिया-सलाई लगाकर मैंने समझा दिया कि तुम्हारा इस झूठे धुयें से बढ़कर मेरे पास दूसरा महत्व नहीं'। कितनी आसानी

से 'निराला' ने धार्मिक संकीर्णता की तुलना सिगरेट की धुयें के साथ कर दी। यहाँ समझनेवाली बात यह है कि मुद्दा मांसाहार या शाकाहार नहीं है इन मुद्दों को कैसे किसी के धार्मिक आस्था के साथ जोड़ा जा सकता है? प्रश्न यह है। अगर राम में ही आस्था रखनी है तो फिर राम की ही तरह सभी जात-पात, कुल-गोत्र के लोगों को को भी गले से लगाना आना चाहिए। यही तो फिर वास्तविक अर्थ में धार्मिक बनना होगा। 'निराला' अपने तर्कों को लेकर बहुत सचेत थे। केवल विरोध करने के लिए उन्होंने विरोध नहीं किया और जो भी लिखा या कहा उसे स्वयं करके समाज को दिखाया।

'निराला' जिद्दी तो थे लेकिन अहंकारी नहीं थे। अपने संपर्क में आनेवाले किसी भी प्रकार के व्यक्ति को चाहे वे शिक्षित हो या अशिक्षित उन्हें वे अपने व्यक्तित्व से, अपनी उदार चरित्र से प्रभावित कर ही देते थे। ''चतुरी चमार'' के साथ भी उनका ऐसा ही सौहाद्र्रपूर्ण संबंध था। चतुरी अपनी विकट परिस्थिति में लेखक के ही शरणापन्न होता है, 'चतुरी को मदद की आशा न रही। गाँववालों ने चतुरी आदि के लिए दोबारा चंदा न लगाया।

चतुरी सुखकार मेरे सामने आकर खड़ा हुआ। मैंने कहा- "चतुरी, मैं शक्ति-भर तुम्हारी मदद करूँगा"।

"तुम कहाँ तक मदद करोगे काका"? चतुरी जैसे कुएं में डूबता हुआ उभड़ा।

"तो तुम्हारा क्या इरादा है"? उसे देखते हुए मैंने पूछा।

"मुक़द्दमा लड़ूँगा। पर गाँववाले डर गए हैं, गवाही न देंगे"।

दिल से बैठा हुआ चतुरी बोला।

उस परिस्थिति पर मुझे भी निराशा हुई। उसी स्वर से मैंने पूछा- "फिर, चतुरी"?

चतुरी बोला- "फिर छेदनी-पिरकिया आदि मालिक ही ले लें"।

मैंने गाँव में कुछ पक्के गवाह ठीक कर दिये। सत्तू बाँधकर, रेल छोड़कर, पैदल दस कोस उन्नाव चलकर, दूसरी पेशी के बाद पैदल ही लौटकर हँसता हुआ चतुरी बोला- "काका, जूता और पुरवाली बात अब्दुल-अर्ज़ में दर्ज़ नहीं हैं"।

सामाजिक सौहार्द्र को बनाए रखने का उत्तरदायित्व कानून पर भी है। लेकिन जब कानून ही लाचार व्यक्ति के 'petition' को न सुने तो फिर 'निराला' जैसे साहित्यकार का विद्रोह तो सामने आता ही है।

बोध प्रश्न

- 'निराला' वर्णानुसार किस जाति से संबंध रखते थे?

- ‘निराला’ के चरित्र की विशेषता क्या थी?
- ‘निराला’ सच्चा धर्म किसे मानते थे?
- ‘निराला’ किस बात को लेकर सचेत थे?

7.3.2.4 भाषायी विचारधारा- ‘निराला’ का समय वह समय था जब सामंती युग से चली आ रही अलंकार चमत्कार वाली नायिका-भेद का बोलबाला अधिक था। कविता में ब्रजभाषा के सामने खड़ी बोली का कोई महत्व ही नहीं था। ‘निराला’ को उनकी भाषा, उनके प्रयोग के लिए भी बहुत कुछ सुनना पड़ा। ऐसा केवल ‘निराला’ के साथ ही हुआ कहना गलत होगा। ‘निराला’ ने इन अपमानों को सहने के स्थान पर विरोध करना उचित समझा। यह ‘निराला’ का ‘निरालापन’ ही था। ‘निराला’ ने रायल्टी, कॉपी राइट आदि प्रश्नों को उस समय उठाया। बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों में ‘निराला’ जी शोषित साहित्यकारों के प्रतीक थे’। ‘‘चतुरी चमार’’ रेखाचित्र में भी उन्होंने भाषा की स्थिति को लेकर व्यंग्य किया है, ‘मैंने सोचा- “वेश का अभाव है, तो भाषा को प्रभावशाली करना चाहिए; नहीं तो थानेदार साहब पर अच्छी छाप न पड़ेगी। वहाँ तो महावीर स्वामी की कृपा रही, यहाँ अपनी ही सरस्वती का सहारा है”। मैं ठेठ देहाती हो रहा था; थानेदार साहब ने मुझसे पूछा- “आप कांग्रेस में हैं”? मैंने सोचा- “इस समय राष्ट्रभाषा से राजभाषा का बढ़कर महत्व होगा”। कहा- “मैं तो विश्व-सभा का सदस्य हूँ”। इस सभा का नाम भी थानेदार साहब ने न सुना था। पूछा- “यह कौन-सी सभा है”? उनके जिज्ञासा-भाव पर गंभीर होकर नोबुल-पुरस्कार पाये हुए कुछ लोगों के नाम गिनाकर मैंने कहा- “ये सब उसी सभा के सदस्य हैं”।

भाषा को लेकर, भाषाविदों को लेकर ज्ञान का अभाव था। उक्त विश्लेषण से यह कड़वी सच्चाई नग्न रूप में सामने आ गई है। ‘निराला’ एक ओर तो स्वाधीनता और सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर थे तो दूसरी ओर जातीय भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने की इच्छा भी उनके मन की लगन थी और इस लगन के सहारे ही वे लगातार साहित्य सेवा का कार्य पूर्ण मनोयोग के साथ करते रहे।

बोध प्रश्न

- ‘निराला’ के समय में काव्य की भाषा के रूप में किसे महत्व दिया जाता था?
- ‘निराला’ ने साहित्यकारों के लाभ के लिए किन प्रश्नों को उठाया?
- ‘निराला’ के मन में किस बात की लगन थी?
- ‘निराला’ साहित्य रचना के काम को कैसे किया करते थे?

7.3.2.5 शैक्षणिक विचारधारा- 'निराला' शिक्षा के महत्व को समझते थे। जिस कारण से शोषण का विरोध करनेवाले शस्त्र के रूप में उन्होंने शिक्षा को बहुत महत्व दिया। ''चतुरी चमार'' रेखाचित्र में लेखक के द्वारा अर्जुन को पढ़ाना भी तो इसी बात का संकेत है। 'निराला' को किसी से कोई व्यक्तिगत द्वेष या रोष नहीं था लेकिन वे साहित्यकारों, शिक्षाविदों को राजनीतिज्ञों से अधिक महत्व देते थे। 'चतुरी आँख मूँदकर शायद साहब का ध्यान करने लगा, फिर सस्वर एक पद गुनगुनाकर गाने लगा, फिर एक-एक कड़ी गाकर अर्थ समझाने लगा। उसके अर्थ में अनर्थ पैदा करना आनंद खोना था। जब वह भाष्य पूरा कर चुका, जिस तरह के भाष्य से हिंदीवालों पर 'कल्याण' के निरामिष लेखों का प्रभाव पड़ सकता है, मैंने कहा-"चतुरी, तुम पढ़े-लिखे होते, तो पाँच सौ की जगह पाते"।

यह केवल चतुरी की प्रशंसा नहीं है बल्कि उस हर उस व्यक्ति के लिए 'निराला' का सम्मान है जो विद्या के ज्योत से जगमगा रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि 'चतुरी' के ज्ञान को दर्शाकर लेखक ने तीव्र स्वर में घोषित किया है कि ज्ञान उच्च वर्ण, धनी वर्ग की जायदाद नहीं है। ज्ञान केवल किताबें रट लेने का काम नहीं है, ज्ञान केवल डिग्री प्राप्त कर लेने तक सीमित नहीं है। ज्ञान असीमित है, ज्ञान साधना का ही दूसरा नाम है।

बोध प्रश्न

- 'निराला' किसके महत्व को समझते थे?
- 'निराला' किनके लिए व्यक्तिगत रोष नहीं रखते थे?
- 'निराला' किसको अधिक महत्व देते थे?
- ज्ञान किसका दूसरा नाम है?

7.3.2.6 यथार्थवादी दृष्टिकोण- 'निराला' एक ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने अपने देश में ही अनेक प्रकार के विरोधों को सहा। देश, समाज, साहित्य में फैली विविध बुराइयों से वे भलीभाँति परिचित थे। देश, समाज, साहित्य के विविध बुराइयों के यथार्थ को चित्रित करने के लिए 'मुक्त छंद' में कविता लिखना शुरू किया तो गद्य लेखन में उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया। उनका तो सपना ही था कि जाति, धर्म, वर्ण आदि की सीमाओं को तोड़कर एक ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमें समानता हो। सपना देखना एक बात है और जीवन की सच्चाई कुछ और होती है। ''चतुरी चमार'' रेखाचित्र में उन्होंने यथार्थ के नग्न रूपों को चित्रित किया है, 'मैंने कहा-"चतुरी,

तुम्हारी काकी तो भगवान के यहाँ चली गई, जानते ही हो-भोजन अपने हाथ से पकाना पड़ता है, कोई दूसरा मदद के लिए है नहीं, जरा आराम न करेंगे, तो कल उठ न पाएंगे"। चतुरी नाराज होकर बोला-"तुम ब्याह करते ही नहीं, नहीं तो तेरह काकी आ जाएँ हाँ, वैसी तो-" मैंने कहा- "चतुरी, भगवान की इच्छा'।

समाज में पुरुष के लिए बहुविवाह कोई समस्या है ही नहीं उक्त पंक्ति से यह तो स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार से केवल किताबी शिक्षा को ही आज भी शिक्षा माना जाता है 'निराला' के समय में भी यही दशा थी। कबीर ने इस दशा पर विरोध करते हुए कहा कि-

'पोथी पढ़ी-पढ़ी जग मुआ, पंडित भया न कोई।

ढाई आखड़ प्रेम का पढ़े सो पंडित होई'॥

'निराला' ने ''चतुरी चमार'' रेखाचित्र के माध्यम से योग्य व्यक्ति कैसे केवल संसाधनों के अभाव में शोषण को सहने के लिए बाध्य होता है इसका यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है-

'उन दिनों मैं गाँव में रहता था। घर बगल में होने के कारण, घर में बैठे हुए ही मालूम कर लिया कि चतुरी चतुर्वेदी आदिकों से संत-साहित्य का अधिक मर्मज्ञ है, केवल चिट्ठी लिखने का ज्ञान न होने के कारण एक-क्रिय होकर भी भिन्न-फल है- वे पत्र और पुस्तकों के संपादक हैं, यह जूतों का'।

बोध प्रश्न

- 'निराला' ने कहाँ विरोध सहा?
- 'निराला' किन बातों से परिचित थे?
- 'निराला' ने किस छंद में काव्य रचना का कार्य करना प्रारंभ किया?
- 'निराला' ने गद्य लेखन में किस दृष्टिकोण को अपनाया?

7.3.3 कहानी के शीर्षक का औचित्य- 'निराला' को मूल्यांकित करते समय बहुत से आलोचक उन्हें केवल एक रहस्यवादी कवि मान लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि किस प्रकार से 'निराला' ने देशवासियों के दुख को अभिव्यक्ति दी थी। चतुरी का दुखी होकर यह कहना कि, "हाँ काका, दो साल चलता है"। उसमें एक दर्द भी था। दुखी होकर कहा-"काका, जिमींदार के सिपाही को एक जोड़ा हर साल देना पड़ता है। एक जोड़ा भगतवा देता है, एक जोड़ा पंचमा। जब मेरा ही जोड़ा

मजे में दो साल चलता है, तब ज्यादा लेकर कोई चमड़े की बरबादी क्यों करे”? कहकर डबडबाई आँखों देखता हुआ जुड़े हाथों सेवई-सी बटने लगा’।

चतुरी का दुख क्या केवल उसी का दुख था? क्या वह निम्न जाति के लोगों के दुख का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा था? ‘निराला’ स्वयं एक मनुष्य के रूप में एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में स्वस्थ नागरिक की भूमिका निभाने के लिए व्याकुल दिखाई पड़ते हैं। उनकी कहानी ‘‘चतुरी चमार’’ में भी उनके मन की यह व्याकुलता को भलीभाँति देखा-समझा जा सकता है। इसी कारण से ‘‘चतुरी चमार’’ कहानी केवल हिंदी की नहीं भारतीय भाषाओं की एक क्लासिक कहानी के रूप में अपनी पहचान बनाने में सक्षम हो पाई है। संपूर्ण कहानी पासी जाति के एक व्यक्ति ‘चतुरी’ के जीवन के चारों ओर घूमती नज़र आती है। पासी जाति का पेशा कहानी के अनुसार जानवरों का चमड़ा और मांस एकत्रित करना था। चतुरी जूता भी बनाता था। केवल जूता ही नहीं मजबूत जूता बनाने के साथ-साथ वह साहित्य का ज्ञान रखनेवाला ‘कीचड़ में खिले कमल’ के समान था। ‘चतुरी’ कहानी के हरेक प्रसंग में अपने सामाजिक सत्य को प्रदर्शित करता नज़र आया है। ‘निराला’ ने भी ‘चतुरी’ का ऑब्जेक्टि व नैरेशन किया है, ‘पासी हफ़्ते में तीन दिन हिरन, चौगड़े और बनैले सुअर खदेड़कर फाँसते हैं, किसान अरहर की ठुंठियों पर ढोर भागते हुए दौड़ते हैं- कटीली झाड़ियों को दबाकर चले जाते हैं, छोकड़े बेल, बबूल, करील और बेर काँटों से भरे रुंधवाए बागों से सरपट भागते हैं, लोग जेंगरे पर मड़नी करते हैं, द्वारिका नाई न्योता बाँटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है; चतुरी के जूते अपरिवर्तनवाद के चुस्त रूपक-जैसे टस से मस नहीं होते’।

उक्त विश्लेषण से दलित जीवन की पुश्त दर पुश्त कहानी सामने आ जाती है इसी कारण से कहानी का नाम ‘‘चतुरी चमार’’ रखना प्रासंगिक होगा।

बोध प्रश्न

- ‘निराला’ को मूल्यांकित करते समय बहुत से साहित्यकार उन्हें क्या मान लेते हैं?
- ‘‘चतुरी चमार’’ किस जाति का प्रतिनिधित्व कर रहा था?
- चतुरी क्या बनाता था?
- ‘निराला’ ने चतुरी के जीवन का कैसा नैरेशन किया था?

7.4 पाठ सार

छात्रो! यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो पुश्त दर पुश्त गरीब, लाचार और शोषित है। चतुरी और लेखक का गाँव एक है साथ ही गाँव के रिश्ते से चतुरी लेखक का भतीजा लगता है। इस कारण से लेखक को काफ़ी सारी बातें पता है। लेकिन, जब दो मनुष्य एक साथ कुछ समय, समय बिताते हैं तब दूसरी कई सारी बातों पर अनायास, अकारण ही चर्चाएँ होती हैं। इन चर्चाओं के द्वारा आपसी संबंध और गंभीर बनते हैं। लेखक ने चतुरी के सामने अपने अकेलेपन की व्यथा सुनाई तो चतुरी ने भी अनपढ़ होने के कारण से कैसे उसे पल-पल शोषण का सामना करना पड़ता है इस व्यथा को लेखक के सामने रख दिया। लेखक और चतुरी के वार्तालाप भले ही उनके व्यक्तिगत वार्तालाप थे लेकिन उस कथोपकथन के द्वारा तत्कालीन सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक गतिविधियों को समझने का अवसर मिलता है। उन दोनों के वार्तालाप के द्वारा कहानी की विकास यात्रा को गति मिलती है। इस वार्तालाप के कारण से ही अर्जुन को लेखक के पास पढ़ने के लिए भेजने का विचार चतुरी के मन में आया और लेखक को भी दूसरों के लिए काम करने का अवसर मिला। इस वार्तालाप के मूल तत्व के रूप में फिर से यह रेखांकित हो गया कि 'शिक्षा का महत्व' कालजयी है। कहानी के कथोपकथन को देखने से कहानी की व्यंग्यात्मक शैली के द्वारा कैसे लेखक ने पाठकों को तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों के साथ जोड़ दिया है यह स्वत: समझ आ जाती है। जैसे लेखक के द्वारा राजभाषा और राष्ट्रभाषा शब्द के स्थान पर प्रयोग किया गया शब्द विश्वभाषा व्यंग्यात्मक उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल हुआ है। 'अब्दुल फज़ल' शब्द का प्रयोग कहानी के मध्य भाग में एक बार और कहानी के अंत में हुआ है। यह केवल एक शब्द नहीं है बल्कि एक सांकेतिक संदेश देनेवाला शब्द है जिसका अर्थ होता है 'याचिका' या 'petition'. ''चतुरी चमार'' कहानी में लेखक ने प्रारंभ से लेकर अंत तक निम्न जाति के शोषण का तीक्ष्ण विरोध किया है। चतुरी के जीवन में कोई भी बात असाधारण नहीं है। उसके जैसे न जाने कितने निम्न वर्ग के लोग हैं जिनके पास योग्यता की कोई कमी नहीं है। लेकिन चतुरी फिर भी असाधारण है क्योंकि उसके पास चेतना है। 'निराला' उस समय के साहित्यकार हैं जब भारत स्वाधीन नहीं हुआ था। परतंत्रता के कष्ट को 'निराला' ने देखा और भोगा था। इसी कारण से उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना की भावना मुखरित होकर सामने आती है। 'निराला' व्यक्तिगत रूप में ब्राह्मण थे। 'निराला' की विशेषता यह भी रही कि उनमें अपने ब्राह्मन्तव को लेकर कोई कठोरता नहीं थी। 'निराला' ने व्यक्ति, समाज, साहित्य, कला, धर्म, राजनीति सभी क्षेत्रों की कुप्रथाओं को लेकर व्यंग्य किया है। वे धार्मिक दिखावे की भावना को घृणा की दृष्टि से देखते थे। वे मानवता को ही सच्चा धर्म मानते थे। 'निराला' एक ओर तो स्वाधीनता और सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर थे तो दूसरी ओर जातीय भाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्थापित करने की इच्छा भी उनके

मन की लगन थी और इस लगन के सहारे ही वे लगातार साहित्य सेवा का कार्य पूर्ण मनोयोग के साथ करते रहे। 'निराला' शिक्षा के महत्व को समझते थे। जिस कारण से शोषण का विरोध करनेवाले शस्त्र के रूप में उन्होंने शिक्षा को बहुत महत्व दिया। "चतुरी चमार" रेखाचित्र में लेखक के द्वारा अर्जुन को पढ़ाना भी तो इसी बात का संकेत है। 'निराला' एक ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने अपने देश में ही अनेक प्रकार के विरोधों को सहा। देश, समाज, साहित्य में फैली विविध बुराइयों से वे भलीभाँति परिचित थे। 'निराला' स्वयं एक मनुष्य के रूप में एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में स्वस्थ नागरिक की भूमिका निभाने के लिए व्याकुल दिखाई पड़ते हैं। उनकी कहानी "चतुरी चमार" में भी उनके मन की यह व्याकुलता को भलीभाँति देखा-समझा जा सकता है। इसी कारण से "चतुरी चमार" कहानी केवल हिंदी की नहीं भारतीय भाषाओं की एक क्लासिक कहानी के रूप में अपनी पहचान बनाने में सक्षम हो पाई है।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

छात्रो! प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद अब आप-

1. "चतुरी चमार" कहानी के कथासार को समझ गए हैं।
2. आप "चतुरी चमार" कहानी की वैचारिकता को समझ गए हैं।
3. आप 'निराला' के समय के भारत की परिस्थितियों को समझ गए हैं।

7.6 शब्द संपदा

1. अब्दुल अर्ज़ – निवेदन/याचिका/petition
2. औचित्य - महत्व
3. वैचारिकता - विचारधारा
4. शोषण - exploitation
5. अपरिवर्तनवाद - बिना परिवर्तन के
6. मर्मज्ञ - ज्ञाता/जाननेवाला
7. वार्तालाप - बातचीत
8. यथार्थवादी दृष्टिकोण- realistic vision
9. रेखाचित्र - sketch
10. ताज्जुब - आश्चर्य

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

(खंड-अ)

अ) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिये।

1. "चतुरी चमार" कहानी के कथासार को अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखक के घर में होनेवाली बैठकों से कहानी की कथावस्तु कैसे प्रभावित हुई समझाइए।
3. चिरंजीवी के आने से "चतुरी चमार" कहानी की कथावस्तु कैसे प्रभावित हुई लिखिए।
4. "चतुरी चमार" कहानी में लेखक ने तत्कालीन भारत की दशाओं को कैसे दर्शाया है?

(खंड-ब)

आ)निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिये।

1. "चतुरी चमार" कहानी में लेखक ने अपनी राष्ट्रीय विचारधारा को कैसे विश्लेषित किया है? समझाइए।
2. "चतुरी चमार" में व्यक्त लेखक के शैक्षणिक विचारधारा को स्पष्ट कीजिए।
3. "चतुरी चमार" कहानी के शीर्षक के औचित्य को समझाइए।
4. "चतुरी चमार" कहानी में व्यक्त 'निराला' की भाषायी विचारधारा को समझाइए।

(खंड-स)

1. i)सही विकल्प चुनिए।

1. लेखक के पुत्र का नाम क्या था?

1) कुमार 2) राहुल 3) चिरंजीवी 4) यश

2. लेखक के पास कौन पढ़ने आता था?

1)चतुरी 2) अर्जुन 3) सीता 4) अंगेज़

3. रेखाचित्र शब्द का अँग्रेजी अनुवाद क्या होगा?

1) colour 2) drawing 3) sketch 4) paper

4. 'चतुरी' क्या बनाता था?

1) कुर्सी 2) जूते 3) मकान 4) खिलौने

ii) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1)चतुरी का संबंध ____________________ जाति के साथ है।

2) 'अब्दुल फज़ल' शब्द का अर्थ हिंदी में _____________ होता है।

3) लेखक ने अपने घर को House of ________________ कहा है।

4) लेखक ________________ के होटल में रुके हुए थे।

iii) सुमेल कीजिए।

1)चिरंजीवी –	(a) पासी जाति
2) अर्जुन-	(b) petition
3) 'अब्दुल फज़ल'-	(c) लेखक
4) चमड़ा इकट्ठा करना-	(d) चतुरी

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. निराला : रामविलास शर्मा

2. ''चतुरी चमार'' कहानी संग्रह : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इकाई 8 : “चतुरी चमार” का तात्विक विवेचन

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ : “चतुरी चमार” का तात्विक विवेचन
8.3.1 ‘चतुरी चमार’ कहानी की कथावस्तु
8.3.2 ‘चतुरी चमार’ कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण
8.3.3 ‘चतुरी चमार’ कहानी की संवाद योजना
8.3.4 ‘चतुरी चमार’ कहानी का देशकाल व वातारण
8.3.5 ‘चतुरी चमार’ कहानी का उद्देश्य
8.3.6 ‘चतुरी चमार’ कहानी की भाषा-शैली
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो, प्रस्तुत पाठ में हम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा लिखित कहानी “चतुरी चमार” के बारे में चर्चा करेंगे। आप सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को एक कवि के रूप में जानते ही होंगे। वे छायावाद के प्रमुख चार कवियों में से एक हैं। अन्य तीन कवि – जय शंकर प्रसाद, समित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा हैं। इन चारों को छायावाद के स्तंभ भी कहा जाता है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एक कवि होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट कहानीकार भी हैं। निराला को कवि के रूप में बहुत ख्याति प्राप्त है। लेकिन जब हम उनकी कहानियाँ पढ़ेते हैं तो पाते हैं कि निराला चाहे कविता लिखते हों या कहानी उसमें समाज के शोषित व्यक्ति का चित्रण करते हैं। निराला की कविताओं की तरह ही कहानियाँ भी साधारण जनता की पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। उसके जीवन की विडंबनाओं को प्रस्तुत करती हैं। निराला अपने आस-पास के कमजोर व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, की दयनीयता और कर्मठता, दोनों ही को समान रूप से चित्रित करते हैं। इसका उदाहरण हमें मिलता है उनकी कहानी ‘चतुरी चमार’ में। इस कहानी में कहानीकार निराला ने जाति-भेद पर आधारित ऊंच-नीच की विडंबना से सतायी गयी निम्न जाति में आत्म-सम्मान की नयी चेतना के प्रादुर्भाव को अंकित किया है। ‘चतुरी चमार’ कहानी में अंकित हर एक प्रसंग अपना एक अलग सामाजिक सत्य प्रकट करता है। निराला ने एक संवेदनशील विषय को

बड़ी सरलता के साथ संस्मरणात्म शैली में व्यक्त किया है। इसीलिए इस कहानी को हिंदी की एक अप्रतीम और क्लासिक कहानी भी कहा जाता है।

हिंदी साहित्य में तुलसीदास के बाद सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी के महानतम रचनाकार हैं। तो चलिए, हम साथ मिलकर हिंदी के इस महान रचनाकार की कहानी 'चतुरी चमार' को कहानी के तत्वों के आधार पर समझने का प्रयास करें।

8.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- कहानी के तत्वों के आधार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित "चतुरी चमार" कहानी समझ
- सकेंगे।
- भारतीय समाज में जाति प्रथा के कारण निम्नवर्ग के व्यक्तियों के जीवन की समस्याओं की
- जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- समाज में उपक्षेत जीवन जीनेवालों के आत्म सम्मान की चेतना से अवगत हो सकेंगे।
- निराला के समय के लोक जीवन का रहन-सहन, परिवेश आदि जान सकेंगे।
- निराला के कहानी लेखन कौशल से परिचित हो सकेंगे।

8.3 मूल पाठ : 'चतुरी चमार' का तात्विक विवेचन

आधुनिक हिंदी काव्य के छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एक प्रतिष्ठित कवि होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट गद्यकार भी हैं। वे कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और अनुवादक थे। निराला की कहानियों के संग्रहों के नाम हैं - लिली (1934), सखी (1935), सुकुल की बीवी (1941), 'चतुरी चमार' (1945) सखी संग्रह का नए नाम से पुर्नप्रकाशन, देवी (1948) पूर्व प्रकाशित संग्रहों से चयनित कहानियों का संग्रह जिसमें जानकी नामक कहानी को शामिल किया गाय था। इसके अलावा निराला ने शिक्षाप्रद कहानियाँ भी लिखी हैं जो ईसप की नीतिकथाएँ (1969) नाम से प्रकाशित है। इस पाठ में "चतुरी चमार" कहानी का विवेचन कहानी के तत्वों के आधार पर किया जा रहा है। कहानी के 6 तत्व होते हैं - कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, देशकाल व वातावरण, उद्देशय और भाषा शैली।

8.3.1 'चतुरी चमार' कहानी की कथावस्तु

'चतुरी चमार" कहानी सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के "चतुरी चमार" नामक कहानी-संग्रह की प्रथम कहानी है। यह हिंदी साहित्य जगत में बहु चर्चित कहानी है। लेखक ने संग्रह के आवेदन में स्वयं कहा है – *"'चतुरी चमार" नाम का कहानी-संग्रह पाठकों के सामने है। पहली कहानी*

"चतुरी चमार" की हिंदी-साहित्य में काफ़ी चर्चा हो चुकी है। आलोचक अनेकानेक निबंधों में इसकी प्रशंसा कर चुके हैं। संग्रहकार अपने संग्रहों में इसको स्थान दे चुके हैं।"

'चतुरी चमार' कहानी चतुरी नामक चमार जाति के एक व्यक्ति की है। इस कहानी में कहानीकार निराला ने चतुरी के जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया है। लेखक कहानीवाचक के माध्यम से हमें यह कहानी सुना रहे हैं। कहानी का आरंभ कहानीकार ने 'चतुरी चमार' के निवास स्थान का पता बताते हुए की है। वह डाकखाना चमियानी मौजा गढ़कला जिला उन्नाव का क़दीमी बाशिंदा (पुराना निवासी) है।

'चतुरी चमार' कथावाचक के पुश्तैनी घर के पीछे गंदे पानी के नाले के पास बनी बस्ती में रहता है। यह निम्न जाति का इलाका है। चतुरी चूंकि एक चमार है, वह अपना परंपरागत काम करता है। वह जूते-चप्पल बनाता है। उन्हें ठीक करता है। उसके बनाए जूते दो वर्ष तक चलते हैं। जूते बनाने के लिए वह असली चमड़े का उपयोग करता है। वह बहुत ही टिकाऊ जूते बनाता है। अपने जूतों के लिए वह अपने आस-पड़ौस में काफी प्रसिद्ध है। उसके बनाए जूते पासी, किसान, नाई आदि जाति के लोग अपने काम पर जाते समय पहनते हैं। 'चतुरी चमार' के जूते पहनकर पासी जाती के लोग हिरण, चौगड़े और बनैले सूअर खदेड़कर पकड़ते हैं, किसान अरहर की ठूठियों पर जानवरों को भगाते हुए दौड़ते हैं, कंटीली झाड़ियों पर चलते हैं, छोकरे बेल, बबूल, करील, बेर के कांटों से भरे बागों से सरपट दौड़ जाते हैं, नाई न्योता बांटते हुए दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा पैदल चलता है। दो वर्ष तक चलने वाले जूतों को हर साल जमींदार के सिपाही को एक जोड़ा देना पड़ता है। जमींदार का सिपाही अपनी रौब दिखाकर चतुरी के अलावा जूते बनानेवाले अन्य चमारों – भगवता, पंचमा से भी एक जोड़ा जूता लेता है।

'चतुरी चमार' के यह पूछने पर कि क्या उसे और फिर उसके आनेवाली पीढ़ी को जीवन भर इसी तरह अपनी कमाई का एक हिस्सा जमींदार के सिपाही को देते रहना होगा। कथावाचक उसे बताता है यदि सरकारी खातों (वाजिबउल-अर्ज) में दर्ज होगा तो देते रहना होगा। इसे जानने के लिए एक रुपया हक लगेगा। चतुरी वाजिबउल-अर्ज का उच्चारण नहीं कर पाता है। वह जान लेता है कि यदि अब्दुल-अर्ज में दर्ज न हो तो उसे इस तरह मुफ्त में जूते नहीं देने पड़ेंगे।

चतुरी आयु में कथावाचक के चाचाजी से कुछ साल छोटा था। लेकिन वह कथावाचक को काका कहकर बुलाता है। इससे यह पता चलता है कि गाँव में निम्न जाति के लोग उच्च जाति के व्यक्तियों को सम्मान से काका कहकर संबोधित करते हैं। अनपढ़ होते हुए भी 'चतुरी चमार' वेदों का अध्ययन करनेवालों से अधिक संत साहित्य का मर्मज्ञ था। वह सबसे घुल मिलकर रहता है। कथावाचक के गाँव रहने की खबर पाकर चतुरी चरस का सेवन करने वाले, मजीरा और डफली बजाने वाले लड़कों को साथ लेकर रात में कथावाचक के घर आता है। भजन का कार्यक्रम करता है। कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, पल्टूदास आदि के पद गाने लगता है। वह कबीर पदावली का विशेषज्ञ भी है। कथावाचाक को कबीर पदावली के अर्थ बताता है। कथावचाक द्वारा यह जानकर कि यदि वह पढ़ा लिखा होता तो पाँच सौ तक की नौकरी प्राप्त कर सकता था, वह अपने बेटे अर्जुन को कथावचक के पास पढ़ने के लिए भेजता है। गुरु दक्षिणा के रूप में रोज गोश्त लाकर देने

और महीने में एक दो बार चक्की से आटा पिसवा लाने पर कथावाचक अर्जुन को पढ़ाई-लिखाई सीखाने लगते हैं।

कथावाचक से अर्जुन धीरे-धीरे पढ़ना-लिखना सीखता है। उसके परिवारवाले उसकी पढ़ाई-लिखाई से खुश भी होने लगते हैं। इस बीच गर्मी की छुट्टियों में कथावचाक अपने 9-10 साल के बेटे को अपने पास ले आते हैं। वह सोयम में अपनी नानी के साथ रहता था। अर्जुन का पिता कथावाचक को काका कहता था, यह देख अर्जुन कथावाचक के बेटे को काका बुलाने लगता है जो कथावाचक को प्रकृति के विरुद्ध लगता है। कथावचक का बेटा अर्जुन से अधिक पढ़ा लिखा था। वह अपनी पढ़ाई का रौब दिखाने के लिए अर्जुन को अपने मनोरंजन का साधन बना लेता है। उसे पढ़ाने लगता है। उसकी गलतियाँ निकालने लगता है। उसे डांटता है। जब कथावाचक को पता लगता है तो वह अपने बेटे को अर्जुन से क्षमा माँगने के लिए कहते हैं। वह मना कर देता है, तो उसे वे वापस उसकी नानी के घर नाई के साथ भेज देते हैं। चतुरी और अर्जुन को सांत्वना देते हैं। अपनी किताबे छपवाने के काम के सिलसिले में कथावचक कलकता, बनारस,प्रयाग आदि का सफर करते हुए लखनऊ में रुक जाते हैं। वे वहीं कुछ दिन रहते हैं। अमीनाबाद होटल में एक कमरा किराए पर लेकर साहित्य की साधना करने लगते हैं। उन्हीं दिनों देश में चल रहे आंदोलन का असर गढ़ाकोला में भी होता है। लेकिन आंदोलन के असफल हो जाने पर जमींदार रियाया को दबाने लगते हैं। तब गाँव के नेता कथावाचक से अपने गाँव वापस आने के लिए निवेदन करते हैं। उनके गाँव में रहने से पुलिस से गाँव वालों की रक्षा हो सकती है। गाँव वालों की बात मानकर कथावचक गाँव आते हैं। गाँव आने के बाद पता चलता है कि जमींदार अपने रिस्तेदार मैजिस्ट्रेट के पास किसानों की जमीन पर दावे दायर करते हैं। उनके दरख्वास्तों के फलस्वरूप दरोगाजी तहकीकात करने गाँव आते हैं। वे देखना चाहते हैं कि क्या गाँव वाले कांग्रेस के सदस्य हैं और आंदोलन कर रहे हैं। लेकिन गाँव वालों द्वारा महावीरजी के अहाते में लगाए कांग्रेस का झंडा बारिश पानी से धुलकर सफेद हो जाने के कारण पता नहीं लगा पाए कि गाँव में कांग्रेस का प्रभाव है। स्वाधीनता आंदोलनों में गाँव वाले कांग्रेस की सहयता करते हैं। लेकिन जमींदार और गाँव के किसानों के बीच मुकदमा चलता रहा। जमींदार के रिश्तेदार होने के मैजिस्ट्रेट ने जमींदार की तरफ से वकालत की और मुकदमा जीतने में कामियाब हो जाते हैं। किसानों पर जमींदार को डिग्रियाँ दे दी जाती हैं। गाँववाले चंदा करके मुकदमा लड़ते रहते हैं। इकट्ठा किया धन समाप्त हो जाने और मुकदमा हार जाने के बाद फिर से चंदा करने की हिम्मत उनमें नहीं रह जाती है। किसानों की डिग्रियों में बैल निलाम हो जाते हैं। इससे चतुरी जैसे निम्नवर्ग के लोगों की मदद करने के लिए गाँव वाले आगे नहीं पाते हैं।

कथावाचक चतुरी के साथ होने की बात कहकर उसे हिम्मत बंधाते हैं। लेकिन चतुरी मना कर देता है। कहता है कि वह न्याय के लिए लड़ेगा। भले ही 'मालिक उसकी छिदनी-पिरकिया आदि लेले।' कथावाचक चतुरी की मदद के लिए पक्के गवाहों की जुगाड़ करते हैं। चतुरी पेशी के लि दस कोस पैदल जाता है। दूसरी पेशी के बाद वह हँसता हुआ लौटता है और कथावचक को

बताता है कि जमींदरा के सिपाही को पीढ़ी दर पीढ़ी जूता देने की बात अब्दुल-अर्ज में दर्ज नहीं है। यहाँ पर कहानीकार ने कहानी का समापन किया है।

कहानीकार निराला ने छोटे से कथानक में समाज की विभिन्न जटिलताओं को अंकित करने में सफलता हासिल की है। 'चतुरी चमार' के बहाने जमींदार, प्रशासन व अन्य उच्च वर्ग के व्यक्तियों द्वारा निम्नवर्ग के किसान, मजदूर व पारंपरिक काम करने वाले लोगों पर किया जाने वाला शोषण चित्रित किया है।

बोध प्रश्न

- 'चतुरी चमार' कहाँ का निवासी था?
- 'चतुरी चमार' के बनाए जूते कौन-कौन इस्तेमाल करते थे?

8.3.2 'चतुरी चमार' कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'चतुरी चमार' कहानी के पात्रों के माध्यम से आधुनिक बोध, प्रगतिशीलता व स्वाधीन चेतना को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस कहानी में एक मुख्य पात्र है – 'चतुरी चमार' और दो गौण पात्र हैं- 'चतुरी चमार' का पुत्र अर्जुन और कथावचक का पुत्र।

(1) चतुरी चमार:

चतुरी चमार के रूप में कहानीकार ने एक प्रेरक चरित्र की रचना की है। यह चरित्र कमजोर व्यक्तियों को जीवन में सहज रहते हुए आगे बढ़ने और अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होने के लिए प्रेरित कर सकता है। कहानी पढ़ते समय 'चतुरी चमार' में हम पाएंते हैं कि वह सहज, सीधा, भोला, ईमानदार, आधुनिक, स्वावलंबी व स्वाभिमानी व्यक्ति है। ये उसके चरित्र के मुख्य गुण व विशेषताएँ हैं।

चतुरी चमार कथावचाक से उम्र में उनके चाचा जी से कुछ छोटा है लेकिन कथावाचक को काका कहता है। वह कथावाचक के बुलाए जाने पर मंजीरा व डफली बजानेवाले अपने साथियों को लेकर रात में उनके घर पर भजन करने चला जाता है। चरस पीने का शौकिन मगर संत साहित्य का जानकार है। वह कबीर पदावली का विशेषज्ञ है। पदावली की व्याख्या बड़ी सहजता से करता है। रात अधिक होने पर जब कथावाचक सोने के लिए जाना चाहते हैं तो वह उन्हें रोकना चाहता है। कथावाचक के यह कहने पर कि वे अकेले हैं, इसलिए उन्हें घर के कई काम करने पड़ते हैं, सुबह खाना पकाना होता है आदि। यह सुनते ही वह बड़ी सहजता से कथावाचक की पत्नी की प्रशंसा करने लगता है। वह उन्हें काकी कहता था। वह बताता है कि काकी पढ़ी-लिखी थी। नरम रोटी बनाती थी। वह उनके गाने की तारीफ करते हुए बड़ी सहजता से कथावाचक से कहता है कि वह बड़ा अच्छा गाती थीं, तुम वैसा नहीं गाते। वह रामायण पढ़ती व गजले गाती थीं।

पदावली की व्याख्यान सुनाने के लिए कथावाचक द्वारा दूसरे दिन आने के लिए कहने पर वह सुबह-सुबह प्रकट हो जाता है। वह पिछली रात में देर से सोया था किंतु कथावाचक का कथन उसके लिए आदेश के समान है। उन्हें कबीर पदावली का अर्थ समझाने लगता है। खुद को कबीरपंथी बताता है।

चतुरी चमार जूते बनाने काम पूरी ईमानदारी से करता है। अपने काम के प्रति ईमानदार होने के साथ-साथ वह अपने अधिकारों के प्रति सजग भी है। दो वर्ष तक टिकाऊ जूते बनाने में वह अपने आस-पास के गाँवों में प्रसिद्ध है। जमींदार के सिपाही को हर वर्ष एक जोड़ी जूते देने के लिए अपनी मजबूरी को व्यक्त करता है। लेकिन इस मजबूरी के कारण का पता लगाना चाहता है। ताकि बिना किसी दाम के जूते देने से बचा जा सके। कहानी के अंत में इस मामले में वह सफल भी हो जाता है। कहानीकार के अनुसार वह निम्नजाति का है और अशिक्षित होते हुए भी शिक्षित व उच्चवर्ग के व्यक्तियों से कई गुणा बेहतर है। चमड़े की बरबादी उसके लिए चिंता का विषय है। वह निरर्थक संग्रह के विरुद्ध है।

चतुरी चमार आधुनिक सोच रखनेवाला व्यक्ति है। वह स्वयं पढ़ा लिखा नहीं है किंतु अपने बेटे अर्जुन को पढ़ाना चाहता है। उसे कथावाचक के पास रोज पढ़ने भेजता है ताकि वह पढ़ लिखकर स्वयं के साथ-साथ अपनी जाति के अन्य लोगों का भी उद्धार कर सके।

चतुरी चमार किसी पर आश्रित नहीं रहना चाहता है। गाँव में आंदोलन होता है। जमींदार जोत किसानों पर मुकदमा चलाता है। मैजिस्ट्रेट से मिलकर किसानों पर डिग्री प्राप्त कर लेता है। मुकदमा चलाने के लिए गाँव वाले सब मिलकर धन इकट्ठा करते हैं। लेकिन किसानों के मुकदमों के लिए चंदा किया गया धन खत्म हो जाता है। गाँव वाले दोबारा चंदा करने से मना कर देते हैं, डर जाते हैं, तो चतुरी अपने चमारी व्यवसाय के औजार निलाम करने के लिए भी तैयार हो जाता है। कथावाचक द्वारा गवाह तैयार किए जाने पर अपने मुकदमें की दूसरी पेशी के लिए वह दस कोस पैदल चलकर उन्नाव जाता है। वहाँ से पता लगाकर लौटता है कि जमींदार को या उसके सिपाही को पीढ़ी दर पीढ़ी मुफ्त में जूते देने की बात वाजिबउल-अर्ज में दर्ज में नहीं है।

इस तरह हम पाते हैं कि चुतरी चमार एक सीधा-सादा, भोला, ईमानदार, आधुनिक विचारों वाला, तथा शोषण से मुक्तिपाने के लिए अकेले ही डटकर लड़ने को तैयार एक स्वावलंबी व्यक्ति है। अपने जैसे शोषित वर्ग के लिए उदाहरण प्रस्तुत करने वाला भविष्य द्रष्टा है।

कहानीकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने चतुरी चमार के रूप में एक ऐसे चरित्र का निर्माण किया है जो निम्नवर्ग तथा समाज में हाशिए पर रखे जाने पर भी अपनी भद्रता, शालीनता और सामान्य मानवीय विशिष्टता से उच्चवर्ग के अहंकार तथा मिथ्या श्रेष्ठता को चुनौती देता है। इस पात्र के माध्यम से कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि मनुष्यता का वास्तविक दर्शन व मनोभाव समाज के साधारण लोगों में ही होता है।

(2) चतुरी चमार का पुत्र अर्जुन :

अर्जुन चतुरी चमार का सत्रह साल का बेटा है। वह अनपढ़ है, मगर उसे पढ़ाई में रुची होती है। चतुरी के अनुरोध पर कथावाचक उसे पढ़ाने लगते हैं। उसे शब्दों के उच्चारण में दिक्कत होती है। लेकिन मन लगाकर वह सीखने लगता है। उसके परिवार में वह पहला व्यक्ति है जो शिक्षा ग्रहण करता है। वह दादा, मामा, काका, दीदी, नानी सीख लेता है। उसके इस उपलब्धि पर घर के सारे सदस्य हर्षित हो उठते हैं।

अर्जुन धीरे-धीरे पढ़ाई लिखाई सीखने लगता ह। दो किताबें पूरी कर लेता है। परिवार में सम्मान पाने लगता है। पढ़ाई-लिखाई सीखने में समय लगाने से उससे कठिन परिश्रम करने की आदत छूट जाती है। वह कुछ नाजुक मिजाज भी होने लगता है। उसे कथावाचक के पुत्र को काका कहना पड़ता है जबकि वह उससे उम्र में बड़ा है। इस स्थिति का उसके स्वास्थ्य पर तीन-चार दिन में ही असर दिखाई देने लगता है। लेकिन वह अपने गुरु कथावाचक के प्रति कृतज्ञता स्वरूप इस संबंध में कोई शिकायत नहीं करता है।

(3) कथावाचक का पुत्र :

कथावाचक का पुत्र 9-10 साल का है। वह अपनी नानी के घर रहकर शिक्षा ग्रहण कर रहा है। आम पकने के मौसम में अपने पिता कथावाचक के घर आने के बाद अर्जुन के कारण उसका मन लगने लगता है। वह उम्र में अर्जुन से छोटा है। पद और पढ़ाई में बड़ा है। इसी कारण वह अर्जुन को अपनी शिक्षा का दंभ दिखाकर दबाने लगता है। वह अर्जुन के उच्चारण की त्रुटियों को पकड़ लेता है। वह कथावाचक की गैर-हाजिरी में अर्जुन को घर बुलाकर उसके उच्चारण दोष से अपना मनोरंजन करने लगता है। इस घटना के चित्रण से कहानीकार ने बाल सुलभ मन पर अभिजात्य वर्ग की मानसिकता के प्रभाव को दिखाने की कोशिश की है।

उसे अपने ब्राह्मण होने का भी गर्व होता है। उसका बालमन समाज की कुरीति से प्रभावित है। वह यह भी जानता है कि निम्नजाति के लोगों को छूने से स्नान करना पड़ता है। शब्द का गलत उच्चारण करने पर वह अर्जुन से कहता भी है कि सही उच्चारण नहीं करने पर वह उसे झापड़ मारेगा और स्नान कर लेगा।

कथावाचक के बेटे में बाल हठ है। वह नासमझ है। उसे मालूम ही नहीं है कि अन्य लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वह अपने पिता से भी वाद-विवाद करता है। वह अर्जुन के साथ गुस्ताखी करता है। इसलिए कथावचाक द्वारा कान पकड़कर दस दफे उठक-बैठक करने की सज़ा दी जाती है। लेकिन वह सज़ा स्वीकार नहीं करता है। अपने मामा के घर वापस भिजवाने के लिए कहता है।

बोध प्रश्न

- चतुरी चमार कथावाचक को क्या कहकर संबोधित करता है?
- चतुरी चमार किस संत की पदावली का विशेषज्ञ है?
- कथावाचक के बेटे की आयु कितनी है?
- कथावाचक किसे पढ़ने सीखाने लगे?

8.3.3 'चतुरी चमार' कहानी की संवाद योजना

'चतुरी चमार' कहानी के संचालन में कथावाचक की बड़ी भूमिका है। कथावाचक के रूप में कहानीकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला स्वयं कहानी में उपस्थित हैं। कथावाचक के माध्यम से निराला ने अपने पाठकों से संवाद स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। समाज में परिवर्तन के पक्षधर निराला कथावाचक के मुख से अपने विचार व्यक्त करते हैं। निम्नवर्ग के अभावों से ग्रस्त जीवन के प्रति चिंता व्यक्त करते हैं। चुतरी चमार के निवास स्थान का वर्णन करते हुए वे निम्न

वर्ग के निवास स्थान में सुधार की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं। निम्नवर्ग के लोगों को शिक्षित होने के लिए प्रेरित करते हैं। चतुरी चमार के पुत्र अर्जुन को पढ़ाने लगते हैं। गाँव वालों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। गाँव वाले अपनी सहायता के लिए उनसे शहर से गाँव वापस आने के लिए आग्रह करते हैं तो वे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। मुदकमेबाजी में उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। पुलिस से बचाते हैं। चतुरी चमार के संघर्ष में सहयोगी बनते हैं। इन क्रियाकलापों का पता पाठक को कथावाचक के कथा-कथन से होता रहता है।

कहानीकार ने व्यवहारिक और पुस्तकीय ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए चतुरी से कहलवाया कि –

“काका, ये निर्गुण-पद बड़े-बड़े विद्वान नहीं समझते।”

चतुरी और कथावाचक के संवाद से पाठकों को पता चलता है कि भारत में कुलीन वर्ग की स्त्रियाँ स्वतंता पूर्व से शिक्षा ग्रहण करने लगी थीं। वे घर के कामकाज के साथ-साथ रामयण का पाठ करती थीँ और गजलें भी गाया करती थीं -

“काकी बहुत पढ़ी-लिखी थीं। मैंने हसार को कई चिट्ठियाँ उनसे लिखवाई हैं।” XXX “काकी रोटी भी करती थीं, बरतन भी मलती थीं और रामायण भी पढ़ती थीं। बड़ा अच्छा गाती थीं काका, तुम वैसा नहीं गाते। बुढ्ढऊ बाबा, दरवाजे बैठते थे – भीतर काकी रामायण पढ़ती थीं। गजले और न जाने क्या-क्या टिल्लाना गाती थीं-क्यों काका।”

निम्नवर्ग के लोगों में शिक्षा के अभाव को कहानीकार ने कथावाचक और चतुरी चमार के बड़े लड़के के बीच हुई बातचीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अर्जुन की पढ़ाई को लेकर उसका बड़ा भाई शिकायत करता है – “बाबा, अर्जुनवा और तो सब लिख-पढ़ लेता है, पर भैया नहीं लिखता।” कथावाचक समझाते हैं कि – “किताब में दीदी-दादा से भैया की इज्जत बहुत ज्यादा है, भैया तक पहुँचने में उसे दो महीने की देरी होगी।”

चतुरी के बनाए जूते दो साल टिकते हैं। जमींदार द्वारा चतुरी जैसे अन्य मेहनती लोगों का शोषण किया जाता है। इसके संबंध में संवाद है -

कथावाचक के पूछने पर कि – “चतुरी, तुम्हारे जूते की बड़ी तारीफ है।” खुश होकर चतुरी कहता है – “हाँ, काका, दो साल चलता है।” इस कथन में उसका एक दर्द भी दबा हुआ है। दुखी होकर वह कहता है – “काका, जिमीदार के सिपाही को एक जोड़ा हर साल देना पड़ता है। एक जोड़ा भगवता देता है। एक जोड़ा पंचमा। जब मेरा ही जोड़ा मजे में दो साल चलता है तब ज्यादा लेकर कोई चमड़े की बरबादी क्यों करे?”

कथावाचक सहानुभूति दिखाते हुए कहते हैं - “चतुरी, इसका वाजिबुल-अर्ज में पता लगाना होगा। अगर तुम्हारा जूता देना अर्ज होगा तो इसी तरह पुश्त-दर-पुश्त तुम्हें जूते देते रहने पड़ेंगे।”

यह सुनकर चतुरी सोचता है, मुस्कुराते हुए कहता है – "अब्दुल अर्ज में दर्ज होगा, क्यों काका?"

तो कथावचक कहता है-"देख लो, सिर्फ एक रुपया हक लगेगा।"

यह संवाद कहानी का केंद्र बिंदु है। कहानीकार ने इन संवादों से चतुरी चमार के प्रगतीशील विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उसकी स्वातंत्र्य चेतना को कहानीकार ने इसी संवाद से प्रकट किया है। कहानी के अंतिम सोपान पर चतुरी की आत्मनिर्भरता और स्वाधीन चेतना से संबंधित संवाद देखिए –

कथावाचक चतुरी के प्रति सहानुभूती न केवल शब्दों में बल्कि व्यवहार में भी व्यक्त करते हैं। उसके कठिन समय में गाँव वालों का साथ छूट जाने पर वे साथ देने के लिए आगे आते हैं।

कथावाचक – "चतुरी, मैं शक्ति भर तुम्हारी मदद करूँगा।"

चतुरी – "तुम कहाँ तक मदद करोगे, काका?"

कथावाचक –"तो तुम्हारा क्या इरादा।"

चतुरी –"मुकदमा लड़ूँगा। पर गाँववाले डर गए हैं, गवाही न देंगे।"

कथावाचक – "फिर चतुरी।"

चतुरी – "फिर छिदनी-पिरकिया आदि मालिक ही ले लें।"

चतुरी दूसरी पेशी से लौटकर आता है और कथावाचक को बताता है –

"काका, जूता और पुश्तवाली बात अब्दुल-अर्ज में दर्ज नहीं है।"

चतुरी चमार के इस अंतिम कथन पर ही कहानी समाप्त होती है।

निराला ने कहानी के पात्रों - चतुरी चमार, चतुरी का बेटा, कथावाचक का बेटा, पंडित जी, गाँव के नेता, दरोगा और कथावाचक के संवादों से कहानी के लक्ष्य को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। विभिन्न संदर्भों में कहानी के पात्र अपने मन की बात प्रकट करने हेतु संवाद करते हैं जिनसे पात्रों की मनोदशा तो प्रकट होती ही है साथ ही कहानी में गति आती है। कहानी का लक्ष्य पुष्ट होता जाता है। कहानीकार ने बहुत ही सटीक संवादों की रचना की है। कहानी के संवाद संक्षिप्त, सरल तथा रोचक हैं। ये संवाद कहानी में नाटककीयता उत्पन्न करते हैं।

बोध प्रश्न

- जमींदार के सिपाही के चतुरी चमार के अलावा और कौन-कौन जूते देते हैं
- कथावाचक अर्जुन के भैया के शिकायत पर कथावचाक उसे क्या कहकर समझाता है

8.3.4 'चतुरी चमार' कहानी का देशकाल व वातारण

देशकाल व वातावरण का संबंध कहानी के समय, स्थान एवं परिवेश से होता है। इससे कहानी की विश्वसनीयता बढ़ती है। कहानीकार द्वारा कहानी में संकेतों तथा संवादों के माध्यम से वातावरण का निर्माण किया जाता है। विभिन्न संदर्भों तथा घटनाओं के चित्रण से देशकाल का अंकन सजीव हो जाता है।

'चतुरी चमार' कहानी का लेखन काल – भारत की आजादी के पहले का है। कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण सन् 1945 में प्रकाशित हुआ था। इसमें न केवल निम्न जाति के जीवन का चित्रण है बल्कि कहानीकार ने अपने समय के स्वतंत्रता आंदोलन का वर्णन भी किया है। गाँव के सभी जाति के लोग एक साथ आंदोलन में शामिल होते हैं। लेकिन उस लड़ाई में निम्न वर्ग की समस्याओं पर कोई बात नहीं करता है। आंदोलन विफल हो जाने के बाद उसका ठिकरा इसी निम्न वर्ग पर, और किसानों व युवा वर्ग पर फोड़ा जाता है।

'इन्हीं दिनों देश में आंदोलन जोरों का चला—यही, जो चतुरी आदिकों के कारण फिस्स हो गया है। होटल में रहकर, देहात से आनेवाले शहरी युवक मित्रों से सुना करता था, गढ़ाकोला में भी आंदोलन जोरों पर है, छह-सात सौ तक का जो किसान लोग इस्तीफा देकर छोड़ चुके हैं, वह जमीन अभी तक नहीं उठी। किसान रोज इकट्ठा होकर झंडा गीत गाया करते हैं। सालभर बाद जब आंदोलन में प्रतिक्रिया हुई; जमींदारों ने दावा करना और रियाया को बिना किसी रियायत के दबाना शुरू किया, तब गाँव के नेता मेरे पास मदद के लिए आए, बोले, 'गाँव में चलकर लिखो। तुम रहोगे तो मार न पड़ेगी, लोगों को हिम्मत रहेगी। अब सख्ती हो रही है।'

कहानी की शुरुआत 'चतुरी चमार' के निवास स्थान, गाँव के पारंपरिक व्यवसाय के चित्रण से होती है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपनी कहानियों में अद्भुत दृश्य बिंबों को उकेरते हैं। इन बिंबों से पाठक तत्कालिन परिवेश से रू-ब-रू होता है –

'मेरे नहीं, मेरे पिताजी के बल्कि उनके पूर्वजों के भी मकान के पिछवाड़े कुछ फासले पर, जहाँ से होकर कई और मकानों के नीचे और ऊपरवाले पनालों का, बरसात और दिन-रात का शुद्धाशुद्ध जल बहता है। ढाल से कुछ ऊँचे एक बगल 'चतुरी चमार' का पुश्तैनी मकान है।'

गाँव के लोगों की दैनिक क्रियाकलापों का चित्रण देखिए –

पासी हफ्ते में तीन दिन हिरन, चौगड़े और बनैले सुअर खदेड़कर फाँसते हैं। किसान अरहर की ठूँठियों पर ढोर भगाते हुए दौड़ाते हैं—कँटीली झाड़ियों को दबाकर चले जाते हैं। छोकड़े बेल, बबूल, करील और बेर के काँटों से भरे रुँधवाए बागों से सरपट भागते हैं, लोग जेंगरे पर मड़नी करते हैं, द्वारिका नाई न्योता बाँटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है।

इस दृश्य चित्रण में रचनाकार ने गाँव के परिवेश का सटीक अंकन किया है।

अर्जुन की पढ़ाई-लिखाई से उसके भाई खुश होते हुए भी शिकायत करने लगते हैं कि वह अभी तक भैया नहीं लिखता है। तब कथावाचक अर्जुन के भाई को समझाते हैं कि पुस्तकों में दादा-दीदी से भैया की इज्जत बहुत ज्यादा है, भैया तक पहुँचने में उसे और दो महीने लगेंगे। उस दृश्य व संवाद से कहानिकार ने बाताया है कि उस समय निम्न जाति की शिक्षा के प्रति समझ अभी

विकसित नहीं हुई थी। वे शिक्षा के ज्ञान से वंचित थे। वे अपने पारंपरिक व्यवसाय को श्रमपूर्व सीखने में कुशल हैं लेकिन शिक्षा के अभाव में उच्चवर्ग द्वारा की जा रही धांधलियों से अनजान हैं।

कहानीकार ने कहानी में समयावधि के परिवर्तन के लिए मौसमों के बदलने की स्थितियों का वर्णन किया है – आम के पकना और बारिश से झंड़े का रंग घुलकर धवल होना।

धीरे-धीरे आम पकने के दिन आए। अर्जुन अब दूसरी किताब समाप्त कर अपने खानदान में विशेष प्रतिष्ठित हो चला। कुछ नाजुक मिजाज भी हो गया। मोटा काम न होता था। आम खिलाने के विचार से मैं अपने चिरंजीव को लिवा लाने के लिए ससुराल चला गया।

गाँव के लोग आंदोलन के लिए महावीर स्वामी के मंदीर का प्रांगण चुनते हैं। कहानीकार ने अंग्रेजी सरकार की सख्ती व कुशासन तंत्र और भोली-भाली जनता में जमींदारों की भय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों का अंकन करके पाठकों के समक्ष उस काल को सजीवता प्रदान की है।

कच्चे रंगों से रँगा तिरंगा झंडा महावीर स्वामी के सामने एक बड़े बाँस में गड़ा, बारिश से घुलकर धवल हो रहा था। इन दिनों मुकदमेबाजी और तहकीकात जोरों से चल रही थी। कुछ किसानों पर एक साल के हरी-भूसे को तीन साल का बाकी बनाकर, जमींदार साहब ने दावे दायर किए थे, जो अपनी क्षुद्रता के कारण जमींदार ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के पास आकर किसानों की दृष्टि में और भयानक हो रहे थे।

XXX

गाँववाले समझे नहीं, दरोगाजी झंडे की तरफ जा रहे थे। जमींदार शायद उखड़वा देने के इरादे से लिये जा रहे थे। महावीरजी के अहाते में झंडा देखकर दरोगाजी कुछ सोचने लगे, बोले, 'यह तो मंदिर का झंडा है।' देखा, उसमें कोई रंग न दीख पड़ा। जमींदार साहब को गौर से देखते हुए लौटकर डेरे की तरफ चले। जमींदार साहब ने बहुत समझाया कि यह बारिश से धुलकर सफेद हो गया है। लेकिन है यह कांग्रेस का झंडा। पर दरोगाजी बुद्धिमान थे। महावीरजी के अहाते में सफेद झंडे को उखड़वाकर वीरता प्रदर्शित करने की आज्ञा न दी। गाँव में कांग्रेस है, इसका पता न सब-डिवीजन में लगा, न जिले में; थानेदार साहब करें क्या?

इस तरह हम देखते हैं कि कहानीकार निराला ने कहानी में निम्न वर्ग के सामाजिक जीवन व स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों के विविध संदर्भों का चित्रण करके स्वतंत्रता पूर्व के परिवेश, देशकाल और परिस्थितियों का सजीव अंकन किया है।

बोध प्रश्न

- 'चतुरी चमार' कहानी संग्रह का प्रथम संसकरण कब प्रकाशित हुआ था?
- कहानीकार ने कहानी की शुरुआत किस दृश्य से की है?

8.3.5 'चतुरी चमार' कहानी का उद्देश्य

प्रायः प्रत्येक साहित्यिक रचना का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रस्तुत कहानी भी इसका अपवाद नहीं है। "चतुरी चमार" कहानी का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ समाज में उपेक्षित जन के आत्म सम्मान की चेतना को प्रस्तुत करना है। कहानीकार ने कहानी में आधुनिकता, समता, समानता जैसे मूल्यों सहित स्वाधीनता की चेतना को अंकित किया है। कहानीकार ने समाज सुधार की उद्घोषणा किए बिना समाज सुधार की आवश्यकता को अभिव्यक्ति दी है।

कहानीकार ने लोध, पासी, धोबी, चमार जैसे निम्नवर्ग के लोगों के बीच मैत्री का अंकन किया है। वे किसान आदि अन्य मेहनतकश लोगों के साथ मिलकर जमींदार के विरुद्ध खड़े हैं। गाँव का सर्वहारा वर्ग धन जमा करके जमींदार से मुक्ति के लिए मुकदमा लड़ता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि निराला द्वारा रचित कहानी "चतुरी चमार" कहानी-कला के आधार पर एक सफल रचना है जो कहानी के सभी अनिवार्य तत्त्वों की कसौटी पर खरी उतरती है। कहानी के पात्रों विशेषत: 'चतुरी चमार' के चरित्र का यथार्थ चित्रण हुआ है। कथानक लघु है। इसमें स्वतंत्रता पूर्व भारतीय समाज के निम्न वर्ग के विभिन्न समुदायों के बीच सौहार्दपूर्ण व्यवहार और उनका उच्च वर्ग व अंग्रजी प्रशासन के बीच संघर्ष के विभिन्न दृश्यों के अंकन से कहानी प्रभावशाली बनी गई है।

बोध प्रश्न

- गाँव का सर्वहारा वर्ग धन क्यों जमा करता है?
- कहानी का मुख्य पात्र कौन है?

8.3.6 'चतुरी चमार' की भाषा-शैली

'चतुरी चमार' कहानी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है उसका कथा, पात्र और वातावरण के अनुकूल होना। कथा स्थल लखनऊ के नजदीक होने के कारण कथा-कथन में देशज शब्दों के साथ-साथ उर्दू की शब्दावली तो शामिल है ही, कहानीकार ने यथावश्यक व यथास्थान कथावाचक के मुख से तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी शब्दवाली भी कहलवायी है। यथा -

- तत्सम शब्दावली - पूर्वज, शुद्धाशुद्ध, जल, बहुवचनम्, जीवन, सुप्रसिद्ध, प्रोत्साहन, श्रद्धा, अधिकांश, अपरिवर्तनवाद, क्रिय, ज्ञात-अज्ञात, निर्गुण, अर्थ, आचार्य, विद्वान, शक्ति, अवैतनिक शिक्षक, मर्मज्ञ भाष्य, प्रभाव, सस्वर, कल्याण, सत्य, असत्य, पत्र,पत्रिका, क्षुद्रता, दृष्टि, धैर्य आदि।
- तद्भव शब्दावली – चरित, भाई, पिता, भतीजा, किसान, दिन, रात, हाथ, बरतन, ब्याह, आधी, दूसरा, चक्की, दीया, चमड़ा, आम, दस, गाँव, तीन,
- उर्दू शब्दावली – मकान, बाशिंदा, बरसात, रिश्ता, जरूर, नजदीक, पुश्तैनी, हफ्ता, ज्यादा, दरवाजा, अक्ल, उम्र, शुमार, मतलब, खत्म, बाजार, दर्द, गोश्त, महीना, नाजुक, मिजाज, दोस्ती, गैर-हाजिरी, दुकान, वक्त, नजर, किताब, इस्तीफा, जमीन, इकट्ठा, साल,

सख्ती, वाजिबउल-अर्ज, दर्ज, अखबार, मुकदमा, तहकीकात, दरख्वास्त, बारिश, दारोगा, मुकदमा, गवाह आदि।

- देशज शब्दावली – चमार, घर, मचिया, चिट्ठी, दरजा, बुढ़ऊ, लालटेन, दातौन, थानेदार, टिल्लाना, बनैल, ठूंठ आदि।
- अंग्रेजी शब्दावली – डिक्टेट, टिकट, होटल, रजिस्ट्री, लाइब्ररी, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, डिवीजन, रेल, डिग्री, हाउस ऑफ कॉमन्स आदि।
- संबंधों की शब्दावली – काका, काकी, बाबा, बाप, नानी, मामा, पुत्र आदि।

'चतुरी चमार' ग्रामीण पृष्ठभूमि व परिवेश की कथा है। मुख्य पात्र चतुरी ग्रामीण हैं। कथावाचक, कथावाचक का बेटा और जमींदार पढ़े लिखे हैं। 'चतुरी चमार' और उसका बेटा अर्जुन अशिक्षित हैं। जमींदार का कोई संवाद कहानी में नहीं है, किंतु उनके अंग्रेजी ज्ञान के बारे में कथावाचक बताते हैं कि 'जमींदार सहाब ने मेरी तरफ दिखाकर अंग्रेजी में धीरे से कुछ कहा।' कहानीकार ने 'चतुरी चमार' से सामान्य हिंदी बुलवाई है। ठेठ ग्रामीण भाषा बुलवाने से बचे हैं। इससे यही प्रतीत होता है कि कहानीकार निराला अपने पाठकों तक सामान्य बोलचाल की भाषा में कथा के उद्देश्य को पहुँचाना चाहते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कथा-कथन की शैली काफी प्रभावशाली और अद्भुत है। वे आदर्श और यथार्थ के बीच उलझते नहीं हैं। कहानी के आरंभ में लगता जरूर है कि वे कोई आदर्श स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं, किंतु जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है आदर्शवाद की चमक धीमी होती जाती है और यथार्थ की ठोस होती जाती है। 'चतुरी चमार' कहानी में प्रथम दृष्टया – आदर्श है राष्ट्रीय मुक्ति का आंदोलन और यथार्थ है, जाति भेद और वर्ग हित। इस उद्देशय की पूर्ति के लिए कहानीकार ने मुहावरों, कहावतों और व्यंग्योक्तियों का प्रयोग किया है जो सूक्ति बनकर हिंदी साहित्य की धरोहर बन गए हैं। ये सूक्तियाँ उत्कृष्ट व्यंग्य शैली के उदाहरण हैं -

- दूसरों के लिए वह श्रद्धेय अवश्य है, क्योंकि अपने उपानह-साहित्य में आजकल के अधिकांश साहित्यिकों की तरह अपरिवर्तनवादी है।
- चतुरी के जूते अपरिवर्तनवाद के चुस्त रूपक जैसे टस-से-मस नहीं होते।
- केवल चिट्ठी लिखने का ज्ञान न होने के कारण एक क्रिय होकर भी भिन्न फल है-वे पत्र और पुस्तकों के संपादक हैं, यह जूतों का।
- अब गंभीर हो जाया करता हूँ – जैसे उम्र की बाढ़ के साथ अक्ल बढ़ती है।
- जिनमें शक्ति होती है, अवैतनिक शिक्षक वही हो सकते हैं।
- कहकर डबडबाई आँखों से देखता हुआ जुड़े हाथों सेवई सी बटने लगा।
- मैं उसके मनोविकार पढ़ने लगा, वह एक ऐसे जाल में फँसा है, जिसे वह काटना चाहता है। भीतर से उसका पूरा जोर उभर रहा है। जिसमें बार-बार उलझकर रह जाता है।

- घृतपक्व मसालेदार माँस की खुशबू से जिसकी भी लार टपकी, आप ही निमंत्रित होने को पूछा। इस तरह मेरा मकान साधारण जनों का अड्डा, बल्कि हाउस ऑफ कॉमन्स हो गया।
- चमार दबेंगे, ब्राह्मण दबाएँगे। दवा है, दोनों की जड़े मार दी जाएँ, पर सहज-साध्य नहीं। सोचकर चुप हो गया।
- उसकी कमजोरियों की दरारें भविष्य में भर जाएँगी।
- उसकी जीभ को दौड़ाते हुए अपना मनोरंजन करने लगे।
- मैं पानी-पाँडे थोड़े ही हूँ, जो ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे सबको पानी पिलाता फिरूँ।
- साहित्य की तरह समाज में भी दूर दूर तक मेरी तारीफ फैल चुकी थी।
- मेरे चिरंजीव उसे उसी तरह देख रहे थे जैसे गोरे कालों को देखते हैं।
- निश्चय हुआ, अब अर्जुन से विद्या का धनुष नहीं उठने का। अर्जुन वर्ण के उच्चारण में विवर्ण हो रहा था।
- शहरों की हवा मैंने बहुत दिनों से न खाई थी।
- लखनऊ में डेरा डाला।
- युधिष्ठिर की तरह सत्य की रक्षा करूँ तो असत्य-भाषण का पाप न लगेगा।

निराला की कहानी लेखन शैली की यह विशेषता है कि वे हिंदी उर्दू पट्टी के किसान-जीवन, जाति-संरचना, व्यवस्था, संस्कृति, क्रिया कलाप, दिनचर्या आदि की सूक्ष्म जानकारी का वर्णन करते चलते हैं। कहानी में बाग-बगीचा, फल-फूल, फसल आदि से लेकर सामाजिकता, विभाजन, भेद-भाव, जटिलता आदि सभी कुछ इस तरह घुले-मिले होते हैं कि रचना संस्मरण-सी लगती है। चतुरी चमर कहानी में कहानीकार ने कथा शिल्प के निर्माण के लिए संस्मरण, विवरण तथा व्यंग्य शैली का प्रभावशाली प्रयोग किया है। (दुर्गा सिंह, निराला का कथा साहित्य, पृ.60)

बोध प्रश्न

- 'चतुरी चमार' कथा किस पृष्ठभूमि है?
- कहानी में प्रयुक्त तीन तत्सम शब्द लिखिए।
- कहानी में प्रयुक्त अलग-लग

8.4 पाठ सार

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित "चतुरी चमार" कहानी चतुरी नामक चमार जाति के एक व्यक्ति के जीवन की विभिन्न घटनाओं पर आधारित है। प्रस्तुत पाठ में इस कहानी का कहानी के तत्वों के आधार पर विवेचन किया गया है। कहानी के छह तत्व होते हैं – कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवाद योजना, देशकाल व वातावरण, उद्देश्य तथा भाषा शैली। यह कहानी संस्मरणात्म शैली में लिखी गई है। इसमें कहानीकार ने भारतीय समाज में उच्च तथा निम्न वर्ग के बीच के संघर्ष को नाटकीय ढंग से अंकित किया है। 'चतुरी चमार' के जूते दो साल तक टिकते हैं। उसे जमींदार के सिपाही को हर साल एक जोड़ा देना होता है। उसके साथ ही गाँव के अन्य चमार

भी हर साल सिपाही को जूते का जोड़ा देते हैं। चतुरी और कथावाचक के बीच स्नेह का संबंध स्थापित होता है। वह कथावाचक के घर कबीर, तुलसी, सूर आदि के भजन गाने बैठक जमाने लगता है। कथावाचक चतुरी के बेटे अर्जुन को पढ़ाने लगते हैं। कथावाचक का बेटा आम के मौसम में उनके घर आता है और उसकी दोस्ती अर्जुन के साथ हो जाती है। वह उनके गैर-हाजिरी में उसे पढ़ाने लगता है। अर्जुन के उच्चारण दोष को कथावाचक का बेटा अपने मनोरंजन के लिए उपयोग करता है। इसे जानकर कथावाचक उसे वापस उसकी नानी के घर भेज देते हैं। गाँव के लोग कथावाचक को बहुत मानते हैं। इसीलिए गाँव वाले जमींदार के खिलाफ किया गया आंदोलन विफल होने के बाद जमींदार से मुकदमेबाजी और दारोगा के उत्पीड़न से बचने के लिए शहर में जाकर रहनेवाले कथावाचक को वापस गाँव आने के लिए निवेदन करते हैं। वे गाँव आकर उन्हें मार्गदर्श देता है। फिर गाँव के किसान मुकदमा हार जाते हैं। उनके बैल, घर आदि नीलाम हो जाते हैं। किंतु चतुरी हिम्मत नहीं हारता है। वह अकेले ही जमींदार से लड़ता रहता है। अंततः वह पता लगा लेता है कि वाजिबउल-अर्ज में जमींदार के सिपाही को पुश्त-दर-पुश्त जूता देना दर्ज नहीं है। कहानीकार ने कहानी को पिरोने के लिए हिंदी भाषा के समान्य बोलचाल का कालात्मक उपयोग किया है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज तथा अंग्रेजी शब्दों का यथावश्यक प्रयोग मिलता है। कहानी में कहानीकार ने व्यंजनात्मक शब्दावली व वाक्यों का प्रभावी अंकन करके व्यंग्य की उत्पत्ति की है।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के कहानी कथन के कौशल से परिचय प्राप्त होता है।
2. कहानी में भारतीय समाज की संरचना, उसकी जटिलता और जाति आधारित सामाजिकता रेखांकित हुई है।
3. समाज की संगठनात्मक शक्ति से वांछित परिणाम प्राप्त करने की चेष्टा की जा सकती है। इससे शोषण से मुक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त होता है।
4. कहानी में सामजिक दायित्व बोध की अभिव्यक्ति हुई है।

8.6 शब्द संपदा

1. कथावाचक = कथा बाँचने वाले, कहानी सुनानेवाले
2. कदीमी = प्राचीन काल का, पुराने समय का
3. बाशिंदा = निवासी, रहनेवाला
4. पुश्तैनी = कई पीढ़ियों से चला आता हुआ, दादा परदादा के समय का पुराना
5. मर्मज्ञ = जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो, तत्वज्ञ, भेद की बात जानेवाला, रहस्य जाननेवाला

6. गुस्ताखी = शिष्टता का अभाव, उद्दंडता, धृष्टता

7. यथावश्यक = आवश्यकता के अनुसार

8. यथास्थान = स्थान के अनुसार

9. कुलीन वर्ग = प्रतिष्ठित वर्ग, उच्च वर्ग, मान्यता प्राप्त वर्ग

10. उद्घोषणा = सरकारी घोषणा, अधिकारी घोषणा

11. सर्वहारा = गरीब, दीन, निर्धन

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

(1) निराला द्वारा रचित कहानी 'चतुरी चमार' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
(2) 'चतुरी चमार' कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(3) 'चतुरी चमार' में प्रयुक्त भाषा-शैली पर विचार व्यक्त कीजिए।
(4) संवाद योजन के आधार पर 'चतुरी चमार' कहानी की विशेषताएँ बाताइए।
(5) चतुर चमार में चत्रित देशकाल व वातावरण का वर्णन कीजिए।

खंड (ब)

(ब) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

(1) 'चतुरी चमार' कहानी का उद्देश्य क्या है?
(2) 'चतुरी चमार' कहानी में कथावाचक की भाषा में प्रयुक्त शब्दावली पर टिप्पणी लिखिए।
(3) निराला की सूक्तियाँ उत्कृष्ट व्यंग्य शैली के उदाहरण हैं, स्पष्ट कीजिए।
(4) कथावाचक के बेटे और अर्जुन की दोस्ती के संबंध में आपके क्या विचार हैं?
(5) 'चतुरी चमार' की शिक्षा के प्रति जागरुता पर अपने विचार प्रकट करें।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'चतुरी चमार' किस पदावली का विशेषज्ञ है -
(अ) कबीर पदावली (आ) तुलसी पदावली (इ) सूर पदावली (ई) मीरा की पदावली
2. 'चतुरी चमार' का जूता कितने वर्ष तक चलता है -
(अ) एक (आ) दो (इ) तीन (ई) चार
3. अर्जुन अपने माता-पिता को क्या कहकर बुलाता है ?

(अ) माँ-बाबूजी (आ) माई-बापू (इ) दीदी-दादा (ई) आई-बाबा

4. अर्जुन की आयु कितनी है?

(अ) 10 वर्ष (आ) 17 वर्ष (इ) 15 वर्ष (ई) 9 वर्ष

5. 'चतुरी चमार' कहानी के कहानीकार हैं -

(अ) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (आ) महादेवी वर्मा (इ) प्रेमचंद (ई) जैनेंद्र

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. हिंदी साहित्य में .... के बाद सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी के महानतम रचनाकार हैं।
2. निराला की .... की शैली काफी प्रभावशाली और अद्भुत है।
3. 'चतुरी चमार' कहानी ....जगत में बहु चर्चित कहानी है।
4. गाँव का .... वर्ग धन जमा करके जमींदार से मुक्ति के लिए मुकदमा लड़ता है।
5. निराला की सूक्तियाँ हिंदी साहित्य की ....बन गई हैं।

III. सुमेल कीजिए –

1. अर्जुन	(अ) मुकदमा
2. मैजिस्ट्रेट	(आ) महावीर मंदीर
3. कांग्रेस	(इ) 'चतुरी चमार' का बेटा
4. स्वतंत्रता आंदोलन का ध्वज	(ई) निराला
5. 'चतुरी चमार'	(ऊ) आंदोलन

8.8 पठनीय पुस्तकें

1) निराला का कथा साहित्य : दुर्गा सिंह,
2) निराला की साहित्य साधना-1,2,3 : डॉ. रामविलास शर्मा
3) कथाकारों की दुनिया : डॉ. ऋषभदेव शर्मा
4) https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2010116.pdf
5) https://manjoojnu.blogspot.com/2018/01/blog-post_19.html
6) https://vagartha.bharatiyabhashaparishad.org/suryadev-feb24/
7) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, Wikipedia
8) 'चतुरी चमार' कहानी संग्रह : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A – HINDI(Hons)

I – SEMESTER EXAMINATION

TITLE & PAPER CODE : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (BNHN101DET)

TIME: 2 HOURS TOTAL MARKS: 35

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्न लिखित विकल्पों में सही विकल्प चुनिए। 5X1=5

i. जागो फिर एक बार कविता संकलित है –

(A) अनामिका में (B) परिमल काव्य संग्रह में (C) अणिमा में (D) कोई नहीं

ii. 'स्नेह निर्झर बह गया' शीर्षक कविता में रेत किसका द्योतक है?

(A) निस्सारता (B) हरियाली (C) समृद्धि (D) निराशा

iii. पैकू के सुकुल किस वर्ण के हैं?

(A) क्षत्रिय (B) वैश्य (C) अ और ई (D) ब्राह्मण

iv. बिल्लेसुर ने अपना खेत किससे जोता -

(A) बैलों से (B) गाय से (C) फावड़े से (D) भैंस से

v. 'चतुरी चमार' कहानी के कहानीकार हैं -

(A) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (B) महादेवी वर्मा (C) प्रेमचंद (D) जैनेंद्र

भाग – 2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर शब्दों में देना आनिवार्य है। 200 5X4 =20

2. निराला जी के काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
3. बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास का उद्देशय क्या है?
4. हिंदी साहित्य में निराला का क्या स्थान है?
5. 'तोडती पत्थर' कविता का आशय समझाइए।
6. जूही के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

7. देश के नवयुवकों को नए विचारों की आवश्यकता है। ‘वर दे, वीणावादिनि वर दे’ कविता के आधार पर समझाइए।

भाग- 3

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है । **1X10=10**

8. ‘निराला क्रांति के समर्थक हैं।’ ‘बादल राग’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. संवाद योजन के आधार पर ‘चतुरी चमार’ कहानी की विशेषताएँ बाताइए।